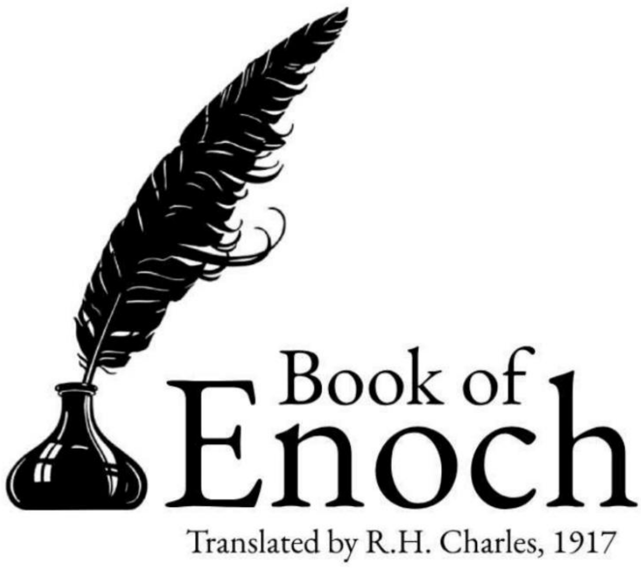

हनोक के किताब

अध्याय 1

1. हनोकक आशीर्वादक वचन, जाहि सँ ओ चुनल आ धर्मी लोकनि केँ आशीर्वाद देलनि, जे क्लेशक दिन मे जीबैत रहताह, जखन सभ दुष्ट आ अभक्त केँ दूर कयल जायत।
2. ओ अपन दृष्टान्त उठौलनि आ कहलनि--हनोक एकटा धर्मी आदमी, जिनकर आँखि परमेश् वर द्वारा खुजल छल, स् वर्ग मे पवित्र परमेश् वरक दर्शन देखलनि, जे स् वर्गदूत सभ हमरा देखौलनि, आ हुनका सभ सँ हम सभ किछु सुनलहुँ, आ हुनका सभ सँ हम जेना देखलहुँ, तेना बुझलहुँ, मुदा एहि पीढ़ीक लेल नहि, बल् कि आबय बला एकटा दूरक पीढ़ीक लेल।
3. चुनल गेल लोक सभक विषय मे हम कहलियनि, आ हुनका सभक विषय मे अपन दृष्टान्त उठौलहुँ, “पवित्र महान परमेश् वर अपन निवास सँ निकलताह।
4. आ अनन्त परमेश् वर पृथ् वी पर, सिनै पहाड़ पर सेहो, रौदताह, आ अपन डेरा सँ प्रकट हेताह, आ स् वर्गक आकाश सँ अपन सामर्थ् यक बल मे प्रकट हेताह।
5. आ सभ भय सँ मारल जायत, आ चौकीदार सभ काँपि जायत, आ बहुत भय आ काँप ओकरा सभ केँ पृथ्वीक छोर धरि पकड़ि लेत।
6. ऊँच पहाड़ हिलत, ऊँच पहाड़ नीचाँ भ' जायत, आ लौक आगू मोम जकाँ पिघलि जायत।
7. आ पृथ्वी पूर्ण रूप सँ फाटि जायत, आ पृथ्वी पर जे किछु अछि से नष्ट भऽ जायत, आ सभ मनुष्य पर न्याय होयत।
8. मुदा धर्मी लोकक संग ओ शांति करौताह। आ चुनल गेल लोकक रक्षा करत, आ दया ओकरा पर रहत। ओ सभ परमेश् वरक होयत, आ ओ सभ समृद्ध होयत, आ सभ धन्य होयत। आ ओ हुनका सभक सहायता करताह, आ हुनका सभ केँ इजोत देखायत, आ ओ हुनका सभक संग मेल-मिलाप करताह।
9. आ देखू! ओ अपन दस हजार पवित्र लोकक संग अबैत छथि, सभ पर न् याय करबाक लेल, आ सभ अभक्त केँ नष्ट करबाक लेल, आ सभ मांस केँ ओकर सभ अभक्ति केर सभ काज पर दोषी ठहराबय लेल जे ओ सभ अभक्तिपूर्वक कयलनि अछि, आ सभ कठिन बात सभक लेल जे अभक्त पापी सभ हुनका विरुद्ध कयलनि अछि।

अध्याय 2

1. स्वर्ग मे जे किछु घटित होइत छैक, ओकर कक्षा मे कोनो परिवर्तन नहि होइत छैक, आ स्वर्ग मे जे प्रकाश छैक, तकरा सब किछु देखब जे कोना सब उठैत छैक आ प्रत्येक अपन-अपन समय मे क्रमबद्ध भ' जाइत छैक, आ अपन निर्धारित क्रमक उल्लंघन नहि करू।
2. अहाँ सभ पृथ् वी केँ देखू, आ पहिने सँ अन् त धरि ओहि पर घटित घटना सभ पर ध्यान दियौक, जे ओ सभ कतेक दृढ़ अछि, पृथ् वी पर कोनो चीज बदलैत नहि अछि, बल् कि परमेश् वरक सभ काज अहाँ सभ केँ प्रकट होइत अछि।
3. देखू ग्रीष्म आ जाड़, कोना समस्त धरती पानि सँ भरि गेल अछि आ ओकरा पर मेघ आ ओस आ बरखा पड़ल अछि।

अध्याय 3

देखू आ देखू जे कोना जाड़ मे सभ गाछ एहन बुझाइत अछि जेना ओ सभ मुरझि गेल हो आ अपन सभटा पात बहा गेल हो, सिवाय चौदह टा गाछक, जे अपन पात नहि गमाबैत अछि मुदा नवका आबय धरि दू सँ तीन साल धरि पुरान पात केँ बरकरार रखैत अछि ।

अध्याय 4

आ फेर, अहाँ सभ गर्मीक दिन सभ केँ मनाउ जे कोना सूर्य पृथ्वी सँ ऊपर अछि। आ अहाँ सूर्यक तापक कारणेँ छाहरि आ आश्रय तकैत छी, आ बढ़ैत गर्मीसँ धरती सेहो जरि जाइत अछि, आ तेँ अहाँ पृथ्वी पर, वा ओकर गर्मीक कारणेँ कोनो चट्टान पर पैर नहि राखि सकैत छी |

अध्याय 5

1. अहाँ सभ देखू जे गाछ सभ कोना हरियर पात सभ सँ झाँपि कऽ फल दैत अछि, तेँ हुनकर सभ काज पर ध्यान दियौ आ जनैत छी, आ ई चिन्हू जे जे अनन्त काल धरि जीबैत अछि से ओकरा सभ केँ कोना एहन बना देलक।

.

3. आ देखू जे कोना समुद्र आ नदी सेहो ओहिना अपन काज पूरा करैत अछि आ हुनकर आज्ञा सँ नहि बदलैत अछि।
4. मुदा अहाँ सभ अडिग नहि रहलहुँ आ ने प्रभुक आज्ञाक पालन केलहुँ, मुदा अहाँ सभ मुँह घुमा कऽ हुनकर महानताक विरुद्ध अपन अशुद्ध मुँह सँ घमंडी आ कठोर वचन बजलहुँ। हे कठोर हृदयबला, अहाँ सभ केँ कोनो शान्ति नहि भेटत।
5. तेँ अहाँ सभ अपन दिनक निन्दा करब, आ अहाँक जीवनक वर्ष नाश होयत, आ अहाँक विनाशक वर्ष अनन्त अपमान मे बढ़ि जायत, आ अहाँ सभ केँ कोनो दया नहि भेटत।
6. ओहि दिन मे अहाँ सभ अपन नाम केँ सभ धर्मी लोकक लेल अनन्त अपमान बना देब, आ अहाँ सभक द्वारा जे सभ शाप देत, शाप देत, आ सभ पापी आ अभक्त अहाँ सभक द्वारा निंदा करत, आ अहाँ सभक लेल अभक्तक लेल अभिशाप होयत। आ

सबटा . . . आनन्दित होयत, आ पापक क्षमा होयत, आ हर दया आ शान्ति आ सहनशीलता। आ अहाँ सभ पापी सभक उद्धार नहि होयत, मुदा अहाँ सभ पर शाप बनल रहत।
7. मुदा चुनल गेल लोक सभक लेल इजोत आ आनन्द आ शान्ति होयत, आ ओ सभ पृथ्वीक उत्तराधिकारी बनत।
8 तखन चुनल गेल लोक सभ कैँ बुद्धि देल जायत, आ ओ सभ जीवित रहत आ फेर कहियो पाप नहि करत, चाहे ओ अभक्ति द्वारा वा घमंड द्वारा।
9 ओ सभ फेर उल्लंघन नहि करत, आ ने जीवन भरि पाप करत, आ ने ईश्वरीय क्रोध वा क्रोध सँ मरत, बल् कि ओ सभ अपन जीवनक दिनक संख्या पूरा करत। आ हुनका लोकनिक जीवन शान्ति मे बढ़ि जायत, आ हुनका लोकनिक आनन्दक वर्ष अनेक होयत, अनन्त आनन्द आ शान्ति मे, हुनका लोकनिक जीवनक भरि दिन।

अध्याय 6

1. जखन मनुष् यक संतान बढ़ि गेल तऽ ओहि दिन मे हुनका सभक लेल सुन्दर आ सुन्दर बेटी सभक जन्म भेलनि।
2. स्वर्गक सन्तान सभ स् वर्गदूत सभ हुनका सभ कैँ देखि कऽ कामना करैत एक-दोसर कैँ कहलथिन, 'आउ, हम सभ मनुष् य सभक सन् तान सभ मे सँ पत्नी चुनि कऽ हमरा सभ कैँ संतान पैदा करी।'
3. आ सेमजाजा जे हुनका लोकनिक नेता छलाह, हुनका सभ कैँ कहलथिन, 'हमरा डर अछि जे अहाँ सभ वास्तव मे ई काज करबा लेल तैयार नहि होयब, आ हमरा असगर पैघ पापक दंड देबय पड़त।'
4. आ सभ हुनका उत्तर देलथिन आ कहलथिन, 'हम सभ शपथ खा ली, आ सभ आपसी गारि-गरौबलि सँ अपना कैँ बान्हि ली जे एहि योजना कैँ नहि छोड़ि ई काज करी।'
5. तखन सब एक संग शपथ लेलनि आ ओहि पर आपसी निंदा करैत अपना कैँ बान्हि लेलनि।
6. ओ सभ दू सय छल। जे यारेद के समय में हरमोन पर्वत के चोटी पर उतरलै, आरो ओकरा हरमोन पर्वत कहै छेलै, कैन्हेंकि ओकरा पर आपसी गारी के कसम खाय के बान्हलऽ छेलै।
7. आरू ई सब हुनकऽ नेता सिनी के नाम छै: सेमीअजाज, हुनकऽ नेता, अरकीबा, रामेल, कोकाबिल, तामील, रामील, दानेल, एज़ेकेल, बराकिजाल, असाएल, आर्मरोस, बटारेल, अनैल, जकील, समसापेले, सतार, टेलर, जोमजाएल, सरिएल।
8. ई सब हुनकर दसक मुखिया छथि।

अध्याय 7

1. आन सभ लोक सभ अपना संग पत्नी लऽ लेलक आ एक-एकटा अपन-अपन लेल एक-एकटा पत्नी चुनि लेलक, आ ओ सभ ओकरा सभ मे जा कऽ ओकरा सभक संग अपना कैँ अशुद्ध करय लागल, आ ओकरा सभ कैँ मंत्र-मुग्ध-मोह आ जादू-टोना आ जड़ि काटब सिखाओल गेल आ पौधा सभ सँ परिचय करौलक।
2. ओ सभ गर्भवती भऽ गेल आ ओ सभ पैघ-पैघ विशालकाय सभ कैँ जन्म देलक, जकर ऊँचाई तीन हजार एल्स छल।
3. जे मनुष्यक सब अधिग्रहणक उपभोग केलक। आ जखन मनुष्य आब ओकरा सभ कैँ पोसय नहि सकल।
4. दिग्गज सब हुनका सब के खिलाफ भ गेल आ मनुष्य के खा गेल।
5. ओ सभ चिड़ै-चुनमुनी, पशु-पक्षी, सरीसृप आ माछक विरुद्ध पाप करय लगलाह आ एक-दोसरक मांस खा कऽ खून पीबय लगलाह।
6. तखन धरती अनियमित लोक पर आरोप लगा देलक।

अध्याय 8

1. आरू अज़ाज़ेल आदमी सिनी कॅ तलवार, चाकू, ढाल, आरो छाती के पट्टी बनाबै के सिखाबै छेलै, आरो ओकरा सिनी कॅ धरती के धातु आरो ओकरा काम करै के कला, आरो कंगन, आरो आभूषण, आरो सुरमा के प्रयोग, आरो पलक के सुंदर बनाबै के काम, आरो तरह-तरह के महँग पाथर, आरो रंग-बिरंग के सब तरह के टिंचर के बारे में बताबै छेलै।
2. ओ सभ बहुत रास अभक्ति उत्पन्न भेल आ ओ सभ व्यभिचार कयलक आ ओ सभ भटकल आ अपन सभ बाट मे भ्रष्ट भऽ गेल। सेमजाजा मंत्रमुग्ध, आ जड़ि-कटब, आर्मरोस मंत्रमुग्धक संकल्प, बराकिजाल, ज्योतिष सिखाबैत छल, कोकाबेल नक्षत्र, एजेकेल मेघक ज्ञान, अरकिएल पृथ्वीक चिन्ह, शमसीएल सूर्यक चिन्ह, आ सरीएल चन्द्रमाक मार्ग सिखाबैत छल | जखन मनुष् यक नाश होइत गेल तखन ओ सभ चिचिया उठल आ ओकर सभक चीत्कार स् वर्ग मे चलि गेल| . .

अध्याय 9

1. तखन माइकल, उरीएल, राफेल आ जिब्राईल स् वर्ग सँ नीचाँ तकलनि आ देखलनि जे पृथ् वी पर बहुत खून बहल जा रहल अछि आ पृथ्वी पर सभटा अराजकता कयल जा रहल अछि।
2. ओ सभ एक-दोसर कैँ कहलथिन, 'बिना बनिवासी बनाओल धरती मे स् वर्गक फाटक धरि ओकर सभक चीत्कारक आवाज चीत्कार करैत अछि।
3. आ आब अहाँ सभ, स्वर्गक पवित्र लोकनि कैँ, मनुष्यक आत्मा अपन सूट बना लैत अछि, कहैत अछि, "हमर सभक मुद्दा परमात्माक सोझाँ आनू।"।'
4. आ ओ सभ युग-युगक प्रभु कैँ कहलथिन: 'प्रभुक प्रभु, देवता सभक परमेश् वर, राजा सभक राजा आ युग-युगक परमेश् वर, अहाँक महिमाक सिंहासन युग-युग धरि ठाढ़ अछि, आ अहाँक नाम सभ युग धरि पवित्र आ गौरवशाली आ धन्य अछि!
5. अहाँ सभ किछु बनौने छी, आ सभ किछु पर अहाँक अधिकार अछि, आ सभ किछु अहाँक नजरि मे नंगटे आ खुजल अछि, आ अहाँ सभ किछु देखैत छी, आ अहाँ सँ किछुओ नुका नहि सकैत अछि।
6. अहाँ देखैत छी जे अजाज़ेल की केने छथि, जे पृथ्वी पर सभ अधर्मक शिक्षा देलनि आ स्वर्ग मे सुरक्षित अनन्त रहस्य सभ कैँ प्रकट कयलनि, जकरा सीखबाक लेल मनुष्य प्रयासरत छल।
7. आ सेमजाजा, जकरा अहाँ ओकर संगी पर शासन करबाक अधिकार देने छी|

8. ओ सभ पृथ् वी पर मनुष् यक बेटी सभक लग जा कऽ स् त्री सभक संग सुति गेलाह आ अपना कैँ अशुद्ध कऽ कऽ सभ तरहक पाप सभ कैँ प्रगट कयलनि।
9. आ स्त्रीगण सभ दिग्गज सभ कैँ जनम देलनि अछि, आ एहि सँ पूरा धरती खून आ अधर्म सँ भरल अछि।
10. आब देखू, जे सभ मरि गेल अछि, ओकर प्राणी कानि रहल अछि आ स् वर्गक फाटक पर अपन सूट क' रहल अछि आ ओकर विलाप चढ़ि गेल अछि।
11. आ अहाँ सभ बात कैँ घटित होयबा सँ पहिने जनैत छी, आ अहाँ ई सभ बात देखैत छी आ अहाँ ओकरा भोगैत छी, आ अहाँ हमरा सभ कैँ ई नहि कहैत छी जे एहि सभक संबंध मे हमरा सभ कैँ ओकरा सभक संग की करबाक अछि।'

अध्याय 10

1. तखन परमेश् वर, पवित्र आ महान कहलथिन आ उरिएल कैँ लमेकक पुत्र लग पठौलनि आ हुनका कहलथिन।
2. नूह लग जाउ आ हुनका हमर नाम सँ कहि दियौन "अपना कैँ नुका जाउ!" आ ओकरा लग आबि रहल अन्त कैँ प्रगट करू, जे समस्त पृथ्वी नष्ट भऽ जायत, आ समस्त पृथ्वी पर जलप्रलय आबय बला अछि आ ओहि मे जे किछु अछि, तकरा नष्ट कऽ देत।”
3. आब ओकरा निर्देश दियौक जे ओ बचि जाय आ ओकर संतान संसारक सभ पीढ़ीक लेल सुरक्षित रहय।'
4. आ फेर प्रभु राफेल कैँ कहलथिन, ‘अजाज़ेल हाथ-पैर बान्हि क’ अन्हार मे फेकि दियौक, आ मरुभूमि मे एकटा खुलल जगह बनाउ, जे दुदाएल मे अछि, आ ओकरा ओहि मे फेकि दियौक।
5. ओकरा पर खुरदुरा आ दांतेदार चट्टान राखि ओकरा अन्हार सँ झाँपि दियौक आ ओतहि सदिखन रहय आ ओकर चेहरा झाँपि दियौक जाहि सँ ओ इजोत नहि देखय।
6. आ महान न्यायक दिन ओकरा आगि मे फेकल जायत। आ ओहि धरती कैँ ठीक करू जकरा स् वर्गदूत सभ भ्रष्ट कएने छथि, आ पृथ्वीक चंगाईक घोषणा करू, जाहि सँ ओ सभ विपत्ति कैँ ठीक क' सकथि, आ सभ मनुक्खक संतान सभ गुप्त बात सभ सँ नाश नहि होथि जे चौकीदार सभ अपन पुत्र सभ कैँ प्रकट केने छथि आ सिखौने छथि।
8. अजाज़ेल द्वारा सिखाओल गेल काज सभक कारणेँ समस्त पृथ्वी नष्ट भऽ गेल अछि।'
9. आ जिब्राईल कैँ प्रभु कहलथिन, ‘हड़ुआ आ निन्दित लोक आ व्यभिचारक सन्तान सभक विरुद्ध आँगू बढ़ू, आ व्यभिचारक संतान आ पहरेदारक बच्चा सभ कैँ मनुक्ख मे सँ नष्ट करू आ ओकरा सभ कैँ बाहर निकालि दियौक।
. कारण, ओ सभ अनन्त जीवन जीबाक आशा रखैत छथि, आ हुनका सभ मे सँ प्रत्येक पाँच सय वर्ष जीवित रहताह।'

.

12. जखन हुनका सभक पुत्र सभ एक-दोसर कैँ मारि कऽ अपन प्रियजन सभक विनाश देखि लेत तखन हुनका सभ कैँ सत्तरि पीढ़ी धरि पृथ् वीक उपत्यका सभ मे पकड़ि कऽ राखू, जाबत धरि हुनकर सभक न् याय आ ओकर सभक समापन दिन धरि, जाबत धरि ओ न् याय अनन्त काल धरि समाप्त नहि भऽ जायत।
13. ओहि दिन मे ओकरा सभ कैँ आगि केर खाई मे लऽ जायल जायत, आ ओहि यातना आ जेल मे ओ सभ अनन्त काल धरि बंद रहत।
14. जे केओ दोषी ठहराओल जायत आ नष्ट कयल जायत, से तहिया सँ सब पीढ़ीक अंत धरि ओकरा सभक संग बान्हल रहत।
15. आ निन्दित आ चौकीदारक सभ आत् मा कैँ नष्ट करू, किएक तँ ओ सभ मनुष् य-जाति पर अन्याय केने अछि।
16. पृथ्वी पर सँ सभटा अधलाह कैँ नष्ट करू आ सभटा अधलाह काजक अंत भऽ जाय। धर्म आ सत्यक काज सदा-सदा लेल सत्य आ आनन्द मे रोपल जायत।
17 तखन सभ धर्मी सभ बचत, आ ता धरि जीवित रहत जाबत धरि हजारो संतान नहि पैदा करत, आ अपन जवानी आ बुढ़ापाक सभ दिन शान्तिपूर्वक पूरा होयत।
18 तखन पूरा धरती धर्मक रूप मे खेती कयल जायत आ सभ गाछ-बिरिछ लगाओल जायत आ आशीर्वाद सँ भरल रहत।
19. ओहि पर सभटा वांछनीय गाछ रोपल जायत आ ओहि पर बेल रोपत, आ ओहि पर जे बेल रोपत से प्रचुर मात्रा मे मदिरा पैदा करत, आ ओहि पर जे बीया बोओल जायत, ओकर एक-एक नाप मे एक हजार फल भेटत, आ जैतूनक एक-एक नाप मे दस प्रेस तेल भेटत।
20. आ पृथ् वी कैँ सभ अत्याचार सँ, सभ अधर्म सँ, सभ पाप सँ आ सभ अभक्ति सँ शुद्ध करू।
21. आ सभ मनुष् यक संतान धर्मी भऽ जायत, आ सभ जाति हमर आराधना करत आ स्तुति करत आ सभ हमर आराधना करत। आ पृथ्वी सभ अशुद्धता सँ, सभ पाप सँ, सभ दंड सँ आ सभ तरहक यातना सँ शुद्ध भ' जायत, आ हम ओकरा सभ कैँ फेर कहियो ओहि पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी आ अनन्त काल धरि नहि पठायब।

अध्याय 11

1. ओहि दिन मे हम स् वर्ग मे आशीषक भंडार सभ कैँ खोलब जाहि सँ ओकरा सभ कैँ मनुष् यक सन् तान सभक काज आ परिश्रमक काज पर पृथ् वी पर पठा देब।
2. आ संसारक सभ दिन आ मनुष् य सभक सभ पीढ़ी मे सत्य आ शान्ति एक संग जुड़ल रहत।

अध्याय 12

1. एहि सभ बात सँ पहिने हनोक नुकायल छलाह, आ मनुष् यक सन् तान मे सँ कियो नहि जनैत छल जे ओ कतय नुकायल छथि आ कतय रहैत छथि आ हुनका की भेलनि।
2. आ ओकर गतिविधिक संबंध चौकीदार सभसँ छलैक, आ ओकर दिन पवित्र लोक सभसँ छलैक।
3. आ हम हनोक महिमा प्रभु आ युग-युगक राजा कैँ आशीर्वाद द' रहल छलहुँ, आ देखू! चौकीदार सभ हमरा हनोक शास्त्री बजा कऽ हमरा कहलथिन।
4. 'हनोक, हे धर्मक शास्त्री, जाउ, स्वर्गक पहरेदार सभ कैँ ई घोषणा करू जे ऊँच आकाश, पवित्र अनन्त स्थान कैँ छोड़ि स्त्रीगणक संग अपना कैँ अशुद्ध क' लेलनि, आ पृथ् वीक सन्तान सभक जेकाँ काज कयलनि, आ अपना कैँ स् त्रीगण बना लेलनि।
5. अहाँ सभ कैँ कोनो शान्ति नहि होयत आ ने पापक क्षमा।

6. ओ सभ अपन प्रियजनक हत्या देखब, आ अपन संतानक विनाशक विलाप करत, आ अनन्त काल धरि विनती करत, मुदा अहाँ सभ केँ दया आ शान्ति नहि भेटत।"'

अध्याय 13

1. हनोक जा कऽ कहलथिन, 'अजाज़ेल, तोरा कोनो शान्ति नहि होयत।
2. अहाँ जे अधर्म सिखाओल अछि, आ अधर्म आ अधर्म आ पापक सभ काज जे अहाँ मनुष्य केँ देखौने छी, ताहि कारणे अहाँ केँ सहनशीलता आ ने आग्रह नहि भेटत।'
3. तखन हम जा कऽ हुनका सभ सँ एक संग गप्प कयल, आ ओ सभ भयभीत भऽ गेल, आ भय आ काँपब ओकरा सभ केँ पकड़ि लेलक।
4. ओ सभ हमरा सँ विनती कयलनि जे हम हुनका सभक लेल एकटा याचना बनाबी जाहि सँ हुनका सभ केँ क्षमा भेटय, आ स् वर्गक प्रभुक समक्ष हुनकर सभक याचना पढ़बाक लेल।
5. कारण, तहिया सँ ओ सभ हुनका सँ गप्प नहि क' सकलाह आ ने अपन पापक लज्जा सँ स्वर्ग दिस आँखि उठा सकैत छलाह, जकरा लेल हुनका सभ केँ दोषी ठहराओल गेल छलनि।
6. तखन हम हुनका लोकनिक याचिका, आ हुनका लोकनिक आत्मा आ हुनकर कर्मक संबंध मे व्यक्तिगत रूप सँ आ हुनका लोकनिक आग्रहक संबंध मे प्रार्थना लिखि देलहुँ जे हुनका सभ केँ क्षमा आ दिनक लंबाई भेटय।
7. हम जा धरि हरमोनक पश्चिम दिस दान देश मे दानक पानि मे बैसि गेलहुँ।
8. देखू, हमरा एकटा सपना आयल, हमरा पर दर्शन पड़ल, आ हम दंडक दर्शन देखलहुँ, आ एकटा आवाज आयल जे हम ई बात स्वर्गक पुत्र सभ केँ कहब आ ओकरा सभ केँ डाँटब।
9. जखन हम जागलहुँ तँ हुनका सभक लग आबि गेलहुँ आ ओ सभ एक ठाम जमा भ' क' बैसल छल, जे लेबनान आ सेनेसरक बीच मे अछि, आ मुँह झाँपि क' कानि रहल छल।
10. हम हुनका सभक समक्ष जे सभ दर्शन सुतल देखलहुँ से सुनौलहुँ आ धार्मिकताक वचन बाजब आ स् वर्गीय चौकीदार सभ केँ डाँटय लगलहुँ।

अध्याय 14

1. धर्मक वचनक पुस्तक, आ ओहि दर्शन मे पवित्र महानक आज्ञाक अनुसार अनन्त चौकीदारक डाँटबाक पुस्तक।
2. हम नींद मे देखलहुँ जे आब हम मांसक जीह आ मुँहक साँस सँ की कहब, जकरा महान परमेश् वर मनुष् य केँ दऽ देने छथि जे ओ सभ गप्प-सप्प करथि आ हृदय सँ बुझि सकथि।
3. जेना ओ मनुष्य केँ बुद्धिक वचन केँ बुझबाक शक्ति बनौलनि आ देलनि, तहिना ओ हमरा सेहो बनौलनि आ हमरा स्वर्गक सन्तान चौकीदार केँ डाँटबाक शक्ति देलनि।

.

5. आब सँ अहाँ सभ अनन्त काल धरि स्वर्ग मे नहि चढ़ब आ पृथ् वी पर बान्ह मे बान्हल फरमान निकलल अछि जे अहाँ सभ केँ संसारक सभ दिन धरि बान्हि देब।

6. आ जे पहिने अहाँ अपन प्रिय पुत्र सभक विनाश देखने होयब आ ओकरा सभ मे अहाँ सभ केँ कोनो प्रसन्नता नहि होयत, मुदा ओ सभ अहाँ सभक सोझाँ तलवार सँ खसि पड़त।

.

8. आ दर्शन हमरा एहि तरहेँ देखाओल गेल: देखू, दर्शन मे मेघ हमरा आमंत्रित केलक आ एकटा धुंध हमरा बजौलक, आ तारा आ बिजलीक गति हमरा तेज आ तेज क' देलक, आ दर्शन मे हवा हमरा उड़ि देलक आ हमरा ऊपर उठौलक आ हमरा स्वर्ग मे लऽ गेल।
9. हम ताबत धरि भीतर गेलहुँ जाबत हम एकटा देबाल लग नहि पहुँचलहुँ जे स्फटिक सँ बनल अछि आ चारू कात आगि केर जीह सँ घेरल अछि।
10. हम आगि के जीह मे जा कऽ एकटा पैघ घर लग पहुँचलहुँ जे स्फटिक सँ बनल छल, आ घरक देबाल स्फटिक सँ बनल टेसलदार फर्श जकाँ छल आ ओकर जमीन स्फटिक सँ बनल छल।
11. एकर छत तारा आ बिजलीक बाट जकाँ छल, आ ओकर बीच मे आगि सन करुब सभ छल, आ ओकर सभक आकाश पानि जकाँ साफ छल।
12. देबाल सभकेँ चारू कात एकटा ज्वालामुखी आगि लागल छल आ ओकर द्वार सभ आगिसँ धधकि रहल छल।
13. हम ओहि घर मे प्रवेश केलहुँ, आगि जकाँ गरम आ बर्फ जकाँ ठंढा छल, ओहि मे जीवनक कोनो आनन्द नहि छल, भय हमरा झाँपि देलक आ काँप हमरा पर आबि गेल।
14. जखन हम काँपि रहल छलहुँ आ काँपि रहल छलहुँ तखन हम मुँह पर खसि पड़लहुँ।
15. हम एकटा दर्शन देखलहुँ, आ देखू! दोसर घर छल, जे पहिने सँ पैघ छल, आ पूरा पोर्टल हमरा सोझाँ खुजल छल, आ ओ आगि केर लौ सँ बनल छल।
16. आ हर तरहेँ ई वैभव आ भव्यता आ विस्तार मे एतेक उत्कृष्ट छल जे एकर वैभव आ विस्तारक वर्णन हम अहाँ सभ केँ नहि क' सकैत छी।
17. ओकर फर्श आगि सँ भरल छलैक, आ ओकर ऊपर बिजली आ तारा सभक बाट छलैक, आ ओकर छत सेहो ज्वालामुखी आगि छलैक।
18. हम देखलहुँ आ ओहि मे एकटा ऊँच सिंहासन देखलहुँ, ओकर रूप स्फटिक जकाँ छल आ ओकर पहिया चमकैत सूर्य जकाँ छल आ ओतऽ करुब सभक दर्शन भेल।
19. सिंहासनक नीचाँ सँ ज्वालामुखी आगि केर धार आबि गेल जे हम ओकरा दिस नहि देखि सकलहुँ।
20. ओहि पर महान महिमा बैसल छल, आ हुनकर वस्त्र सूर्य सँ बेसी चमकैत छल आ कोनो बर्फ सँ बेसी उज्जर छल।
21. भव्यता आ महिमा के कारण हुनकर चेहरा पर कोनो स्वर्गदूत प्रवेश नहि क' सकल आ नहि देखि सकल आ कोनो मांस हुनका नहि देखि सकल।
22. ज्वालामुखी आगि हुनका चारू कात छल, आ हुनका सामने एकटा पैघ आगि ठाढ़ छल, आ चारू कात केओ हुनका लग नहि आबि सकल छल, दस हजार गुना दस हजार हुनका सामने ठाढ़ छल, तइयो हुनका कोनो सलाहकार के जरूरत नहि छलनि।
23. आ परम पवित्र लोक जे हुनका लग छलनि, ओ राति मे नहि चलि गेलाह आ ने हुनका सँ विदा भेलाह।

.

25. पवित्र लोक मे सँ एक गोटे हमरा लग आबि हमरा जगौलनि आ ओ हमरा उठि कऽ दरबज्जा लग पहुँचा देलनि आ हम मुँह नीचाँ झुका लेलहुँ।

अध्याय 15

1. ओ हमरा उत्तर देलथिन आ हम हुनकर आवाज सुनलहुँ, 'हनोक, हे धर्मी आ धार्मिकताक शास्त्री, नहि डेराउ, एतय आबि क' हमर आवाज सुनू।
2. जाउ, स्वर्गक पहरेदार सभ केँ कहू जे अहाँ केँ हुनका सभक लेल बिनती करबाक लेल पठौने छथि: "अहाँ सभ मनुष्यक लेल बिनती करू, आ मनुष्यक लेल नहि।
3. अहाँ सभ ऊँच, पवित्र आ अनन्त स्वर्ग केँ किएक छोड़ि स् त्रीगणक संग सुतल छी आ मनुष्यक बेटी सभक संग अपना केँ अशुद्ध कयलहुँ आ अपना केँ स् त्रीगण बना लेलहुँ आ पृथ् वीक सन् तान सभ जकाँ काज कयलहुँ आ अपन पुत्रक रूप मे दिग्गज सभ केँ जनमलहुँ?
4. अहाँ सभ पवित्र, आत् मक, अनन्त जीवन जीबैत रहितहुँ, स् त्रीगणक खून सँ अपना केँ अशुद्ध कयलहुँ, आ मांसक खून सँ संतान उत्पन्न कयलहुँ, आ मनुष्यक संतान जकाँ मांस आ खूनक वासना करैत छी जेना मरैत आ नाश भऽ वला लोक सभ सेहो करैत अछि।
5. तेँ हम हुनका सभ केँ सेहो पत्नी दऽ देलियनि जे ओ सभ हुनका सभ केँ गर्भवती करथि आ हुनका सभ सँ संतान पैदा करथि, जाहि सँ हुनका सभ केँ पृथ् वी पर कोनो चीजक कमी नहि हो।
6. मुदा अहाँ सभ पहिने आध्यात्मिक छलहुँ, अनन्त जीवन जीबैत छलहुँ आ संसारक सभ पीढ़ी धरि अमर छलहुँ।
7. एहि लेल हम अहाँ सभक लेल पत्नी नहि नियुक्त केने छी। किएक तँ स् वर्गक आत् मिक लोक सभक निवास स् वर्ग मे अछि।
8. आब, जे दिग्गज आत्मा आ मांस सँ उत्पन्न होइत अछि, ओकरा पृथ्वी पर दुष्टात्मा कहल जायत आ पृथ्वी पर ओकर निवास होयत।
9. दुष्टात्मा हुनका लोकनिक शरीर सँ निकलल अछि; कारण, ई सभ मनुष्य सँ जन्मल अछि, आ पवित्र चौकीदार सभ सँ ओकर सभक प्रारम्भ आ आदिम उत्पत्ति अछि; ओ सभ पृथ् वी पर दुष्टात्मा होयत आ दुष्टात्मा कहल जायत।
10. स् वर्गक आत् मा सभक निवास स् वर्ग मे होयत, मुदा पृथ्वी पर जे आत् मा पृथ् वी पर जनमल अछि, तहिना पृथ् वी पर ओकर निवास होयत।
11. दिग्गज सभक आत् मा सभ दुखी करैत अछि, अत्याचार करैत अछि, नष्ट करैत अछि, आक्रमण करैत अछि, युद्ध करैत अछि आ पृथ्वी पर विनाश करैत अछि आ विपत्ति उत्पन्न करैत अछि, ओ सभ भोजन नहि लैत अछि, मुदा तइयो भूख-प्यास करैत अछि आ अपराध उत्पन्न करैत अछि। ई आत् मा सभ मनुष् यक सन् तान आ स् त्री सभक विरुद्ध उठत, किएक तँ ओ सभ ओकरा सभ सँ निकलल अछि।

अध्याय 16

1. ओहि दिग्गज सभक वध आ विनाश आ मृत्युक दिन सँ, जकर मांसक आत्मा सँ आत्मा सभ, बाहर निकलि क', बिना कोनो न्याय केँ नष्ट क' देत--एहि तरहेँ ओ सभ समाप्ति दिन धरि नष्ट करत, जाहि महान न्याय मे युग समाप्त होयत, चौकीदार आ अभक्त पर, हँ, पूर्णतःसमाप्त भ' जायत।
2. आब जे चौकीदार सभ अहाँ केँ हुनका सभक लेल बिनती करबाक लेल पठौने छथि, जे सभ पहिने स् वर्ग मे छलाह, हुनका सभ केँ कहू।
3. "अहाँ सभ स्वर्ग मे छलहुँ, मुदा सभ रहस्य एखन धरि अहाँ सभ केँ नहि प्रकट भेल छल, आ अहाँ सभ बेकार केँ जनैत छलहुँ, आ एहि सभ केँ अहाँ सभ अपन हृदयक कठोरता मे स्त्रीगण सभ केँ जनौने छी, आ एहि रहस्य सभक माध्यमे स्त्री आ पुरुष पृथ्वी पर बहुत बुराई करैत छथि।"
4. तेँ हुनका सभ केँ कहू जे, "अहाँ सभ केँ कोनो शान्ति नहि अछि।"

अध्याय 17

1. ओ सभ हमरा लऽ कऽ ओहि ठाम पहुँचा देलक जतय ओतय जे लोक छल से ज्वालामुखी आगि जकाँ छल, आ जखन चाहैत छल तखन ओ सभ मनुष्य जकाँ प्रकट होइत छल।
2. ओ सभ हमरा अन्हारक स्थान पर पहुँचा देलक, आ एकटा एहन पहाड़ पर जकर शिखर स्वर्ग धरि पहुँचि गेल।
3. हम प्रकाशक स्थान आ तारा आ गरजक खजाना आ अत्यंत गहींर मे देखलहुँ, जतय एकटा आगि सन धनुष आ बाण आ ओकर कटहर, आ आगि सन तलवार आ सभ बिजली छल।
4. ओ सभ हमरा जीवित पानि आ पश्चिमक आगि लग ल' गेल, जे हर बेर सूर्यास्त होइत अछि।
5. आ हम एकटा आगि नदी पर पहुँचलहुँ जाहि मे आगि पानि जकाँ बहैत अछि आ पश्चिम दिस पैघ समुद्र मे बहैत अछि।
6. हम पैघ-पैघ नदी सभ केँ देखि महान नदी आ महान अन्हार मे आबि गेलहुँ, आ ओहि ठाम गेलहुँ जतय कोनो मांस नहि चलैत अछि।
7. जाड़क अन्हारक पहाड़ आ ओ स्थान देखलहुँ जतय सँ गहींरक सभ पानि बहैत अछि।
8. हम धरतीक सभ नदीक मुँह आ गहींरक मुँह देखलहुँ।

अध्याय 18

1. हम सभ हवाक खजाना देखलहुँ, देखलहुँ जे कोना ओ ओकरा सभक संग समस्त सृष्टि आ पृथ्वीक दृढ़ नींव सभ केँ सुसज्जित कयलनि।
2. हम पृथ्वीक कोन-पाथर देखलहुँ, हम चारिटा हवा देखलहुँ जे पृथ्वी आ आकाशक आकाश केँ धारण करैत अछि।
3. हम देखलहुँ जे कोना हवा सभ स्वर्गक तिजोरी सभ केँ पसारि दैत अछि आ आकाश आ पृथ्वीक बीच अपन स्थान रखैत अछि।
4. हम स्वर्गक हवा सभकेँ देखलहुँ जे घुमि कऽ सूर्य आ सभ तारा सभक परिधिकेँ अपन डूबला पर अनैत अछि।
5. हम देखलहुँ जे पृथ्वी पर हवा मेघ केँ लऽ कऽ चलैत छल, हम स्वर्गदूत सभक बाट देखलहुँ। हम पृथ्वीक छोर पर ऊपर आकाशक आकाश देखलहुँ।
6. हम आगू बढ़ि एकटा एहन स्थान देखलहुँ जे दिन-राति जरैत रहैत अछि, जतय सात टा भव्य पाथरक पहाड़ अछि, तीन टा पूब दिस आ तीन टा दक्षिण दिस।

7. पूब दिसक एकटा रंगक पाथरक, आ एकटा मोतीक, आ एकटा जसिंटक आ दक्षिण दिसक लोक सभ लाल पाथरक।
8. मुदा बीचक सिंहासन परमेश् वरक सिंहासन जकाँ स् वर्ग धरि पहुँचि गेल छल, जे अलबास्टरक छल आ सिंहासनक चोटी नीलमणिक छल।
9. आ हम एकटा ज्वालामुखी आगि देखलहुँ। आ एहि पहाड़ सभक आगू एकटा क्षेत्र अछि जे महान पृथ्वीक अंत अछि, ओतहि आकाश पूर्ण भेल।
10. हम एकटा गहींर खाई देखलहुँ, जाहि मे स्वर्गीय आगि केर स्तम्भ छल, आ ओहि मे सँ आगि केर स्तम्भ खसैत देखलहुँ, जे ऊँचाई दिस आ गहींर दिस एक समान नहि छल।
11. ओहि खाईक ओहि पार हम एकटा एहन स्थान देखलहुँ जकर ऊपर आकाशक कोनो आकाश नहि छलैक आ ओकर नीचाँ कोनो मजबूत नींव नहि छलैक।
12. हम ओतय सात टा तारा देखलहुँ जे पैघ जरैत पहाड़ जकाँ अछि, आ जखन हम ओकरा सभक विषय मे पूछलहुँ।
13. स्वर्गदूत कहलनि: 'ई स्थान स्वर्ग आ पृथ्वीक अंत थिक, ई तारा आ आकाशक सेनाक जेल बनि गेल अछि।
14. आगि पर गुड़कि रहल तारा ओ सभ अछि जे अपन उगबाक प्रारम्भ मे प्रभुक आज्ञाक उल्लंघन केने अछि, कारण ओ सभ अपन निर्धारित समय मे नहि निकलल छल।
15. ओ हुनका सभ पर क्रोधित भऽ हुनका सभ केँ ताबत धरि बान्हि देलनि जाबत धरि हुनका सभक अपराधक समापन दस हजार वर्ष धरि नहि भऽ गेलनि।'

अध्याय 19

1. आ उरिएल हमरा कहलनि: 'एतय ओ स्वर्गदूत ठाढ़ हेताह जे स्त्रीगण सँ अपना केँ जोड़ि लेने छथि, आ हुनकर आत्मा अनेक तरहक रूप धारण कयने छथि, मनुष्य केँ अशुद्ध क' रहल छथि आ हुनका सभ केँ देवताक रूप मे राक्षस सभक बलिदान मे भटका देताह, एतय ओ सभ ठाढ़ रहताह, जाबत धरि ओ महान न्यायक दिन धरि ठाढ़ रहताह, जाबत धरि हुनका लोकनिक न्याय नहि होयत, जाबत धरि हुनकर अंत नहि भ' जायत।'
2. आ भटकल स्वर्गदूतक स्त्रीगण सेहो सायरन बनि जेतीह।'
3. हम हनोक असगरे ओहि दर्शन केँ देखलहुँ, जे सभ किछुक अंत अछि।

अध्याय 20

1. आ ई सभ पवित्र स्वर्गदूत सभक नाम अछि जे देखैत अछि।
2. उरिएल, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक, जे संसार पर आ टार्टरस पर अछि।
3. राफेल, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक, जे मनुष्यक आत्मा पर काज करैत छथि।
4. रगुएल, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक जे प्रकाशक लोकक संसार सँ बदला लैत छथि।
5. माइकल, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक, अर्थात, ओ जे मनुक्खक सर्वोत्तम भाग पर आ अराजकता पर ठाढ़ छथि।
6. सरकâêl, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक, जे आत्मा सभक ऊपर राखल गेल अछि, जे आत्मा मे पाप करैत अछि।
7. जिब्राईल, पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक, जे स्वर्ग आ साँप आ करूबक ऊपर अछि।
8. पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक रेमीएल, जिनका परमेश् वर उठय बला सभक ऊपर राखि देलनि।

अध्याय 21

1. आ हम ओहि दिस बढ़लहुँ जतय बात अराजक छल।
2. आ हम ओतय किछु भयावह देखलहुँ: हम ने ऊपर स्वर्ग देखलहुँ आ ने कोनो दृढ़ नींवबला धरती, बल् कि एकटा अराजक आ भयावह स्थान।
3. ओतहि हम देखलहुँ जे आकाशक सातटा तारा ओहि मे एक दोसरा सँ बान्हल अछि जे पैघ पहाड़ जकाँ आगि मे जरैत अछि।
4. तखन हम कहलियनि, 'ओ सभ कोन पापक लेल बान्हल छथि आ कोन कारणेँ हुनका सभ केँ एतय फेकल गेल छथि?'
5. तखन हमरा संग रहनिहार पवित्र स् वर्गदूत मे सँ एक उरीएल कहलथिन, जे हनोक, अहाँ किएक पूछैत छी आ सत्यक लेल किएक आतुर छी?

.

7. ओतय सँ हम दोसर स्थान पर गेलहुँ, जे एखनो पहिने सँ बेसी भयावह छल, आ हम एकटा भयावह बात देखलहुँ: ओतय एकटा पैघ आगि जे जरि गेल आ धधकि रहल छल, आ ओ स्थान रसातल धरि फाटल छल, जे आगि केर पैघ-पैघ उतरैत स्तम्भ सँ भरल छल।
8. तखन हम कहलियनि: 'ई स्थान कतेक भयावह अछि आ देखब कतेक भयावह अछि!'
. आ हम उत्तर देलियनि: 'एहि भयावह स्थानक कारणेँ, आ पीड़ाक तमाशाक कारणेँ।'
10. ओ हमरा कहलनि, 'ई स्थान स्वर्गदूत सभक जेल अछि, आ एतय ओ सभ अनन्त काल धरि जेल मे बंद रहत।'

अध्याय 22

1. ओतय सँ हम दोसर ठाम गेलहुँ, आ ओ हमरा पश्चिम मे एकटा आओर पैघ आ ऊँच पहाड़ आ कठोर चट्टान देखौलनि।
2. आ ओहि मे चारिटा खोखला स्थान छल, गहींर आ चौड़ा आ बहुत चिकना। खोखला जगह कतेक चिकना आ देखबा मे गहींर आ अन्हार अछि।
3. तखन हमरा संग रहनिहार पवित्र स् वर्गदूत मे सँ एक राफेल उत्तर देलथिन।
4.'ई खोखला स्थान सभ एहि लेल बनल अछि जे मृतकक आत्माक आत्मा ओहि मे एकत्रित हो, हँ जे मनुक्खक संतानक सभ आत्मा एतय एकत्रित हो। आ ई स्थान सभ हुनका सभक न्यायक दिन धरि आ निर्धारित समय धरि हुनका सभ केँ ग्रहण करबाक लेल बनाओल गेल अछि जाबत धरि हुनका सभ पर महान न्याय नहि आबि जायत।'
5. हम मृत् युक सन् तान सभक आत् मा सभ केँ देखलहुँ, आ ओकर सभक आवाज स् वर्ग दिस बढ़ि कऽ सूट कऽ लेलक।
6. तखन हम हमरा संग रहनिहार स् वर्गदूत राफेल सँ पुछलियनि, आ हम हुनका कहलियनि, 'ई आत् मा--जेकर आवाज निकलि क' सूट करैत अछि, से केकर अछि?'

.

8. तखन हम एकर संबंध मे, आ सभ खोखला स्थानक संबंध मे पुछलियनि: 'जेना एक दोसर सँ अलग भ' गेल, तेना किएक?'
9. ओ हमरा उत्तर देलथिन आ कहलनि जे, ई तीनू एहन बनाओल गेल अछि जाहि सँ मृतकक आत्मा अलग भ' जाय। आ एहन विभाजन धर्मी लोकनिक आत्माक लेल कयल गेल अछि, जाहि मे ओतय जेना पानिक उज्ज्वल झरना।
10. आ पापी सभक लेल एहन बनाओल गेल अछि जखन ओ मरि जाइत छथि आ पृथ्वी पर दफना जाइत छथि आ हुनका सभक जीवन मे न्याय नहि कयल गेल अछि।
11. एतय हुनका लोकनिक आत्मा एहि पैघ पीड़ा मे अलग राखल जायत, जखन तक कि हुनका सभक न् याय आ दंड आ यातनाक महान दिन धरि जे सभ अनन्त काल धरि गारि पढ़ैत छथि, आ हुनका सभक आत् माक प्रतिशोध। ओतय ओ हुनका सभ कैँ अनन्त काल धरि बान्हि देताह।
12. आ पापी सभक समय मे मारल गेला पर अपन विनाशक विषय मे खुलासा करय बला सभक आत् मा सभक लेल एहन विभाजन कयल गेल अछि।
13. एहन मनुष् य सभक आत् माक लेल बनाओल गेल अछि जे धर्मी नहि छल, बल् कि पापी छल, जे अपराध मे पूर्ण छल आ अपराधी सभक आत् मा। ओ सभ संगी हेताह, मुदा न्यायक दिन हुनका सभक आत् मा नहि मारल जेतनि आ ने ओतऽ सँ उठि जेताह।
14. तखन हम महिमा के प्रभु के आशीर्वाद देलियनि आ कहलियनि जे हमर प्रभु, धर्म के प्रभु, जे अनन्त काल धरि शासन करैत छथि।

अध्याय 23

1. ओतय सँ हम पृथ्वीक छोर सँ पश्चिम मे दोसर स्थान पर गेलहुँ।
2. आ हम एकटा जरैत आगि देखलहुँ जे बिना आराम केने दौड़ैत छल, आ दिन-राति अपन मार्ग सँ नहि रुकैत छल अपितु नियमित रूप सँ दौड़ैत छल।
3. आ हम ई कहैत पुछलियनि जे ई की अछि जे आराम नहि करैत अछि?
4. तखन हमरा संग रहनिहार पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक रगुएल हमरा उत्तर देलथिन आ कहलनि जे, 'अहाँ जे आगि केर ई मार्ग देखलहुँ से पश्चिम मे ओ आगि अछि जे स्वर्गक सभ ज्योतिष कैँ सताबैत अछि।'

अध्याय 24

1. ओतय सँ हम पृथ्वीक दोसर स्थान पर गेलहुँ, आ ओ हमरा आगि केर एकटा पर्वत श्रृंखला देखौलनि जे दिन-राति जरैत छल।
2. हम ओकरा पार कए सातटा भव्य पहाड़ देखलहुँ जे सभ एक दोसरा सँ भिन्न छल आ ओकर पाथर भव्य आ सुन्दर, समग्र रूप सँ भव्य, गौरवशाली रूप आ गोरी बाहरी छल: तीन टा पूब दिस, एकटाक नींव दोसर पर, आ तीनटा दक्षिण दिस, एकटा दोसर पर, आ गहींर खुरदुरा खाई, जाहि मे सँ कियो कोनो दोसर सँ नहि जुड़ैत छल।
3. सातम पहाड़ एहि सभक बीच मे छल, आ ओ सिंहासनक आसन जकाँ ऊँच-ऊँच छल, आ सुगंधित गाछ सभ सिंहासन कैँ घेरने छल।
4. आ ओकरा सभक बीच एकटा एहन गाछ छल जकरा हम एखन धरि गंध नहि केने रही, ने ओकरा सभ मे सँ कियो छल आ ने एहि तरहक आन लोक।
5. तखन हम कहलियनि: 'ई गाछ कतेक सुन्दर अछि, आ सुगन्धित अछि, आ एकर पात गोरा अछि, आ एकर फूल देखबा मे बहुत आनन्ददायक अछि।'
6. तखन माइकल, पवित्र आ सम्मानित स् वर्गदूत मे सँ एक गोटे उत्तर देलथिन जे हमरा संग छलाह आ हुनकर सभक नेता छलाह।

अध्याय 25

1. ओ हमरा कहलनि: 'हनोक, अहाँ हमरा सँ गाछक सुगन्धक विषय मे किएक पूछैत छी, आ अहाँ सत्य कैँ किएक सीखय चाहैत छी?'
2. तखन हम हुनका उत्तर देलियनि जे हम सब किछु जानय चाहैत छी, मुदा खास क' एहि गाछक बारे मे।'
3. आ ओ उत्तर देलथिन: 'ई ऊँच पहाड़ जे अहाँ देखलहुँ, जकर शिखर परमेश् वरक सिंहासन जकाँ अछि, ओकर सिंहासन थिक, जतय पवित्र महान, महिमाक प्रभु, अनन्त राजा बैसताह, जखन ओ नीकताक संग पृथ्वीक दर्शन करबाक लेल उतरताह।
4. आ रहल बात एहि सुगन्धित गाछक तऽ कोनो मर्त्य कैँ एकरा छूबय के अनुमति नहि छैक, जा धरि ओ महान न्याय धरि नहि, जखन ओ सभक प्रतिशोध लेत आ सभ किछु कैँ सदाक लेल समाप्त क' देत। तखन ई धर्मात्मा आ पवित्र लोक कैँ देल जायत।
5. एकर फल चुनल गेल लोकक भोजनक लेल होयत, एकरा पवित्र स्थान मे, अनन्त राजा प्रभुक मन्दिर मे रोपल जायत।
6 तखन ओ सभ हर्षित आ आनन्दित होयत, आ पवित्र स्थान मे प्रवेश करत। ओकर सुगन्ध ओकरा सभक हड्डी मे रहतैक, आ ओ सभ पृथ् वी पर दीर्घायु जीओत, जेना तोहर पूर्वज जीबैत छलाह, आ हुनका सभक दिन मे हुनका सभ कैँ कोनो शोक वा विपत्ति वा यातना वा विपत्ति नहि छूतनि।'
.

अध्याय 26

1. हम ओतय सँ धरतीक बीचोबीच गेलहुँ आ एकटा धन्य स्थान देखलहुँ जाहि मे गाछ सभ छल जकर डारि सभ रहैत छल आ एकटा विच्छेदित गाछक खिलल छल।
2. ओतय हम एकटा पवित्र पहाड़ देखलहुँ, आ पूब दिस पहाड़क नीचाँ एकटा धार छल आ ओ दक्षिण दिस बहैत छल।
3. हम पूब दिस एहि सँ ऊँच एकटा आओर पहाड़ देखलहुँ, आ दुनूक बीच मे एकटा गहींर आ संकीर्ण खाई, ओहि मे पहाड़क नीचाँ एकटा धार सेहो बहैत छल।
4. ओकर पश्चिम मे एकटा आओर पहाड़ छलैक, जे पहिने सँ नीचाँ आ छोट ऊँचाईक छलैक, आ ओकर बीच मे गहींर आ सूखल खाई छलैक।
5. सभ खाई गहींर आ संकीर्ण छल, जे कठोर चट्टान सँ बनल छल, आ ओहि पर गाछ नहि रोपल छल।
6. हम चट्टान सभ पर आश्चर्यचकित छलहुँ, आ खाई पर आश्चर्यचकित छलहुँ, हँ, हम बहुत आश्चर्यचकित छलहुँ।

अध्याय 27

1. तखन हम कहलियनि: 'ई धन्य भूमि, जे पूर्णतः गाछ-वृक्ष सँ भरल अछि, आ बीच मे ई अभिशप्त घाटी कोन वस्तुक लेल अछि?'
2. तखन हमरा संग रहनिहार पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एक उरीएल उत्तर देलथिन आ कहलथिन, 'ई अभिशप्त घाटी ओहि सभक लेल अछि जे अनन्त काल धरि अभिशप्त छथि: एतय सभ शापित लोक सभ एकत्रित भ' जेताह जे अपन ठोर सँ प्रभुक विरुद्ध अयोग्य वचन बजैत छथि आ हुनकर महिमाक विषय मे कठोर बात बजैत छथि। एतहि ओ सभ एकत्रित भऽ जेताह, आ एतऽ हुनका सभक न् यायक स् थान होयत।
3. अंतिम समय मे हुनका सभ पर सदा-सदा लेल धर्मी लोकक सान्निध्य मे धार्मिक न्यायक तमाशा होयत, एतय दयालु लोकनि महिमा के प्रभु, अनन्त राजा के आशीर्वाद देताह।
4. पूर्वक पर न्यायक दिन मे ओ सभ हुनका ओहि दयाक लेल आशीर्वाद देताह, जाहि अनुसार ओ हुनका सभ कें अपन भाग्य देने छथि।'
5. तखन हम महिमा के प्रभु के आशीर्वाद देलियनि आ हुनकर महिमा के प्रस्तुत केलौं आ हुनकर महिमा स प्रशंसा केलौं।

अध्याय 28

1. आ ओतय सँ हम पूब दिस, मरुभूमिक पर्वत श्रृंखलाक बीच गेलहुँ, आ एकटा जंगल देखलहुँ आ ओ एकांत छल, गाछ-वृक्ष आ पौधा सँ भरल छल।
2. आ ऊपरसँ पानि बहल।
3. प्रचुर जलप्रवाह जकाँ दौड़ैत जे उत्तर-पश्चिम दिस बहैत छल जाहिसँ चारू कात मेघ आ ओस चढ़ि जाइत छल ।

अध्याय 29

1. ओतय सँ हम मरुभूमि मे दोसर ठाम गेलहुँ आ एहि पर्वत श्रृंखलाक पूब दिस नजदीक आबि गेलहुँ।
2. ओतय हम सुगंधित गाछ सभ लोबान आ गंधकक सुगंध छोड़ैत देखलहुँ आ गाछ सभ सेहो बादामक गाछ जकाँ छल।

अध्याय 30

1. आ एहि सभ सँ आगू हम पूब दिस दूर गेलहुँ आ एकटा आओर स्थान देखलहुँ, पानि सँ भरल घाटी।
2. आ ओहि मे एकटा गाछ छल, जे सुगंधित गाछक रंग छल जेना मास्टिक।
3. आ ओहि घाटी सभक कात मे सुगंधित दालचीनी देखलहुँ। आ एहि सभ सँ आगू हम पूब दिस बढ़लहुँ।

अध्याय 31

1. हम आन पहाड़ देखलहुँ, आ ओहि मे गाछक बगीचा छल, आ ओहि मे सँ अमृत बहैत छल, जकर नाम सारा आ गलबनम अछि।
2. एहि पहाड़ सभक आगू हम पृथ्वीक छोर सँ पूब मे एकटा आओर पहाड़ देखलहुँ, जाहि पर मुसब्बरक गाछ छल आ सभटा गाछ बदामक गाछ जकाँ स्तम्भ सँ भरल छल।
3. आ जखन कियो एकरा जरा दैत छल तखन कोनो सुगंधित गंध सँ बेसी मीठ गंध होइत छल।

अध्याय 32

.

2. ओतहि सँ हम एहि सभ पहाड़क चोटी पर, पृथ्वीक पूब दिस बहुत दूर धरि गेलहुँ, आ इरिथ्रेया समुद्रक ऊपर सँ गुजरि गेलहुँ आ ओहि सँ दूर गेलहुँ आ ज़ोतिल दूत कैँ पार कयलहुँ।
3. हम धर्मक बगीचा मे पहुँचलहुँ आ ओहि गाछ सभक ओहि पार बहुतो पैघ गाछ सभ उगैत देखलहुँ आ नीक सुगन्धक, पैघ-पैघ, बहुत सुन्दर आ गौरवशाली, आ बुद्धिक गाछ जकरा ओ सभ खाइत छथि आ बहुत बुद्धि जनैत छथि।
4. ओ गाछ देवदार जकाँ ऊँच अछि, आ ओकर पात कैरोबक गाछ जकाँ अछि, आ ओकर फल बेल केर गुच्छा जकाँ अछि, बहुत सुन्दर अछि, आ गाछक सुगंध दूर धरि घुसि जाइत अछि।
5. तखन हम कहलियनि: 'गाछ कतेक सुन्दर अछि, आ ओकर रूप कतेक आकर्षक अछि!'

.

अध्याय 33

1. ओतय सँ हम पृथ् वीक छोर पर जा कऽ ओतय पैघ-पैघ जानवर सभ कैँ देखलहुँ आ एक-दोसर सँ भिन्न-भिन्न छल। आ देखलहुँ जे चिड़ै सभ सेहो रूप-रंग आ सौन्दर्य आ आवाज मे भिन्न-भिन्न छल, एकटा दोसर सँ भिन्न।
2. ओहि पशु सभक पूब दिस हम पृथ्वीक छोर देखलहुँ जाहि पर आकाश टिकल अछि आ आकाशक द्वार खुजल अछि।
3. आ हम देखलहुँ जे स्वर्गक तारा सभ कोना निकलैत अछि, आ हम ओहि द्वार सभ कैँ गिनलहुँ जाहि सँ ओ सभ निकलैत अछि, आ ओकर सभटा निर्गम, प्रत्येक व्यक्तिगत तारा सभक, ओकर संख्या आ ओकर नाम, ओकर मार्ग आ ओकर स्थिति, आ ओकर समय आ ओकर मासक अनुसार लिखलहुँ, जेना हमरा संग रहनिहार पवित्र स्वर्गदूत उरीएल हमरा देखौलनि।
4. ओ हमरा सभ किछु देखौलनि आ हमरा लेल लिखि देलनि।

अध्याय 34

1. ओतय सँ हम उत्तर दिस पृथ्वीक छोर धरि गेलहुँ आ ओतय पूरा पृथ्वीक छोर पर एकटा पैघ आ गौरवशाली यंत्र देखलहुँ।
2. एतय हम स्वर्ग मे स्वर्गक तीन टा द्वार खुजल देखलहुँ, जाहि मे सँ प्रत्येक मे उत्तर हवा चलैत अछि, जखन ओ बहैत अछि तखन जाड़, ओला, ठंढा, बर्फ, ओस आ बरखा होइत अछि।
3. एक दरबज्जासँ ओ सभ सदाक लेल उड़ाबैत अछि, मुदा जखन दोसर दूटा द्वारसँ उड़ाबैत अछि तँ पृथ्वी पर हिंसा आ क्लेशक संग उड़ाबैत अछि।

अध्याय 35

1. ओतय सँ हम पश्चिम दिस पृथ्वीक छोर धरि गेलहुँ आ ओतय स्वर्गक तीन टा द्वार खुजल देखलहुँ जेना हम पूर्व मे देखलहुँ, ओतबे संख्या मे द्वार आ ओतबे संख्या मे निकास।

अध्याय 36

1. हम ओतय सँ दक्षिण दिस पृथ्वीक छोर धरि गेलहुँ आ ओतय आकाशक तीन टा खुजल द्वार देखलहुँ।
2. ओतय सँ हम पूब दिस स्वर्गक छोर धरि गेलहुँ आ एतय स्वर्गक तीनू पूर्वी द्वार खुजल आ ऊपर छोट-छोट द्वार देखलहुँ।
3. एहि छोट-छोट पोर्टल मे सँ प्रत्येक द्वार सँ स्वर्गक तारा गुजरैत अछि आ ओहि बाट पर पश्चिम दिस अपन मार्ग दौड़ैत अछि जे ओकरा सभ कैँ देखाओल गेल अछि।
4. आ जतेक बेर देखलहुँ हम महिमा के प्रभु के सदिखन आशीर्वाद दैत रहलहुँ, आ महिमा के प्रभु के आशीर्वाद दैत रहलहुँ जे पैघ आ गौरवशाली चमत्कार केने छथि, स्वर्गदूत आ आत्मा आ मनुष्य कैँ हुनकर काजक महानता देखाबय लेल, जाहि सँ ओ हुनकर काज आ हुनकर समस्त सृष्टिक प्रशंसा करथि, जाहि सँ ओ हुनकर शक्तिक काज देखथि आ हुनकर हाथक महान काजक प्रशंसा करथि आ हुनका सदाक लेल आशीर्वाद देथि।

अध्याय 37

1. दोसर दर्शन जे ओ देखलनि, बुद्धिक दर्शन--जे देखलनि जे आदमक पुत्र सेतक पुत्र कैननक पुत्र यारेदक पुत्र हनोक देखलनि।
2. आ ई बुद्धिक वचनक शुरुआत अछि जे हम पृथ्वी पर रहनिहार सभ कैँ बजबाक आ कहबाक लेल अपन आवाज उठौने रही: हे पुरान समयक लोक सभ, सुनू, आ देखू, अहाँ सभ जे बाद मे आओत, पवित्र परमेश् वरक ओ वचन जे हम आत् मा सभक प्रभुक समक्ष बाजब।
3. नीक छल जे एकरा सभ कैँ मात्र पुरान समयक लोक सभ कैँ घोषित कयल जाय, मुदा जे बाद मे आओत ताहि सँ सेहो हम सभ बुद्धिक प्रारम्भ नहि रोकब।
4. आइ धरि एहन बुद्धि आत्माक प्रभु द्वारा कहियो नहि देल गेल अछि जेना हमरा अपन अंतर्दृष्टिक अनुसार, आत्माक प्रभुक नीक प्रसन्नताक अनुसार भेटल अछि, जिनका द्वारा हमरा अनन्त जीवनक भाग्य भेटल अछि।
5. हमरा तीन टा दृष्टान्त देल गेल, आ हम अपन आवाज उठा कऽ पृथ्वी पर रहनिहार सभ कैँ सुनौलहुँ।

अध्याय 38

1. पहिल दृष्टान्त। जखन धर्मी सभक मंडली प्रकट होयत, आ पापी सभक पापक न् याय होयत, आ पृथ् वी पर सँ भगाओल जायत।
2. आ जखन धर्मात्मा धर्मी लोकक आँखि मे प्रकट होयत, जिनकर चुनल काज आत्माक प्रभु पर लटकल रहत, आ पृथ्वी पर रहनिहार धर्मी आ चुनल गेल लोक सभक लेल इजोत प्रकट होयत, तखन पापी सभक निवास कतय होयत, आ आत्मा सभक प्रभु कैँ अस्वीकार करयवला सभक विश्रामस्थान कतय होयत? जँ जन्म नहि लेने रहितथि तँ हुनका सभक लेल नीक रहितनि ।
3. जखन धर्मी लोकनिक रहस्य प्रगट होयत आ पापी सभक न्याय होयत, आ अभक्त कैँ धर्मात्मा आ चुनल लोकक सान्निध्य सँ भगा देल जायत।
4. तहिया सँ पृथ्वी पर जे मालिक अछि से आब शक्तिशाली आ उच्च नहि होयत: आ पवित्र लोकक चेहरा नहि देखि सकैत अछि, किएक तँ आत् मा सभक प्रभु पवित्र, धर्मी आ चुनल लोक सभक मुँह पर अपन इजोत प्रकट कयलनि अछि।
5. तखन राजा आ पराक्रमी सभ नष्ट भ' जेताह आ धर्मी आ पवित्र लोकक हाथ मे देल जेताह।
6. आ तहिया सँ कियो अपना लेल आत्माक प्रभु सँ दया नहि ताकत किएक त' ओकर जीवन समाप्त भ' गेल छैक।

अध्याय 39

1. ओहि दिन मे एहन होयत जे चुनल आ पवित्र बच्चा सभ ऊँच आकाश सँ उतरत आ ओकर संतान मनुष् यक सन् तान सभक संग एक भऽ जायत।
2. ओहि समय मे हनोक कैँ उत्साह आ क्रोधक किताब आ बेचैनी आ निष्कासनक किताब भेटलनि। आत् मा सभक प्रभु कहैत छथि जे हुनका सभ पर दया नहि कयल जायत।
3. ओहि दिन मे एकटा बवंडर हमरा पृथ्वी पर सँ लऽ गेल, आ हमरा आकाशक छोर पर बैसा देलक।
4. ओतय हम एकटा आओर दर्शन देखलहुँ, पवित्र लोकक निवास स्थान आ धर्मी लोकनिक विश्राम स्थल।
5. एतय हमर आँखि हुनकर धर्मी स्वर्गदूत सभक संग हुनका लोकनिक निवास स्थान, आ पवित्र स्थानक संग हुनका लोकनिक विश्राम स्थल देखलनि। ओ सभ मनुष् यक संतान सभक लेल विनती आ बिनती आ प्रार्थना कयलनि, आ हुनका सभक सोझाँ धर्म पानि जकाँ बहैत छल, आ पृथ्वी पर ओस जकाँ दया।
6क। ओहि स्थान पर हमर आँखि धार्मिक आ विश्वासक चुनल गेल कैँ देखलक।
7क। हम आत् मा सभक प्रभुक पाँखि सभक नीचाँ हुनकर निवास स्थान देखलहुँ।
6ख। हुनकर समय मे धार्मिकता प्रबल होयत, आ धर्मी आ चुनल लोक हुनका सामने अनन्त काल धरि अनगिनत रहताह।
7ख। आ हुनका समक्ष सभ धर्मी आ चुनल गेल लोक सभ आगि सन इजोत जकाँ मजबूत होयत, आ हुनकर मुँह आशीर्वाद सँ भरल होयत, आ हुनकर ठोर आत्मा सभक प्रभुक नामक स्तुति करत, आ हुनका समक्ष धार्मिकता कहियो खत्म नहि होयत, आ हुनका सोझाँ सोझता कहियो खत्म नहि होयत।
8. हम ओतहि रहबाक इच्छा रखैत छलहुँ, आ हमर आत्मा ओहि निवास स्थानक लेल तरसैत छल, आ एखन धरि हमर भाग ओतहि रहल अछि, किएक तँ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष हमरा विषय मे एना स्थापित भेल अछि।
9. ओहि दिन मे हम आत्माक प्रभुक नामक स्तुति आ प्रशंसा करैत छलहुँ आ स्तुति आ स्तुतिक संग करैत छलहुँ, कारण ओ हमरा आत्माक प्रभुक सद्प्रसन्नताक अनुसार आशीर्वाद आ महिमा लेल नियत कयलनि अछि।
१०.

11. आ हुनका सामने कोनो विराम नहि अछि। दुनियाँक सृष्टि सँ पहिने ओ जनैत छथि जे की अनन्त काल लेल अछि आ की पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहत।
12. जे सुतल अछि से अहाँ केँ आशीर्वाद नहि दैत अछि, ओ अहाँक महिमाक सोझाँ ठाढ़ भ' क' आशीर्वाद दैत अछि, स्तुति करैत अछि आ प्रशंसा करैत अछि, कहैत अछि: "पवित्र, पवित्र, पवित्र, आत्मा सभक प्रभु छथि, ओ पृथ्वी केँ आत्मा सभ सँ भरैत छथि।"
13. आ एतय हमर आँखि सभ ओहि सभ केँ देखलक जे सुतल नहि अछि, ओ सभ हुनका सोझाँ ठाढ़ भ' क' आशीर्वाद दैत कहैत छथि: 'अहाँ धन्य होउ, आ प्रभुक नाम सदा-सदा लेल धन्य होउ।'
14. हमर मुँह बदलि गेल। किएक तँ आब हम देखि नहि सकलहुँ।

अध्याय 40

1. तकर बाद हम हजारो हजार आ दस हजार गुना दस हजार देखलहुँ, हम एकटा संख्या आ गणना सँ बेसी भीड़ देखलहुँ जे आत् मा सभक प्रभुक समक्ष ठाढ़ छल।
2. आ आत्माक प्रभुक चारू कात हम चारिटा उपस्थिति देखलहुँ, जे नहि सुतल लोक सँ भिन्न छल, आ हम ओकर नाम सीखलहुँ, कारण जे स् वर्गदूत हमरा संग गेल छलाह, हुनका सभक नाम हमरा जनौलनि आ हमरा सभटा नुकायल बात देखौलनि।
3. हम ओहि चारू उपस्थितिक आवाज सुनलहुँ जखन ओ सभ महिमा के प्रभुक समक्ष स्तुति करैत छल।
4. पहिल आवाज आत्माक प्रभु केँ सदाक लेल आशीर्वाद दैत अछि।
5. आ दोसर आवाज सुनलहुँ जे चुनल गेल आ आत्माक प्रभु पर लटकल चुनल लोक केँ आशीर्वाद दैत छल।
6. आ तेसर आवाज हम सुनलहुँ जे पृथ्वी पर रहनिहार आ आत्माक प्रभुक नाम सँ विनती करैत लोक सभक लेल प्रार्थना आ बिनती करैत छी।
7. हम चारिम आवाज सुनलहुँ जे शैतान सभ केँ भगाबैत छल आ ओकरा सभ केँ पृथ्वी पर रहनिहार सभ पर आरोप लगाबय लेल आत् मा सभक प्रभुक समक्ष आबय सँ मना करैत छल।
8. तकर बाद हम हमरा संग गेल शान्तिक दूतसँ पुछलियनि, जे हमरा सभ किछु नुकायल देखौलनि: 'ई चारिटा उपस्थिति के अछि जे हम देखलहुँ आ जकर वचन सुनलहुँ आ लिखलहुँ?'
. आ ई सभ आत् माक प्रभुक चारिटा स् वर्गदूत आ चारिटा आवाज जे हम ओहि दिन मे सुनने रही।

अध्याय 41

1. तकर बाद हम आकाशक सभ रहस्य देखलहुँ, आ राज्य कोना बँटल अछि, आ मनुष्यक कर्म केँ कोना तराजू मे तौलल जाइत अछि।
2. ओतहि हम चुनल लोक सभक हवेली आ पवित्र लोकक हवेली सभ देखलहुँ, आ हमर आँखि देखलहुँ जे ओतय सँ सभ पापी सभ केँ भगाओल गेल छल जे आत् मा सभक प्रभुक नाम केँ अस्वीकार करैत अछि आ घसीटैत अछि।
3. ओतहि हमर आँखि बिजली आ गरजबाक रहस्य आ हवाक रहस्य देखलक जे कोना ओ सभ धरती पर उड़बाक लेल बँटल अछि, आ मेघ आ ओसक रहस्य, आ ओतहि देखलहुँ जे ओ सभ ओहि स्थान पर कतय सँ निकलैत अछि आ कतय सँ धूल-धूसरित धरती केँ संतृप्त करैत अछि।
4. ओतय हम बंद कोठली देखलहुँ जाहि मे हवा बँटल अछि, ओला आ हवाक कोठली, धुंध आ मेघक कोठली आ ओकर मेघ संसारक प्रारम्भहि सँ पृथ्वी पर मंडराइत अछि।
5. आ हम देखलहुँ जे सूर्य आ चन्द्रमाक कोठली सभ कतय सँ आगू बढ़ैत अछि आ कतय सँ फेर अबैत अछि, आ ओकर गौरवशाली वापसी, आ कोना एक दोसर सँ श्रेष्ठ अछि, आ ओकर राजसी कक्षा, आ कोना ओ सभ अपन कक्षा सँ बाहर नहि निकलैत अछि, आ अपन कक्षा मे किछु नहि जोड़ैत अछि आ ओहि मे सँ किछु नहि लैत अछि, आ एक दोसरा पर विश्वास रखैत अछि, जाहि शपथ सँ दुनू एक दोसरा सँ बान्हल अछि।
6. आ पहिने सूर्य निकलैत अछि आ आत्मा सभक प्रभुक आज्ञाक अनुसार अपन बाट पार करैत अछि, आ हुनकर नाम सदा-सदा लेल पराक्रमी अछि।
7. आ तकर बाद हम चन्द्रमाक नुकायल आ दृश्यमान बाट देखलहुँ, आ ओ दिन आ राति मे ओहि स्थान पर अपन मार्गक मार्ग पूरा करैत छथि--जे आत्मा सभक स्वामीक समक्ष दोसरक विपरीत स्थिति मे बैसल छथि। धन्यवाद आ प्रशंसा करैत छथि आ विश्राम नहि करैत छथि। कारण, हुनका सभक धन्यवादक विश्राम हुनका सभक लेल छनि।
8. कारण सूर्य बेसी काल आशीर्वाद वा अभिशाप लेल बदलैत अछि, आ चन्द्रमाक मार्गक मार्ग प्रभुक नाम पर धर्मात्मा लेल इजोत आ पापी लेल अन्हार होइत अछि, जे इजोत आ अन्हारक बीच विरह बनौलनि, आ मनुष्यक आत्मा केँ बाँटि देलनि, आ धर्मात्माक आत्मा केँ मजबूत केलनि, अपन धर्मक नाम पर।
9. किएक तँ कोनो स् वर्गदूत बाधा नहि दैत अछि आ कोनो शक्ति बाधा नहि पहुँचा सकैत अछि। कारण, ओ हुनका सभक लेल एकटा न्यायाधीश नियुक्त करैत छथि आ हुनका सभक समक्ष न्याय करैत छथि।

अध्याय 42

1. बुद्धि केँ कोनो एहन स्थान नहि भेटल जतय ओ रहय। तखन स्वर्ग मे हुनका एकटा निवास-स्थान देल गेलनि।
2. बुद्धि ओकरा मनुक्खक संतानक बीच रहबाक लेल निकलल, आ कोनो निवास-स्थान नहि भेटल, बुद्धि अपन स्थान पर घुरि गेल, आ स्वर्गदूत सभक बीच अपन बैस लेलक।
3. ओकर कोठली सँ अधर्म निकलि गेलै, जकरा ओ नहि खोजलकै, ओकरा भेटलै, आ ओकरा सभक संग रहि गेलै, जेना मरुभूमि मे बरखा आ प्यासल देश पर ओस।

अध्याय 43

1. हम आन बिजली आ आकाशक तारा देखलहुँ, आ देखलहुँ जे कोना ओ सभ केँ अपन नाम सँ बजौलनि आ ओ सभ हुनकर बात सुनलनि।
2. आ हम देखलहुँ जे कोना ओकरा सभक प्रकाशक अनुपातक अनुसार धर्मी तराजू मे तौलल जाइत छैक, हम देखलहुँ जे ओकर

सभक स्थानक चौड़ाई आ ओकर सभक प्रकटीकरणक दिन, आ ओकर सभक क्रान्ति मे बिजली कोना उत्पन्न होइत छैक, आ हम देखलहुँ जे ओकर सभक क्रान्ति स्वर्गदूत सभक संख्याक अनुसार होइत छैक, आ कोना ओ सभ एक दोसराक संग विश्वास रखैत अछि।
3. आ हम ओहि स्वर्गदूत सँ पुछलियनि जे हमरा संग गेल छलाह जे हमरा नुकायल बात देखौलनि: 'ई सब की अछि?'
.

अध्याय 44

संगहि एकटा आओर घटना जे हम बिजलीक संबंध मे देखलहुं : कोना किछु तारा उठि कए बिजली बनि जाइत अछि आ अपन नव रूप स अलग नहि भ सकैत अछि ।

अध्याय 45

1. आ ई दोसर दृष्टान्त अछि जे पवित्र लोकक निवास आ आत् मा सभक प्रभुक नाम कैँ नकारैत अछि।
2. आ स्वर्ग मे ओ सभ नहि चढ़त, आ पृथ्वी पर नहि आओत: एहन पापी सभक भाग्य होयत, जे आत्मा सभक प्रभुक नाम कैँ नकारने अछि, जे एहि तरहेँ कष्ट आ क्लेशक दिनक लेल सुरक्षित अछि।
3. ओहि दिन हमर चुनल लोक महिमा के सिंहासन पर बैसताह, आ हुनकर काज के परीक्षण करताह, आ हुनकर विश्राम स्थल असंख्य होयत। हमर चुनल लोक सभ कैँ, आ हमर गौरवशाली नाम कैँ पुकारनिहार सभ कैँ देखिते हुनका सभक आत् मा हुनका सभक भीतर मजबूत भऽ जायत।
4. तखन हम अपन चुनल गेल व्यक्ति कैँ हुनका लोकनिक बीच निवास करब। आ हम स्वर्ग के रूपांतरित क' एकरा शाश्वत आशीर्वाद आ प्रकाश बना देब।
5. हम पृथ्वी कैँ बदलि कऽ ओकरा आशीर्वाद बना देब, आ हम अपन चुनल लोक सभ कैँ ओहि पर रहब, मुदा पापी आ दुष्कर्मी सभ एहि पर पैर नहि राखत।
6. कारण हम अपन धर्मी लोकनि कैँ शान्तिक व्यवस्था आ तृप्त केलहुँ, आ हुनका सभ कैँ हमरा सोझाँ रहय देलहुँ, मुदा पापी सभक लेल हमरा संग न्याय आबि रहल अछि, जाहि सँ हम हुनका सभ कैँ पृथ्वी पर सँ नष्ट कऽ देब।

अध्याय 46

1. ओतय हम एकटा एहन व्यक्ति कैँ देखलहुँ जकरा दिनक माथ छलैक, ओकर माथ ऊन जकाँ उज्जर छलैक, आ ओकरा संग एकटा आओर प्राणी छलैक जकर चेहरा मनुक्ख जकाँ छलैक, आ ओकर चेहरा कृपा सँ भरल छलैक, जेना पवित्र स्वर्गदूत मे सँ एकटा।
2. हम ओहि स् वर्गदूत सँ पुछलियनि जे हमरा संग गेल छलाह आ हमरा ओहि मनुष् यक पुत्रक विषय मे सभटा नुकायल बात देखौलनि, जे ओ के छथि आ कतय सँ आयल छलाह आ ओ दिनक सिरक संग किएक गेलाह? ओ हमरा उत्तर देलथिन, "ई मनुष्यक पुत्र छथि जिनका धार्मिकता छनि, जिनका संग धार्मिकता रहैत छनि, आ जे नुकायल वस्तुक सभटा खजाना प्रगट करैत छथि।
3. कारण, आत् मा सभक प्रभु हुनका चुनने छथि, आ जिनकर भाग्य आत् मा सभक प्रभुक समक्ष सदा-सदाक लेल सोझता मे सर्वोपरि अछि।
4. ई मनुष्यक पुत्र जकरा अहाँ देखलहुँ, राजा आ पराक्रमी सभ कैँ अपन आसन सँ उठबैत, आ बलवान कैँ अपन सिंहासन सँ उठबैत, आ बलवानक बागडोर ढीला करत, आ पापी सभक दाँत तोड़ि देत।
5. ओ राजा सभ कैँ ओकर सिंहासन आ राज्य सँ उतारि देत, कारण ओ सभ हुनकर प्रशंसा आ प्रशंसा नहि करैत छथि, आ ने विनम्रतापूर्वक स्वीकार करैत छथि जे हुनका सभ कैँ राज्य कतय सँ देल गेल छल।
6. ओ बलवान सभक मुँह नीचाँ राखि देत, आ ओकरा सभ कैँ लाज सँ भरि देत। आ अन्हार ओकर सभक निवास होयत, आ कीड़ा ओकर सभक बिछाओन होयत, आ ओकरा सभ कैँ अपन बिछौन सँ उठबाक कोनो आशा नहि रहतैक, कारण ओ सभ आत्मा सभक प्रभुक नामक प्रशंसा नहि करैत अछि।
7. आ ई सभ छथि जे स् वर्गक तारा सभक न्याय करैत छथि आ परमात्माक विरुद्ध हाथ उठबैत छथि आ पृथ् वी पर रौदैत छथि आ ओहि पर रहैत छथि। आ हुनका सभक सभ काज अधर्मक प्रगट होइत छनि, आ हुनका सभक सामर्थ् य हुनका सभक धन पर टिकल छनि, आ हुनका सभक विश्वास ओहि देवता सभ पर छनि जे ओ सभ अपन हाथ सँ बनौने छथि, आ ओ सभ आत् मा सभक प्रभुक नाम कैँ नकारैत छथि।
8. आ ओ सभ हुनकर मंडली सभक घर सभ कैँ सताबैत छथि, आ आत् मा सभक प्रभुक नाम पर लटकल विश्वासी सभ कैँ।

अध्याय 47

1. आ ओहि दिन मे धर्मी लोकनिक प्रार्थना, आ धर्मी लोकनिक खून पृथ्वी सँ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष चढ़ल होयत।
2. ओहि दिन मे जे पवित्र स्वर्ग मे ऊपर रहैत छथि, एक स्वर मे एक स्वर मे विनती आ प्रार्थना आ स्तुति करताह, आ आत् माक प्रभुक नामक धन्यवाद आ आशीर्वाद देताह, जे धर्मात्माक खून बहल गेल अछि, ओकर दिस सँ, आ जाहि सँ धर्मी लोकनिक प्रार्थना आत्माक प्रभुक समक्ष व्यर्थ नहि हो, जाहि सँ हुनका सभक संग न्याय नहि हो सदाक लेल कष्ट भोगय लेल।
3. ओहि दिन मे हम दिनक मुखिया कैँ देखलहुँ जखन ओ अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल छलाह, आ जीवित लोकक पुस्तक हुनका सोझाँ खुजल छलनि।
4. पवित्र लोकक हृदय आनन्द सँ भरि गेल। कारण, धर्मी लोकनिक संख्या चढ़ाओल गेल छल, आ धर्मी लोकनिक प्रार्थना सुनल गेल छल, आ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष धर्मी सभक खून माँगल गेल छल।

अध्याय 48

1. ओहि ठाम हम धार्मिकताक फव्वारा देखलहुँ जे अक्षय छल। सभ प्यासल लोक सभ ओकरा सभ मे सँ पीबि गेल, आ बुद्धि सँ भरि गेल, आ ओकर सभक निवास धर्मात्मा आ पवित्र आ चुनल लोक सभक संग छल।

2. ओहि समय मे मनुष्यक पुत्रक नाम आत् मा सभक प्रभुक सान्निध मे राखल गेल, आ ओकर नाम दिनक मुखियाक समक्ष राखल गेल।
3. हँ, सूर्य आ चिन्ह सभक निर्माण सँ पहिने, आकाशक तारा सभक निर्माण सँ पहिने, आत् मा सभक प्रभुक समक्ष हुनकर नाम राखल गेल छल।
4. ओ धर्मी लोकक लेल एकटा लाठी बनत जाहि पर ओ अपना केँ रहि कऽ नहि खसत, आ ओ गैर-यहूदी सभक इजोत होयत, आ हृदय सँ त्रस्त लोक सभक आशा होयत।
5. पृथ्वी पर रहनिहार सभ खसि क' हुनकर आराधना करत, आ आत्माक प्रभुक स्तुति आ आशीर्वाद आ गीतक संग उत्सव मनाओत।
6. आ एहि कारणेँ ओ चुनल गेल छथि आ हुनका सामने नुका गेल छथि, संसारक सृष्टि सँ पहिने आ अनन्त काल धरि।
7. आ आत् मा सभक प्रभुक बुद्धि हुनका पवित्र आ धर्मी लोक सभक समक्ष प्रगट कयलनि अछि। कारण, ओ धर्मी सभक भाग्य केँ सुरक्षित रखने छथि, किएक तँ ओ सभ एहि अधर्मक संसार सँ घृणा आ तिरस्कार कयलनि, आ आत् मा सभक प्रभुक नाम पर एकर सभ काज आ बाट सँ घृणा कयलनि, कारण हुनकर नाम सँ ओ सभ उद्धार पाबि गेल छथि, आ हुनकर सभक जीवनक संबंध मे हुनकर प्रसन्नताक अनुसार भेलनि।
8. एहि दिन मे पृथ्वीक राजा सभ नीचाँ मुँह मे आबि जेताह, आ बलवान जे अपन हाथक काजक कारणेँ एहि देश पर कब्जा कएने छथि। किएक तँ ओ सभ दुख आ कष्टक दिन अपना केँ उद्धार नहि पाबि सकैत छथि।
9. हम ओकरा सभ केँ अपन चुनल लोकक हाथ मे सौंपि देब, जेना आगि मे भूसा पवित्र लोकक सामने जहिना जरि जायत, जेना पानि मे सीसा धर्मी लोकक सामने डूबि जायत, आ आब ओकरा सभक कोनो निशान नहि भेटत।
10. आ हुनका सभक क्लेशक दिन पृथ्वी पर विश्राम होयत, आ हुनका सभक सोझाँ ओ सभ खसि पड़त आ फेर नहि उठत। आत्माओं के प्रभु के नाम धन्य हो |

अध्याय 49

एल। कारण, बुद्धि पानि जकाँ उझलि जाइत छैक, आ महिमा ओकरा सामने अनन्त काल धरि क्षीण नहि होइत छैक।
2. कारण ओ धार्मिकताक सभ रहस्य मे पराक्रमी अछि, आ अधर्म छाया जकाँ गायब भ' जायत, आ ओकर कोनो निरंतरता नहि; कारण, चुनल गेल लोक आत् मा सभक प्रभुक समक्ष ठाढ़ छथि, आ हुनकर महिमा अनन्त काल धरि अछि, आ हुनकर पराक्रम सभ पीढ़ी धरि अछि।
3. आ हुनका मे बुद्धिक आत् मा, आ अंतर्दृष्टि देनिहार आत् मा, आ बुद्धि आ पराक्रमक आत् मा, आ धर्म मे सुतल लोकक आत् मा निवास करैत अछि।
4. ओ गुप्त बातक न्याय करत, आ ओकरा सामने कियो झूठ बाजि नहि सकैत अछि। कारण, ओ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष अपन प्रसन्नताक अनुसार चुनल गेल छथि।

अध्याय 50

1. आ ओहि दिन मे पवित्र आ चुनल गेल लोकक लेल परिवर्तन होयत, आ दिनक इजोत हुनका पर रहत, आ महिमा आ सम्मान पवित्र दिस घुरि जायत।
2. ओहि क्लेशक दिन जाहि दिन पापी सभक विरुद्ध अधलाह भंडार कयल जायत। आ धर्मी लोक आत् माक प्रभुक नाम पर विजयी होयत: आ ओ दोसरो केँ एहि बातक गवाह बनौताह जाहि सँ ओ सभ पश्चाताप करथि आ अपन हाथक काज छोड़ि सकथि।
3. हुनका सभ केँ आत् मा सभक प्रभुक नाम सँ कोनो आदर नहि होयत, तइयो हुनकर नाम सँ हुनका सभक उद्धार होयत, आ आत् मा सभक प्रभु हुनका सभ पर दया करताह, कारण हुनकर करुणा बहुत पैघ छनि।
4. ओ अपन न्याय मे सेहो धर्मी छथि, आ हुनकर महिमाक सान्निध्य मे अधर्म सेहो अपना केँ नहि बनाओत।
5. आब सँ हम हुनका सभ पर कोनो दया नहि करब, आत् मा सभक प्रभु कहैत छथि।

अध्याय 51

1. ओहि दिन मे पृथ्वी सेहो जे किछु सौंपल गेल अछि से वापस करत, आ सीओल सेहो जे भेटल अछि से वापस करत, आ नरक जे किछु ऋणी अछि से वापस करत।
2. ओ ओकरा सभ मे सँ धर्मी आ पवित्र लोक सभ केँ चुनताह, किएक तँ हुनका सभक उद्धार करबाक दिन नजदीक आबि गेल अछि।
3. ओहि दिन मे चुनल गेल लोक हमर सिंहासन पर बैसताह, आ हुनकर मुँह सँ बुद्धि आ सलाहक सभ रहस्य उझलि जायत, कारण आत् मा सभक प्रभु ओकरा सभ केँ दऽ देलनि आ हुनकर महिमा कयलनि।
4. ओहि दिन मे पहाड़ मेढ़क जकाँ उछलत, आ पहाड़ी सभ दूध सँ तृप्त मेमना जकाँ उछलत, आ स् वर्ग मे सभ स् वर्गदूत सभक मुँह आनन्द सँ रोशन होयत।
5. कारण ओहि दिन मे चुनल गेल लोक उठत, आ पृथ्वी आनन्दित होयत, आ धर्मी लोक सभ ओहि पर रहत, आ चुनल गेल लोक सभ ओहि पर चलत।

अध्याय 52

एल। आ ओहि दिनक बाद ओहि स्थान पर जतय हम नुकायल वस्तुक सभटा दर्शन देखने रही--कारण हम एकटा बवंडर मे लऽ गेल छलहुँ आ ओ सभ हमरा पश्चिम दिस ल' गेल छल।
2. ओतहि हमर आँखि स् वर्गक सभटा गुप्त वस्तु देखलहुँ जे होयत, लोहाक पहाड़, तांबाक पहाड़, चानीक पहाड़, सोनाक पहाड़, कोमल धातुक पहाड़ आ सीसाक पहाड़।
3. हम हमरा संग गेल स् वर्गदूत सँ पुछलियनि, 'ई कोन बात अछि जे हम गुप्त रूप सँ देखलहुँ?
4. ओ हमरा कहलनि: 'ई सभ जे देखलहुँ से हुनकर अभिषिक्तक शासनक सेवा करत जाहि सँ ओ पृथ्वी पर शक्तिशाली आ पराक्रमी होथि।'

5. ओ शान्तिक स् वर्गदूत हमरा उत्तर देलथिन, 'कनि रुकू, तखन अहाँ कैँ ओ सभ गुप्त बात प्रगट होयत जे आत् मा सभक प्रभु कैँ घेरने अछि।
6. आ ई पहाड़ जे अहाँक आँखि देखने अछि, लोहाक पहाड़, ताम्रक पहाड़ आ चानीक पहाड़, आ सोनाक पहाड़, आ कोमल धातुक पहाड़ आ सीसाक पहाड़, ई सभ चुनल गेल व्यक्तिक सोझाँ मोम जकाँ होयत: आगिक सोझाँ, आ ओहि पहाड़ सभ पर ऊपर सँ बहैत पानि जकाँ, आ ओकर पएरक सोझाँ ओ सभ शक्तिहीन भ' जायत।
7. ओहि दिन मे ककरो उद्धार नहि भेटतैक, सोना वा चानी सँ, आ कियो नहि बचि सकैत अछि।
8. युद्धक लेल लोहा नहि रहत आ ने छाती मे वस्त्र पहिराओल जायत। कांस्य कोनो काजक नहि होयत, आ टीन कोनो सेवाक नहि होयत आ ओकर मान नहि होयत, आ सीसाक वांछित नहि होयत।
9. आ एहि सभ बात कैँ नकारल जायत आ पृथ्वीक सतह सँ नष्ट कयल जायत, जखन चुनल गेल व्यक्ति आत्माक प्रभुक मुँह मे प्रकट होयत।'

अध्याय 53

1. ओतय हमर आँखि एकटा गहींर घाटी देखलक जकर मुँह खुजल छल, आ पृथ्वी आ समुद्र आ द्वीप पर रहनिहार सभ हुनका लग उपहार आ उपहार आ श्रद्धांजलि केर निशान आनि देताह, मुदा ओ गहींर घाटी भरल नहि होयत।
2. आ ओकर सभक हाथ अराजक काज करैत अछि, आ पापी सभ ओकरा सभ कैँ खा जाइत अछि जकरा ओ सभ अनियमित रूप सँ अत्याचार करैत अछि, तइयो पापी सभ आत् मा सभक प्रभुक सामने नष्ट भऽ जायत, आ ओकरा सभ कैँ हुनकर धरती पर सँ भगा देल जायत, आ ओ सभ अनन्त काल धरि नाश भऽ जायत।
3. हम देखलहुँ जे दंडक सभ स् वर्गदूत ओतहि रहैत छथि आ शैतानक सभटा वाद्ययंत्र तैयार करैत छलाह।
4. आ हम हमरा संग गेल शान्तिक दूत सँ पुछलियनि: 'ई सभ वाद्ययंत्र केकरा लेल तैयार क' रहल छथि?'
5. ओ हमरा कहलनि, 'ई सभ एहि पृथ्वीक राजा आ पराक्रमी सभक लेल तैयार करैत छथि, जाहि सँ ओ सभ नष्ट भ' जाय।
6. एकर बाद धर्मी आ चुनल गेल लोक अपन मंडली के घर के प्रकट करौताह, आब सँ ओ सभ आत् मा सभक प्रभुक नाम पर आब कोनो बाधा नहि होयत।
7. आ ई पहाड़ ओकर धर्मक समक्ष पृथ्वी जकाँ नहि ठाढ़ होयत, मुदा पहाड़ी सभ पानिक फव्वारा जकाँ होयत, आ धर्मी कैँ पापी सभक अत्याचार सँ विश्राम भेटत।'

अध्याय 54

1. हम देखलहुँ आ पृथ्वीक दोसर भाग दिस घुमलहुँ आ ओतय एकटा गहींर घाटी देखलहुँ जाहि मे जरैत आगि छल।
2. ओ सभ राजा आ पराक्रमी सभ कैँ अनलनि आ एहि गहींर घाटी मे फेकय लगलाह।
3. ओतहि हमर आँखि देखलक जे कोना ई सभ अपन वाद्ययंत्र बनबैत अछि, लोहाक जंजीर जे अथाह वजनक।
4. हम हमरा संग गेल शान्तिक दूत सँ पुछलियनि जे ई जंजीर केकरा लेल तैयार कयल जा रहल अछि?
5. ओ हमरा कहलनि, 'ई सभ अजाज़ेलक सेना सभक लेल तैयार कयल जा रहल अछि, जाहि सँ ओ सभ ओकरा सभ कैँ ल' क' पूर्ण दण्डक खाई मे फेकि सकय, आ ओ सभ अपन जबड़ा कैँ खुरदुरा पाथर सँ झाँपि देत जेना आत्मा सभक प्रभुक आज्ञा देलनि।
6. ओहि महान दिन माइकल, जिब्राईल, राफेल आ फनुएल ओकरा सभ कैँ पकड़ि कऽ ओहि दिन ओकरा सभ कैँ जरैत भट्ठी मे फेकि देत, जाहि सँ आत् मा सभक प्रभु ओकरा सभक अधर्मक बदला लेताह जे शैतानक अधीन भऽ गेलाह आ पृथ् वी पर रहनिहार सभ कैँ भटकाबय।'
7. 'ओहि दिन मे आत् मा सभक प्रभुक दंड आओत, आ ओ आकाशक ऊपर जे जलक कोठली अछि आ पृथ् वीक नीचाँक फव्वारा सभक सभ कोठली खोलताह।
8. सभ पानि पानि सँ जुड़ि जायत, जे आकाशक ऊपर अछि से पुल्लिंग आ पृथ्वीक नीचाँ जे पानि अछि से स्त्रीलिंग अछि।
9. ओ सभ पृथ्वी पर रहनिहार आ आकाशक छोर नीचाँ रहनिहार सभ कैँ नष्ट कऽ देत।
10. जखन ओ सभ अपन अधर्म कैँ बूझि लेत जे ओ सभ पृथ् वी पर केने अछि, तखन ओ सभ एहि सभक द्वारा नाश भऽ जायत।

अध्याय 55

1. आ तकर बाद दिनक मुखिया पश्चाताप क' कहलनि जे, हम व्यर्थ मे पृथ्वी पर रहनिहार सभ कैँ नष्ट क' देलहुँ।'
2. आ ओ अपन महान नामक शपथ लेलनि: 'आब सँ हम पृथ्वी पर रहनिहार सभ कैँ एहन नहि करब, आ स्वर्ग मे एकटा चिन्ह लगा देब, आ ई हमरा आ हुनका सभक बीच सदाक लेल सद्विश्वासक प्रतिज्ञा होयत, जाबत धरि स्वर्ग पृथ्वी सँ ऊपर रहत।' आ ई हमर आज्ञाक अनुरूप अछि।'
3. जखन हम एहि कारणेँ कष्ट आ पीड़ाक दिन स्वर्गदूत सभक हाथ सँ पकड़बाक इच्छा राखब तखन हम अपन दंड आ अपन क्रोध हुनका सभ पर टिकब, आत्मा सभक प्रभु परमेश् वर कहैत छथि।
4. अहाँ सभ पराक्रमी राजा सभ जे पृथ्वी पर रहैत छी, अहाँ सभ कैँ हमर चुनल गेल कैँ देखय पड़त जे कोना ओ महिमाक सिंहासन पर बैसल छथि आ अजाज़ेल, आ ओकर सभ संगी आ अपन सभ सेना कैँ आत् मा सभक प्रभुक नाम पर न्याय करैत छथि।'

अध्याय 56

1. हम ओतय दंडक स् वर्गदूत सभक सेना कैँ जा रहल देखलहुँ, आ ओ सभ कोड़ा आ लोहा आ कांस्यक जंजीर पकड़ने छल।
2. आ हम हमरा संग गेल शान्तिक दूत सँ पुछलियनि, 'ई सभ प्रकोप पकड़निहार केकरा लग जा रहल छथि?'
3. ओ हमरा कहलनि: 'अपन चुनल आ प्रियजन कैँ, जाहि सँ ओ सभ घाटीक खाईक खाई मे फेकि जाय।
4. तखन ओ घाटी हुनका सभक चुनल आ प्रिय लोक सभ सँ भरल रहत, आ हुनका सभक जीवनक दिन समाप्त भ' जेतनि,

आ हुनका सभक भटकबाक दिनक गणना तहिया सँ नहि कयल जायत।
5. आ ओहि दिन मे स्वर्गदूत सभ घुरि क' आबि जेताह, आ पूब दिस पार्थी आ मादी पर फेकि देताह: राजा सभ कें भड़काओत, जाहि सँ हुनका सभ पर अशांतिक आत्मा आबि जायत, आ हुनका सभ कें अपन सिंहासन सँ जगौताह, जाहि सँ ओ सभ अपन खोह सँ सिंह जकाँ टूटि जायत, आ अपन झुंड मे भूखल भेड़िया जकाँ।
6. ओ सभ चढ़ि कऽ हुनकर चुनल लोक सभक देश कें पएर पर चलत, आ हुनकर चुनल लोक सभक देश हुनका सभक सोझाँ कुटनी आ राजमार्ग बनत।
7. मुदा हमर धर्मी लोकनिक नगर हुनका सभक घोड़ा सभक लेल बाधा बनत। ओ सभ आपस मे लड़य लागत, आ ओकर दहिना हाथ अपना पर मजबूत होयत, आ मनुक्ख अपन भाय कें नहि चिन्हत, ने बेटा कें अपन बाप-माय कें नहि चिन्हत, जाबत धरि ओकर वध सँ लाशक संख्या नहि होयत, आ ओकर सजा व्यर्थ नहि होयत।
8. ओहि दिन मे पाताल अपन जबड़ा खोलत, आ ओहि मे निगल जायत, आ ओकर विनाश समाप्त भ' जायत। चुनल लोकक सान्निध्य मे पापी सभ कें सीन खा जायत।'

अध्याय 57

1. एकर बाद हम देखलहुँ जे गाड़ी सभक एकटा आओर सेना आ ओहि पर सवार लोक सभ पूरब आ पश्चिम दिस सँ दक्षिण दिस हवा मे आबि रहल छल।
2. जखन हुनका लोकनिक गाड़ीक आवाज सुनाई पड़लनि आ जखन ई उथल-पुथल भेल तखन स्वर्ग सँ पवित्र लोकनि एकरा टिप्पणी कयलनि आ पृथ्वीक खंभा सभ अपन स्थान सँ हटि गेल आ आकाशक एक छोर सँ दोसर छोर धरि एकर आवाज एकहि दिन मे सुनल गेल।
3. ओ सभ खसि कऽ आत् मा सभक प्रभुक आराधना करत। आ ई दोसर दृष्टान्तक अंत अछि।

अध्याय 58

1. हम तेसर दृष्टान्त धर्मात्मा आ चुनल लोक सभक विषय मे कहय लगलहुँ।
2. धन्य छी अहाँ सभ, अहाँ सभ धर्मी आ चुनल लोक, किएक तँ अहाँक भाग्य महिमामंडित होयत।
3. आ धर्मी लोकनि सूर्यक इजोत मे रहताह। आ चुनल गेल लोक सभ अनन्त जीवनक इजोत मे: ओकर जीवनक दिन अंतहीन होयत, आ पवित्र लोकक दिन अनगिनत होयत।
4. आ ओ सभ प्रकाशक खोज करत आ आत् मा सभक प्रभुक संग धार्मिकता पाओत, अनन्त प्रभुक नाम सँ धर्मी लोकनि कें शान्ति होयत।
5. एकर बाद स्वर्ग मे पवित्र लोक कें कहल जायत जे ओ सभ धर्मक रहस्य, विश्वासक धरोहर कें ताकय।
6. आ एकटा एहन इजोत होयत जे कहियो समाप्त नहि होयत, आ दिनक सीमा धरि ओ सभ नहि आओत, कारण पहिने अन्हार नष्ट भ' गेल होयत, आ आत्मा सभक प्रभुक सोझाँ इजोत स्थापित भ' जायत, आ आत्मा सभक प्रभुक समक्ष सोझताक इजोत सदाक लेल स्थापित भ' जायत।

अध्याय 59

1. ओहि समय मे हमर आँखि बिजली, आ इजोतक रहस्य देखैत छल, आ ओ सभ जे न्याय करैत अछि, तकरा ओ सभ आशीष वा अभिशाप लेल हल्लुक भ' जाइत छल जेना आत्मा सभक प्रभु चाहैत छथि।
2. ओतहि हम गरजबाक रहस्य देखलहुँ, आ कोना जखन ऊपर आकाश मे गुंजायमान होइत अछि तखन ओकर आवाज सुनबा मे अबैत अछि, आ ओ हमरा पृथ्वी पर निष्पादित न्याय कें देखबा लेल बाध्य कयलनि, चाहे ओ कल्याण आ आशीर्वादक लेल हो, वा आत्मा सभक प्रभुक वचनक अनुसार अभिशापक लेल।
3. आ तकर बाद हमरा इजोत आ बिजलीक सभ रहस्य देखाओल गेल, आ ओ आशीर्वाद आ तृप्ति लेल हल्लुक भ' जाइत अछि।

अध्याय 60

1. पाँच सय वर्ष मे, सातम मास मे, हनोकक जीवन मे मासक चौदहम दिन। ओहि दृष्टान्त मे हम देखलहुँ जे कोना एकटा प्रबल भूकम्प आकाशक आकाश कें काँपि देलक आ परमात्माक सेना आ स्वर्गदूत सभ, हजार आ दस हजार गुना दस हजार, बहुत बेचैनी सँ परेशान भ' गेल।
2. दिनक मुखिया अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल छलाह आ स्वर्गदूत आ धर्मी लोकनि हुनका चारू कात ठाढ़ छलाह।
3. आ एकटा पैघ काँप हमरा पकड़ि लेलक, आ भय हमरा पकड़ि लेलक, आ हमर कमर छोड़ि देलक, आ हमर लगाम घुलि गेल, आ हम मुँह पर खसि पड़लहुँ।
4. तखन माइकल पवित्र लोक सभक बीच सँ एकटा आओर स् वर्गदूत पठौलनि आ ओ हमरा जिया कऽ उठौलनि, आ जखन ओ हमरा उठौलनि तखन हमर आत् मा घुरि गेलाह। कारण, हम एहि सेनाक दृष्टि आ आकाशक हंगामा आ काँप नहि सहि सकलहुँ। माइकल हमरा कहलथिन, 'अहाँ एहन दर्शन सँ किएक परेशान छी? आइ धरि हुनक दयाक दिन चलैत रहल; आ पृथ्वी पर रहनिहार लोकक प्रति दयालु आ दीर्घधीर रहलाह अछि।
5. जखन ओ दिन आओत, आ सामर्थ् य, दंड आ न्याय आत्माक प्रभु, जे धर्म-नियमक आराधना नहि करैत छथि, आ जे सभ धार्मिक न्याय कें अस्वीकार करैत छथि, आ जे हुनकर नाम व्यर्थ लैत छथि, हुनका लेल तैयार कयलनि अछि--ओ दिन तैयार कयल गेल अछि, चुनल लोक सभक लेल एकटा वाचा, मुदा पापी सभक लेल एकटा जिज्ञासा।
6. जखन आत्माक प्रभुक दण्ड हुनका सभ पर रहत तखन ओ एहि लेल रहत जे आत्मा सभक प्रभुक दण्ड नहि आबय, व्यर्थ मे, आ ओ बच्चा सभ कें मायक संग आ बच्चा सभ कें पिताक संग मारि देत। तकर बाद हुनकर दया आ धैर्यक अनुसार न्याय होयत।'
7. ओहि दिन दू टा राक्षस अलग भ' गेल, लेवियथन नामक एकटा मादा राक्षस, जे जलक फव्वारा पर समुद्रक खाई मे रहय।

.

9. हम दोसर स्वर्गदूत सँ विनती केलहुँ जे ओ हमरा ओहि राक्षस सभक पराक्रम देखाबथि जे कोना ओ सभ एक दिन अलग भ' गेल आ एकटा समुद्रक खाई मे आ दोसर जंगलक शुष्क भूमि मे फेकि देल गेल।

10. ओ हमरा कहलथिन, 'हे मनुष्य-पुत्र, एतहि मे अहाँ ई जानय चाहैत छी जे की नुकायल अछि।'
11. आ दोसर स् वर्गदूत जे हमरा संग गेलाह आ हमरा जे नुकायल छल से देखौलनि, ओ हमरा कहलनि जे स्वर्ग मे ऊँच आ पृथ्वीक नीचाँ गहींर मे, आकाशक छोर पर आ आकाशक नींव पर की पहिल आ अंतिम अछि।
12. हवाक कोठली, हवाक विभाजन कोना होइत अछि, कोना तौलल जाइत अछि, आ हवाक द्वारक गणना कोना होइत अछि, प्रत्येक हवाक शक्ति आ चानक इजोतक शक्ति आ उचित शक्तिक अनुसार, आ तारा सभक विभाजन ओकर नामक अनुसार आ सभ विभाजन कोना बँटल अछि।
13. आ ओहि ठामक अनुसार गरजैत अछि, आ बिजलीक बीच जे किछु विभाजन होइत अछि जे ओ हल्लुक भ' जाय, आ ओकर सेना जे ओ सभ एके बेर आज्ञा मान'।
14. कारण, गरजबाक विश्रामक स्थान होइत छैक जे ओकरा अपन ध्वनिक प्रतीक्षा मे राखल जाइत छैक। आ गरज आ बिजली अविभाज्य अछि, आ भले एक आ अविभाजित नहि हो, मुदा दुनू आत्माक माध्यमे एक संग जाइत अछि आ अलग नहि होइत अछि |
15. कारण जखन बिजली हल्लुक होइत अछि तखन गरज अपन आवाज निकालैत अछि, आ आत्मा पीलक समय मे विराम जबरदस्ती करैत अछि, आ दुनू मे बराबर बँटि जाइत अछि। कारण, ओकर सभक खजाना बालु जकाँ होइत छैक, आ ओकरा सभ मे सँ एक-एकटा केँ जेना-तेना लगाम सँ पकड़ल जाइत छैक, आ आत्माक शक्ति सँ पाछू घुमाओल जाइत छैक आ पृथ्वीक अनेक भागक अनुसार आगू धकेलि देल जाइत छैक |
16. समुद्रक आत्मा पुरुष आ बलवान होइत अछि, आ अपन शक्तिक पराक्रमक अनुसार ओकरा लगाम सँ पाछू खींचैत अछि, आ तहिना आगू धकेलि जाइत अछि आ पृथ्वीक सभ पहाड़क बीच छिड़िया जाइत अछि।
17. आ ठंढाक आत्मा ओकर अपन स्वर्गदूत अछि आ ओला केर आत्मा नीक स्वर्गदूत अछि।
18. बर्फक आत्मा ओकर शक्तिक कारणेँ ओकर कोठली सभ छोड़ि देलक--ओहि मे एकटा विशेष आत्मा छैक, आ ओहि मे सँ जे चढ़ैत अछि से धुँआ जकाँ अछि, आ ओकर नाम ठंढा अछि।
19. आ धुंधक आत्मा ओकरा सभक कोठली मे एकजुट नहि होइत छैक, मुदा ओकर एकटा विशेष कोठली छैक। कारण, इजोत आ अन्हार मे, जाड़ आ ग्रीष्म मे एकर मार्ग गौरवशाली होइत छैक आ ओकर कोठली मे एकटा स् वर्गदूत अछि।
20. ओसक आत् मा आकाशक छोर पर अपन निवास करैत अछि आ बरखाक कोठली सभसँ जुड़ल अछि आ जाड़ आ गर्मीमे ओकर मार्ग होइत अछि आ ओकर मेघ आ धुंधक मेघ जुड़ल अछि आ एक दोसरकेँ दैत अछि।
21. जखन बरखाक आत्मा ओकर कोठलीसँ निकलैत अछि तँ स् वर्गदूत सभ आबि कऽ कोठली खोलि ओकरा बाहर लऽ जाइत अछि आ जखन ओ समस्त धरती पर पसरि जाइत अछि तँ ओ पृथ्वी पर पानिसँ एक भऽ जाइत अछि। आ जखन कखनो पृथ्वी पर पानि सँ एक भ ' जाइत अछि | . .
22. किएक तँ पानि पृथ् वी पर रहनिहार सभक लेल अछि। कारण, ई सभ पृथ् वीक लेल परमेश् वरक पोषण अछि जे स् वर्ग मे छथि।
23. आ ई सभ हम धर्मी लोकनिक बगीचा दिस देखलहुँ।
24. आ हमरा संग जे शान्तिक दूत हमरा कहलनि: 'ई दुनू राक्षस, जे भगवानक महानताक अनुरूप तैयार कयल गेल अछि, भोजन करत . . .

अध्याय 61

1. हम ओहि दिन मे देखलहुँ जे ओहि स्वर्गदूत सभ केँ कतेक नमहर डोरी देल गेल छल, आ ओ सभ पाँखि लऽ कऽ उड़ि गेल आ उत्तर दिस बढ़ि गेल।
2. हम स्वर्गदूत सँ पुछलियनि, 'ओ स्वर्गदूत सभ एहि डोरी सभ केँ लऽ कऽ किएक चलि गेलाह? ओ हमरा कहलथिन, 'ओ सभ नापबऽ चलि गेल अछि।'
3. हमरा संग जे स्वर्गदूत हमरा संग गेल छलाह, ओ हमरा कहलनि: 'ई सभ धर्मी लोकनिक नाप, आ धर्मी लोकनिक रस्सी धर्मी लोकनि लग आनत, जाहि सँ ओ सभ अपना केँ आत्मा सभक प्रभुक नाम पर अनन्त काल धरि ठाढ़ रहथि।
4. चुनल गेल लोक चुनल लोकक संग रहय लागत, आ ओ सभ मापदंड अछि जे विश्वास केँ देल जायत, आ जे धर्म केँ मजबूत करत।
5. आ ई माप पृथ्वीक गहराईक सभ रहस्य केँ उजागर करत, आ जे मरुभूमि द्वारा नष्ट कयल गेल अछि, आ जे जानवर सभ खा गेल अछि, आ जेकरा समुद्रक माछ खा गेल अछि, जाहि सँ ओ सभ घुरि कऽ स्वयं रहि सकय, चुनल गेल व्यक्तिक दिन; किएक तँ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष ककरो नाश नहि होयत, आ ककरो नाश नहि भऽ सकैत अछि।
6. ऊपर स्वर्ग मे रहनिहार सभ केँ एकटा आज्ञा आ सामर्थ् य आ एक आवाज आ एकटा इजोत भेटलनि जे आगि जकाँ भेटैत छल।
7. आ ओहि एक केँ अपन पहिल वचन सँ आशीर्वाद देलनि, आ बुद्धि सँ प्रशंसा आ प्रशंसा केलनि, आ ओ सभ वाचन आ जीवनक आत्मा मे बुद्धिमान छलाह।
8. आ आत्मा सभक प्रभु चुनल गेल लोक केँ महिमाक सिंहासन पर बैसा देलनि। ओ स्वर्ग मे पवित्र लोकक सभ काजक न्याय करत, आ तराजू मे ओकर सभक काज तौलत।
9. जखन ओ अपन मुँह उठौताह, आत् मा सभक प्रभुक नामक वचनक अनुसार हुनका सभक गुप्त मार्गक न्याय करबाक लेल, आ आत् मा सभक प्रभुक धार्मिक न्यायक मार्गक अनुसार हुनका सभक बाट पर न्याय करबाक लेल, तखन सभ एक स्वर मे बाजत आ आशीर्वाद देताह, आ आत् मा सभक प्रभुक नामक महिमा आ स्तुति आ पवित्र करताह।
10. ओ आकाशक सभ सेना आ ऊपरक सभ पवित्र लोक आ परमेश् वरक सेना, करुब, सेराफीन आ ओफानीन, आ सभ शक्तिक स् वर्गदूत, आ रियासतक सभ स् वर्गदूत, आ चुनल गेल लोक आ पृथ् वी पर आ पानि पर आन सामर्थ् य सभ केँ बजौताह।
11. ओहि दिन एक आवाज उठत, आ विश्वासक आत् मा, बुद्धिक आत् मा, धैर्यक आत् मा, दयाक आत् मा, आ न् याय आ शान् ति आ भलाईक आत् मा मे आशीष आ महिमा आ उदात्त करताह आ सभ एक स्वर मे कहताह: "धन्य छथि ओ, आ आत् मा सभक प्रभुक नाम सदाक लेल धन्य होथि।" सदैव।"
12. जे सभ स्वर्ग मे ऊपर नहि सुतल अछि से हुनका आशीर्वाद देतनि, जे सभ पवित्र लोक स्वर्ग मे छथि, आ जीवनक बगीचा मे रहनिहार सभ चुनल लोक हुनका आशीर्वाद देताह, आ प्रकाशक

प्रत्येक आत्मा जे अहाँक धन्य नामक आशीर्वाद, महिमा, आ स्तुति आ पवित्र करबा मे सक्षम अछि, आ सभ शरीर अहाँक नामक महिमा आ आशीर्वाद अनादि काल धरि असीम रूप सँ करत।
13. कारण, आत् मा सभक प्रभुक दया बहुत पैघ अछि, आ ओ धैर्यवान छथि, आ अपन सभ काज आ सभ किछु जे ओ सृष्टि केने छथि, ओ धर्मी आ चुनल लोक सभ केँ प्रगट कयलनि अछि, आत् मा सभक प्रभुक नाम सँ।

अध्याय 62

.
2. आ आत् मा सभक प्रभु हुनका अपन महिमाक सिंहासन पर बैसा देलनि, आ हुनका पर धार्मिकताक आत् मा उझलि गेलनि, आ हुनकर मुँहक वचन सभ पापी केँ मारि दैत छनि, आ सभ अधर्मी हुनकर मुँहक सोझाँ सँ नष्ट भ’ जाइत छथि।
3. ओहि दिन सभ राजा आ पराक्रमी, आ उदात्त लोक आ पृथ्वी केँ पकड़निहार सभ ठाढ़ भ’ जेताह, आ ओ सभ देखताह आ चिन्हत जे ओ कोना अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल छथि, आ हुनका समक्ष धर्मक न्याय कयल जाइत छनि, आ हुनका समक्ष कोनो झूठ बाजल नहि जाइत छनि।
4. तखन ओकरा सभ पर ओहिना पीड़ा होयत जेना प्रसव मे स्त्री पर, आ ओकरा प्रसव मे पीड़ा होयत, जखन ओकर बच्चा गर्भक मुँह मे प्रवेश करत, आ ओकरा प्रसव मे पीड़ा होयत।
5. एक भाग दोसर दिस तकत, आ आतंकित भ' जायत, आ चेहरा नीचाँ भ' जायत, आ पीड़ा ओकरा सभ केँ पकड़ि लेत, जखन ओ सभ ओहि मनुष्यक पुत्र केँ अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल देखत।
6. राजा आ पराक्रमी आ पृथ्वी पर जे सभ अछि, ओकरा आशीर्वाद आ महिमा आ प्रशंसा करत जे सभ पर राज करैत अछि, जे नुकायल छल।
7. किएक तँ शुरूए सँ मनुष् यक पुत्र नुकायल छलाह, आ परमेश् वर हुनका अपन सामर्थ् यक सोझाँ सुरक्षित रखलनि, आ चुनल लोक सभक समक्ष हुनका प्रगट कयलनि।
8. चुनल आ पवित्र लोकक मंडली बोओल जायत, आ ओहि दिन सभ चुनल गेल लोक हुनका सोझाँ ठाढ़ भ’ जेताह।
9. आ सभ राजा आ पराक्रमी आ उदात्त लोक आ पृथ् वी पर राज करयवला सभ हुनका सामने मुँह पर खसि पड़ताह, आ पूजा करताह आ ओहि मनुष् यक पुत्र पर अपन आशा राखताह, आ हुनका सँ विनती करताह आ हुनकर हाथ सँ दयाक विनती करताह।
10. तइयो ओ आत् मा सभक प्रभु ओकरा सभ केँ एतेक दबा देत जे ओ सभ जल्दबाजी मे हुनकर सान्निध्य सँ बाहर निकलत, आ ओकर सभक चेहरा लाज सँ भरल रहत, आ ओकर सभक चेहरा पर अन्हार आओर गहींर भ' जायत।

.
12. ओ सभ धर्मी आ हुनकर चुनल लोकक लेल तमाशा बनत, ओ सभ ओकरा सभ पर आनन्दित होयत, किएक तँ आत् मा सभक प्रभुक क्रोध ओकरा सभ पर टिकल अछि, आ ओकर तलवार ओकरा सभक खून सँ नशा मे धुत्त अछि।
13. ओहि दिन धर्मी आ चुनल लोक सभक उद्धार होयत, आ तहिया सँ ओ सभ पापी आ अधर्मी सभक मुँह कहियो नहि देखत।
14. आत् मा सभक प्रभु हुनका सभक ऊपर रहताह, आ ओहि मनुष् यक पुत्रक संग ओ सभ भोजन करताह, आ लेटत आ उठि जेताह।
15. धर्मी आ चुनल लोक सभ पृथ् वी सँ उठि जेताह, आ उदास चेहरा नहि रहि गेलाह। ओ सभ महिमाक वस्त्र पहिरने हेताह।
16. आ ई सभ आत् मा सभक प्रभुक जीवनक वस्त्र होयत, आ अहाँक वस्त्र बूढ़ नहि होयत, आ ने अहाँक महिमा आत् मा सभक प्रभुक सोझाँ चलि जायत।

अध्याय 63

.
२.
3. आ हर गुप्त बात मे अहाँक शक्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी शानदार अछि, आ अहाँक महिमा अनन्त काल धरि: अहाँक सभ रहस्य गहींर आ असंख्य अछि, आ अहाँक धार्मिकता गणना सँ परे अछि।
4. हम सभ आब ई सीखलहुँ जे हमरा सभ केँ महिमा करबाक चाही, आ राजा सभक प्रभु आ सभ राजा पर राजाक आशीर्वाद करबाक चाही।'
5. आ ओ सभ कहताह: ‘काश, हमरा सभ केँ महिमा करबाक आ धन्यवाद देबाक लेल विश्राम भेटैत, आ हुनकर महिमाक समक्ष अपन विश्वास केँ स्वीकार करबाक लेल!
6. आब हम सभ कनि विश्रामक लेल तरसैत छी मुदा ओकरा नहि पाबि लैत छी, हम सभ कठोरता सँ पालन करैत छी आ ओकरा नहि प्राप्त करैत छी, आ हमरा सभक सोझाँ सँ इजोत गायब भऽ गेल अछि, आ अन्हार हमरा सभक निवास स्थान अछि अनन्त काल धरि।
7. कारण, हम सभ हुनका सँ पहिने विश् वास नहि केलहुँ, आ ने आत् मा सभक प्रभुक नामक महिमा केलहुँ, आ ने अपन प्रभुक महिमा केलहुँ, मुदा हमर सभक आशा अपन राज्यक राजदण्ड मे छल, आ अपन महिमा मे।
8. आ हमरा सभक दुख आ क्लेशक दिन ओ हमरा सभ केँ नहि बचाबैत छथि, आ हमरा सभ केँ ई स्वीकार करबाक लेल कोनो आराम नहि भेटैत अछि, जे हमर प्रभु अपन सभ काज मे, आ अपन निर्णय आ अपन न्याय मे सत्य छथि, आ हुनकर निर्णय मे व्यक्तिक कोनो आदर नहि होइत छनि।
9. हम सभ अपन काजक कारणेँ हुनकर मुँह सँ चलि जाइत छी, आ हमर सभक पापक हिसाब धार्मिकता मे कयल जाइत अछि।'
10. आब ओ सभ अपना आप केँ कहत जे, ‘हमर सभक प्राण अधर्मक लाभ सँ भरल अछि, मुदा ई हमरा सभ केँ ओकर बीच सँ सीतानक भार मे उतरबा सँ नहि रोकैत अछि।’
11. तकर बाद हुनका लोकनिक चेहरा अन्हार सँ भरल रहत, आ ओहि मनुष्यक पुत्रक समक्ष लाज भ’ जेतनि, आ हुनका सभक सोझाँ सँ भगाओल जायत, आ तलवार हुनका सभक बीच मे हुनकर मुँहक सोझाँ रहत।
12. आत्माक प्रभु एहि तरहेँ कहलनि, 'आत्माक प्रभुक समक्ष पराक्रमी आ राजा आ उदात्त लोक आ पृथ्वीक मालिकक संबंध मे ई नियम आ न्याय अछि।'

अध्याय 64

1. आ अन्य रूप हम ओहि स्थान पर नुकायल देखलहुँ।
2. हम स्वर्गदूतक आवाज सुनलहुँ जे ई सभ स् वर्गदूत छथि जे पृथ्वी पर उतरि गेलाह आ मनुष्यक संतान केँ नुकायल बात केँ प्रकट कयलनि आ मनुष्यक संतान केँ पाप करबाक लेल बहका देलनि।'

अध्याय 65

1. ओहि समय मे नूह धरती केँ देखलनि जे ओ डूबि गेल छल आ ओकर विनाश नजदीक आबि गेल छल।
2. ओतय सँ उठि कऽ पृथ्वीक छोर पर गेलाह आ अपन दादा हनोक केँ जोर-जोर सँ चिचिया उठलनि, आ नूह तीन बेर कटु स्वर मे कहलथिन: हमर बात सुनू, हमर बात सुनू, हमर बात सुनू।'
3. हम हुनका कहलियनि, 'हमरा कहू जे पृथ्वी पर की खसि रहल अछि जे पृथ्वी एहन दुष्ट दुर्दशा मे अछि आ हिलैत अछि, कहीं हम ओकरा संग नष्ट नहि भ' जायब?'
4. तखन पृथ्वी पर बहुत हंगामा भेल आ स्वर्ग सँ आवाज सुनाई पड़ल आ हम मुँह पर खसि पड़लहुँ।
5. हमर दादा हनोक आबि हमरा लग ठाढ़ भ' गेलाह आ हमरा कहलनि, 'अहाँ हमरा कटु चीत्कार आ कानैत किएक पुकारलहुँ?
6. आ पृथ्वी पर रहनिहार सभक विषय मे प्रभुक सान्निध्य सँ एकटा आज्ञा निकलल अछि जे ओकर विनाश पूरा भ' गेल अछि किएक त' ओ सभ स्वर्गदूत सभक सभ रहस्य, शैतान सभक सभ हिंसा आ ओकर सभ शक्ति--अत्यन्त गुप्त--आ जादू-टोना करयवला सभक सभ शक्ति, आ जादू-टोना करबाक सामर्थ्य आ समस्त पृथ्वीक लेल पिघलल मूर्ति बनेनिहार सभक शक्ति केँ सीखि लेलक।
7. आ पृथ्वीक धूरा सँ चानी कोना बनैत अछि, आ कोना कोमल धातुक उत्पत्ति पृथ्वी मे होइत अछि।
8. कारण, सीसा आ टीन पहिने जकाँ पृथ्वी सँ नहि बनैत अछि, ई एकटा फव्वारा थिक जे एकरा उत्पन्न करैत अछि, आ ओहि मे एकटा स्वर्गदूत ठाढ़ रहैत अछि, आ ओ स्वर्गदूत प्रमुख अछि।'
.
.
11. आ ई सभ--ओकरा सभ केँ सदाक लेल पश्चाताप करबाक कोनो स्थान नहि छैक, किएक तँ ओ सभ ओकरा सभ केँ जे नुकायल छलैक से देखा देलक, आ ओ सभ शापित अछि, मुदा जँ अहाँ, हमर बेटा, आत् मा सभक प्रभु जनैत छथि जे अहाँ शुद्ध छी, आ रहस्यक विषय मे एहि अपमान सँ निर्दोष छी।
12. ओ तोहर नाम पवित्र लोक मे रहबाक लेल निर्धारित केने छथि, आ पृथ्वी पर रहनिहार लोक मे अहाँ केँ सुरक्षित रखताह, आ अहाँक धर्मी वंश केँ राजा आ पैघ सम्मान दुनू लेल नियत कयलनि अछि, आ अहाँक वंश सँ धर्मी आ पवित्र लोकक एकटा फव्वारा अनन्त काल धरि निकलत।

अध्याय 66

1. आ तकर बाद ओ हमरा दंडक स् वर्गदूत सभ देखौलनि जे आबि कऽ पृथ्वी पर नीचाँक पानिक सभ शक्ति केँ छोड़बाक लेल तैयार छथि जाहि सँ पृथ्वी पर रहनिहार आ रहनिहार सभ पर न्याय आ विनाश आनि सकथि।
2. आत् मा सभक प्रभु ओहि स् वर्गदूत सभ केँ आज्ञा देलथिन जे ओ सभ पानि केँ नहि बढ़ाबथि, बल् कि ओकरा सभ केँ रोकथि। किएक तँ ओ स् वर्गदूत सभ पानिक सामर्थ् य सभ पर काज करैत छलाह।
3. हम हनोकक सान्निध्य सँ दूर भ' गेलहुँ।

अध्याय 67

1. आ ओहि दिन मे परमेश् वरक वचन हमरा लग आयल, आ ओ हमरा कहलनि: 'नूह, अहाँक भाग्य हमरा सोझाँ आबि गेल अछि, बहुत रास निर्दोष, बहुत प्रेम आ सोझ।
2. आ आब स्वर्गदूत सभ लकड़ीक भवन बना रहल छथि, आ जखन ओ सभ ओ काज पूरा क' लेताह तखन हम ओहि पर अपन हाथ राखि ओकरा संरक्षित करब, आ ओहि मे सँ जीवनक बीज निकलत, आ एकटा परिवर्तन आबि जायत जाहि सँ पृथ्वी बिना निवासीक नहि रहि जायत।
3. हम तोहर वंश केँ हमरा सोझाँ अनन्त काल धरि व्रत राखब आ तोहर संग रहनिहार सभ केँ पसारि देब।
4. आ ओ ओहि स् वर्गदूत सभ केँ जे अधर्मक प्रदर्शन केने छथि, ओहि जरैत घाटी मे जे हमर दादा हनोक हमरा पहिने पश्चिम मे सोना-चानी आ लोहा आ कोमल धातु आ टीनक पहाड़क बीच देखा देने छलाह।
5. हम ओहि घाटी केँ देखलहुँ जाहि मे पानि मे बहुत आकुंचन आ आकुंचन भेल।
6. जखन ई सभ भेल, ओहि आगि सन पिघलल धातु सँ आ ओहि स्थान पर ओकर आकुंचन सँ, गंधकक गंध निकलल, आ ओ ओहि पानि सँ जुड़ल छल, आ ओ स्वर्गदूत सभक घाटी जे मनुक्ख केँ भटका देने छल, ओहि देशक नीचाँ जरि गेल।
7. ओकर घाटी मे आगि केर धार निकलैत अछि, जतय एहि स्वर्गदूत सभ केँ सजा देल जाइत छैक जे पृथ्वी पर रहनिहार लोक केँ भटका देने छल।
8. मुदा ओ पानि ओहि दिन मे राजा आ पराक्रमी आ उदात्त लोक आ पृथ् वी पर रहनिहार सभक लेल शरीरक चंगाईक काज करत, मुदा आत् माक दंडक लेल। आब ओकर सभक आत् मा काम-वासना सँ भरल अछि, जाहि सँ ओ सभ अपन शरीर मे दंडित भऽ सकय, किएक तँ ओ सभ आत् मा सभक प्रभु केँ अस् वीकार कऽ रहल अछि आ सभ दिन अपन दंड देखि रहल अछि, मुदा तइयो हुनकर नाम पर विश् वास नहि करैत अछि।
9. आ जेना-जेना हुनका लोकनिक शरीरक जरब तीव्र होइत जायत, तदनुरूप परिवर्तन हुनका लोकनिक भावना मे सदाक लेल होयत; किएक तँ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष कियो बेकार वचन नहि बाजत।
10. कारण, न्याय हुनका सभ पर आओत, किएक तँ ओ सभ अपन शरीरक वासना पर विश् वास करैत छथि आ प्रभुक आत् मा केँ अस्वीकार करैत छथि।
11. आ ओही पानि मे ओहि दिन मे परिवर्तन होयत। कारण जखन ओहि पानि मे ओहि स्वर्गदूत केँ सजा देल जायत तखन ई जल-झरना सभक तापमान बदलि जायत आ जखन स्वर्गदूत सभ चढ़त तखन झरना सभक ई पानि बदलि ठंढा भ' जायत।

12. हम माइकल कैँ उत्तर दैत सुनलहुँ जे, 'ई न् याय जाहि सँ स् वर्गदूत सभक न् याय कयल गेल अछि, से राजा आ पराक्रमी सभक गवाही अछि जे पृथ्वी पर अछि।'
13. किएक तँ ई न्यायक पानि राजा सभक शरीर आ शरीरक वासना कैँ ठीक करबाक काज करैत अछि। तैँ ओ सभ नहि देखत आ नहि मानत जे ओ पानि बदलि कऽ आगि बनि जायत जे सदाक लेल जरैत रहत।

अध्याय 68

1. तकर बाद हमर दादा हनोक हमरा ओहि दृष्टान्त मे जे किछु रहस्य देल गेल छल, ओकर शिक्षा देलनि आ ओ हमरा लेल दृष्टान्तक पुस्तकक वचन मे एक ठाम राखि देलनि।
2. ओहि दिन माइकल राफेल कैँ उत्तर देलथिन आ कहलथिन: 'गुप्त सभक न्याय, स् वर्गदूत सभक न्यायक कठोरताक कारणेँ आत् माक शक्ति हमरा परिवहन करैत अछि आ काँपि दैत अछि।
3. माइकल फेर उत्तर देलथिन आ राफेल कैँ कहलथिन, 'ओ के अछि जकर हृदय एहि विषय मे कोमल नहि अछि आ जकर बागडोर एहि तरहेँ बाहर निकालनिहार सभक कारणेँ ओकरा सभ पर जे न्यायक वचन आयल अछि, ताहि सँ परेशान नहि अछि?'
4. जखन ओ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष ठाढ़ भेलाह तँ माइकल राफेल कैँ एना कहलथिन, 'हम हुनका सभक भाग प्रभुक नजरि मे नहि लेब। कारण, आत् मा सभक प्रभु हुनका सभ पर क्रोधित भऽ गेल छथि, किएक तँ ओ सभ एना करैत छथि जेना ओ सभ प्रभु छथि। तैँ जे किछु नुकायल अछि से हुनका सभ पर अनन्त काल धरि आबि जायत। किएक तँ एहि मे ने स् वर्गदूत आ ने मनुष् य कैँ अपन हिस्सा भेटतैक, बल् कि असगरे ओकरा सभ कैँ अनन्त काल धरि अपन न् याय भेटलैक।'

अध्याय 69

1. एहि न्यायक बाद ओ सभ ओकरा सभ कैँ आतंकित करत आ काँपिओत, किएक तँ ओ सभ ई बात पृथ्वी पर रहनिहार सभ कैँ देखा देने अछि।
2. आ देखू ओहि स्वर्गदूत सभक नाम आ ई सभ ओकर सभक नाम अछि : ओहि मे पहिल समजाजा, दोसर आर्टकीफा आ तेसर आर्मेन, चारिम कोकाबेल, पाँचम टूराल, छठम रमजाल, सातम दंजाल, आठम नेकावेल, नवम बराकेल, दसम अज़ाज़ेल, एगारहम आर्मरोस, बारहवाँ बतरजल, तेरहम बुसासेजल, चौदहम हनानल, पन्द्रहम टूरेल, आ सोलहम सिमापेसील, सत्रहम जेट्रेल, अठारहम टूमाल, उन्नीसम टूरेल, बीसम रूमाल, एकैसम अज़ेज़ेल।
3. ई सभ हुनका सभक स् वर्गदूत आ नामक मुखिया सभ छथि, आ सैकड़ों-पचास आ दस-दस पर हुनका सभक प्रमुख छथि।
4. पहिल जेकोनक नाम: अर्थात् ओ जे परमेश् वरक सभ पुत्र सभ कैँ भटका देलक आ ओकरा सभ कैँ पृथ्वी पर उतारि देलक आ मनुष् यक बेटी सभक माध्यमे ओकरा सभ कैँ भटका देलक।
5. दोसरक नाम असबेल राखल गेल, ओ परमेश् वरक पवित्र पुत्र सभ कैँ दुष् ट सलाह देलक आ ओकरा सभ कैँ भटका देलक जे ओ सभ मनुष् यक बेटी सभ सँ अपन शरीर कैँ अशुद्ध कऽ देलक।
6. तेसरक नाम छल गदरेल: ओएह छथि जे मनुष्यक संतान कैँ मृत्युक सभटा प्रहार देखौलनि, आ ओ हव्वा कैँ भटका देलनि, आ मनुष्यक पुत्र कैँ मृत्युक हथियार देखौलनि, ढाल आ कोट, आ युद्धक लेल तलवार, आ मनुक्खक संतान कैँ मृत्युक सभटा शस्त्र।
7. ओकर हाथ सँ ओ सभ ओहि दिन सँ आ अनन्त काल धरि पृथ्वी पर रहनिहार लोक सभक विरुद्ध निकलल अछि।
8. चारिमक नाम पेनेमुए छल: ओ मनुष्यक सन्तान सभ कैँ कटु आ मीठ सिखबैत छलाह, आ हुनका सभक बुद्धिक सभ रहस्य सिखाबैत छलाह।
9. ओ मनुष्य कैँ स्याही आ कागज सँ लिखबाक शिक्षा देलनि, आ एहि सँ बहुतो लोक अनन्त काल सँ अनन्त काल धरि आ आइ धरि पाप केलनि।
10. कारण मनुष्य एहन उद्देश्य सँ नहि बनाओल गेल अछि जे कलम आ स्याही सँ अपन सद्विश्वास कैँ पुष्टि करय।
11. कारण, मनुष्य ठीक स् वर्गदूत जकाँ सृजित भेल अछि, जे ओ शुद्ध आ धर्मी रहय, आ सभ किछु नष्ट करयवला मृत्यु ओकरा सभ कैँ नहि पकड़ि सकैत छल, मुदा एहि सँ ओकर ज्ञानक कारणेँ ओ सभ नाश भ' रहल अछि, आ एहि शक्तिक द्वारा ई हमरा भस्म क' रहल अछि।
12. पाँचमक नाम कासदेजा छल: ई ओ छथि जे मनुष्यक संतान कैँ आत्मा आ राक्षसक सभटा दुष्ट प्रहार आ गर्भ मे भ्रूणक प्रहार देखौलनि, जाहि सँ ओ बीति जाय, आ आत्माक प्रहार सँ साँपक काटब आ दुपहरक गर्मी सँ जे प्रहार होइत अछि, जे नागक पुत्र नाम देल गेल अछि तबâà'ĕt।
13. ई काज अछि कासबेलक, जे शपथक प्रमुख छलाह, जे ओ पवित्र लोकनि कैँ महिमा मे ऊँच पर रहैत छलाह, आ ओकर नाम बिका अछि।

.

15. आ ई शपथक सामर्थ्य अछि, कारण ई शक्तिशाली आ मजबूत अछि, आ ओ ई शपथ अकाए माइकल के हाथ मे राखि देलनि।
16. आ ई सब एहि शपथक रहस्य अछि। . . ओकर शपथ सँ ओ सभ मजगूत भऽ गेल अछि: आ संसारक सृष्टि सँ पहिने स् वर्ग लटकल छल, आ सदा-सदा लेल।
17. आ ओहि माध्यमे पृथ्वीक नींव पानि पर भेल, आ पहाड़क गुप्त अवकाश सँ सुन्दर पानि निकलैत अछि, संसारक सृष्टि सँ अनन्त काल धरि।
18. आ ओहि शपथक द्वारा समुद्रक निर्माण भेल, आ ओकर नींव जकाँ ओकर क्रोधक समयक विरुद्ध बालु बनौलनि, आ ओ संसारक सृष्टि सँ अनन्त काल धरि ओकरा पार करबाक साहस नहि करैत अछि।
19. आ ओहि शपथक द्वारा गहींर कैँ तेज कयल जाइत अछि, आ अनन्त काल सँ अनन्त काल धरि अपन स्थान सँ नहि रहब आ नहि हिलैत अछि।
20. आ ओहि शपथक द्वारा सूर्य आ चन्द्रमा अपन मार्ग पूरा करैत अछि, आ अनन्त काल सँ अनन्त काल धरि अपन नियम सँ विचलित नहि होइत अछि।
21. आ ओहि शपथक द्वारा तारा सभ अपन मार्ग पूरा करैत अछि, आ ओ ओकरा सभक नाम सँ बजबैत छथि, आ ओ सभ हुनका अनन्त काल सँ अनन्त काल धरि उत्तर दैत छथि।

22. आ तहिना पानि, हवाक, आ सभ ज़ेफिरक आत्मा आ हवाक चारू कात सँ ओकर बाट।
23. ओतहि गरजबाक आवाज आ बिजलीक इजोत सुरक्षित अछि, आ ओला सभक कोठली आ ठंढाक कोठली, धुंधक कोठली आ बरखा आ ओसक कोठली सुरक्षित अछि।
24. ई सभ विश् वास करैत छथि आ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष धन् यवाद करैत छथि आ अपन समस्त सामर्थ् य सँ हुनकर महिमा करैत छथि, आ हुनकर सभक भोजन धन्यवादक हर काज मे होइत छनि।
25. ई शपथ हुनका सभ पर पराक्रमी अछि, आ एकर माध्यमे ओ सभ सुरक्षित अछि आ ओकर बाट सुरक्षित अछि, आ ओकर सभक मार्ग नष्ट नहि होइत अछि।
26. हुनका सभ मे बहुत आनन्द भेल, आ ओ सभ आशीर्वाद आ महिमा आ प्रशंसा कयलनि, किएक तँ ओहि मनुष् यक पुत्रक नाम हुनका सभ पर प्रगट कयल गेल छलनि।
27. ओ अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल, आ न्यायक रकम मनुष् यक पुत्र केँ देल गेल, आ ओ पापी सभ केँ दूर कऽ देलक आ पृथ्वी पर सँ नष्ट कऽ देलक, आ जे संसार केँ भटका देलक।
28. जंजीर सँ बान्हल जायत, आ ओकर विनाशक सभा-स्थल मे जेल मे बंद कयल जायत, आ ओकर सभ काज पृथ्वी पर सँ विलुप्त भ' जायत।
29. आब सँ कोनो नाशवश कोनो बात नहि होयत। कारण, ओ मनुष् य-पुत्र प्रकट भऽ गेल अछि, आ अपन महिमाक सिंहासन पर बैसल अछि, आ ओकर मुँहक सोझाँ सभटा दुष् टता समाप्त भऽ जायत, आ ओहि मनुष् य-पुत्रक वचन आगू बढ़ि कऽ आत् मा सभक प्रभुक समक्ष मजबूत भऽ जायत।

अध्याय 70

1. एकर बाद हुनकर जीवन काल मे पृथ्वी पर रहनिहार लोक मे सँ हुनकर नाम ओहि मनुष्यक पुत्र आ आत् मा सभक प्रभुक नाम पर ऊपर उठलनि।
2. ओ आत् माक रथ सभ पर ऊपर उठि गेलाह आ ओकर नाम ओकरा सभक बीच मे विलुप्त भ' गेलनि।
3. ओहि दिन सँ हम हुनका सभक बीच मे नहि गिनल गेलहुँ, आ ओ हमरा दुनू हवाक बीच, उत्तर आ पश्चिमक बीच मे राखि देलनि, जतय स् वर्गदूत सभ हमरा लेल चुनल आ धर्मी लोकक स्थान नापबाक लेल डोरी लऽ गेलाह।
4. ओतहि हम पहिल पिता आ धर्मी लोकनि केँ देखलहुँ जे शुरूए सँ ओहि स्थान पर रहैत छथि।

अध्याय 71

1. एकर बाद हमर आत् मा बदलि गेल, आ ओ स् वर्ग मे चढ़ि गेल। आगि के लौ पर पैर राखि रहल छल: ओकर वस्त्र उज्जर आ वस्त्र, आ ओकर चेहरा बर्फ जकाँ चमकि रहल छलैक।
2. हम आगि के दू टा धार देखलहुँ, आ ओहि आगि के इजोत हयासिन्थ जकाँ चमकैत छल, आ हम आत् मा सभक प्रभुक समक्ष मुँह पर खसि पड़लहुँ।
3. आ एकटा महास्वर्गदूत माइकल हमर दहिना हाथ पकड़ि लेलक, आ हमरा ऊपर उठा क' हमरा सभ रहस्य मे लऽ गेल, आ ओ हमरा धार्मिकताक सभ रहस्य देखौलनि।
4. ओ हमरा आकाशक छोरक सभटा रहस्य देखौलनि, आ सभ तारा सभक सभ कोठली आ सभटा ज्योतिष, जतय सँ ओ सभ पवित्र लोक सभक सोझाँ निकलैत अछि।
5. ओ हमर आत्मा केँ स्वर्गक स्वर्ग मे अनुवाद कयलनि, आ हम ओतय स्फटिक सँ बनल संरचना जकाँ देखलहुँ, आ ओहि स्फटिक सभक बीच मे जीवित आगि केर जीह।
6. हमर आत्मा ओहि पट्टी केँ देखलक जे ओहि घर केँ आगि सँ बान्हने छल, आ ओकर चारू कात जीवित आगि सँ भरल धार छल, आ ओ सभ ओहि घर केँ बान्हने छल।
7. चारू कात सेराफीन, करुब आ ओफानीन छल, आ ई सभ ओ सभ छथि जे सुतल नहि छथि, आ हुनकर महिमाक सिंहासनक रक्षा करैत छथि।
8. हम स् वर्गदूत सभ केँ देखलहुँ जे गिनती नहि कयल जा सकैत छल, हजार हजार आ दस हजार गुना दस हजार, ओहि घर केँ घेरने छल। माइकल, राफेल, जिब्राईल, फनुएल, आ आकाश सँ ऊपर जे पवित्र स् वर्गदूत छथि, ओहि घर मे जाउ आ बाहर जाउ।
9. ओ सभ ओहि घर सँ बाहर निकललाह, माइकल आ जिब्राईल, राफेल आ फनुएल, आ बहुतो पवित्र स् वर्गदूत अनगिनत।
10. आ ओकरा सभक संग दिनक सिर, ओकर माथ ऊन जकाँ उज्जर आ शुद्ध, आ ओकर वस्त्र अवर्णनीय।
11. हम मुँह पर खसि पड़लहुँ, आ हमर पूरा शरीर शिथिल भ' गेल, आ हमर आत्मा बदलि गेल। आ हम जोर-जोर सँ कानलहुँ, . . .शक्तिक भावनाक संग, आ धन्य आ महिमा आ प्रशंसित।
12. हमर मुँह सँ निकलल ई आशीर्वाद ओहि दिनक मुखियाक समक्ष नीक लागल।
13. ओ दिनक मुखिया माइकल आ जिब्राईल, राफेल आ फनुएल, हजारो दस हजार स्वर्गदूतक संग अयलाह।
14. ओ हमरा लग आबि अपन आवाज सँ हमरा अभिवादन कयलनि आ कहलनि, 'ई मनुष्यक पुत्र छथि जे धार्मिकताक लेल जन्म लेने छथि; धर्म ओकरा पर टिकल रहैत छैक, आ दिनक मुखियाक धर्म ओकरा नहि छोड़ैत छैक।'
15. ओ हमरा कहलनि, 'ओ अहाँ केँ आगामी संसारक नाम सँ शान्तिक घोषणा करैत छथि। किएक तँ संसारक सृष्टिसँ एहि ठामसँ शान्ति निकलल अछि, आ अहाँक लेल सेहो अनन्त काल धरि रहत।

.

17. आ एहि तरहेँ ओहि मनुष्यक पुत्रक संग दिनक लम्बाई होयत, आ धर्मी लोकनि केँ शान्ति आ सोझ बाट भेटतनि, आत् मा सभक प्रभुक नाम सँ अनन्त काल धरि।'

अध्याय 72

1. स्वर्गक प्रकाशक मार्गक पुस्तक, प्रत्येकक संबंध, अपन वर्ग, अपन प्रभुत्व आ ऋतुक अनुसार, अपन नाम आ उत्पत्ति स्थानक अनुसार, आ अपन मासक अनुसार, जे उरिएल, पवित्र स्वर्गदूत, जे हमरा संग छलाह, जे हुनकर मार्गदर्शक छथि, हमरा देखौलनि; आ ओ हमरा ओकर सभक सभ नियम ठीक ओहिना देखौलनि जेना ओ सभ अछि, आ संसारक सभ वर्ष आ अनन्त काल धरि कोना अछि, जाबत धरि नव सृष्टि पूरा नहि भ' जायत जे अनन्त काल धरि रहत।

2. आ प्रकाशक पहिल नियम ई अछि : प्रकाशक सूर्यक उदय स्वर्गक पूर्वी द्वार मे होइत छैक आ स्वर्गक पश्चिमी द्वार मे अस्त होइत छैक |
3. आ हम छह टा द्वार देखलहुँ जाहि मे सूर्य उगैत अछि, आ छह टा द्वार जाहि मे सूर्य अस्त होइत अछि आ चन्द्रमा एहि द्वार मे उगैत अछि आ अस्त होइत अछि, आ तारा सभक नेता आ जिनका ओ सभ नेतृत्व करैत अछि: छहटा पूब आ छह पश्चिम मे, आ सभ एक दोसराक पाछू-पाछू सटीक क्रम मे: संगहि एहि द्वार सभक दहिना-बामा दिस बहुत रास खिड़की।
4. आ पहिने ओहि महान प्रकाशक निकलैत अछि, जकर नाम सूर्य अछि, आ ओकर परिधि स्वर्गक परिधि जकाँ होइत छैक, आ ओ प्रकाशित आ तापय बला आगि सँ एकदम भरल अछि।
5. जाहि रथ पर ओ चढ़ैत छथि, हवा चलैत अछि, आ सूर्य स्वर्ग सँ अस्त भ' उत्तर दिस सँ घुरि जाइत अछि, जाहि सँ ओ पूब दिस पहुँचबाक लेल, आ एतेक मार्गदर्शन कयल जाइत अछि जे उचित द्वार पर आबि स्वर्गक मुँह मे चमकैत अछि।
6. एहि तरहें ओ पहिल मास मे महान पोर्टल मे उठैत छथि, जे कलाकार मे ओहि छह पोर्टल मे चारिम अछि।
7. आ ओहि चारिम द्वार मे जाहि सँ पहिल मास मे सूर्य उगैत अछि, ओहि मे बारह टा खिड़की-खुजल अछि, जाहि सँ अपन मौसम मे खुजला पर एकटा लौ निकलैत अछि।
8. जखन सूर्य स्वर्ग मे उगैत अछि तखन ओ ओहि चारिम द्वार सँ क्रमशःतीस भोर बाहर निकलैत अछि आ स्वर्गक पश्चिम मे चारिम द्वार मे सटीक रूप सँ अस्त भ' जाइत अछि।
9. आ एहि अवधि मे दिन नित्य नमहर भ' जाइत अछि आ राति राति तीसम भोर धरि छोट भ' जाइत अछि।
10. ओहि दिन दिन राति सँ नवम भाग बेसी होइत छैक, आ दिन ठीक दस भाग आ राति आठ भाग होइत छैक।
11. आ सूर्य ओहि चारिम द्वारसँ उगैत अछि आ चारिम द्वारमे अस्त होइत अछि आ तीस भोर पूबक पाँचम द्वारमे घुरि जाइत अछि आ ओहिसँ उगैत अछि आ पाँचम द्वारमे अस्त होइत अछि।
12. आ तखन दिन दू भाग नमहर भ' क' एगारह भाग भ' जाइत छैक, आ राति छोट भ' जाइत छैक आ सात भाग भ' जाइत छैक।
13. आ ई पूब दिस घुरि कऽ छठम द्वार मे प्रवेश करैत अछि आ अपन चिन्हक कारणेँ एक-तीस भोर मे छठम द्वार मे उठि कऽ अस्त भऽ जाइत अछि।
14. ओहि दिन दिन राति सँ बेसी नमहर भ' जाइत छैक, आ दिन राति सँ दुगुना भ' जाइत छैक, आ दिन बारह भाग भ' जाइत छैक, आ राति छोट भ' जाइत छैक आ छह भाग भ' जाइत छैक।
15. आ सूर्य चढ़ि जाइत अछि जाहि सँ दिन छोट आ राति नमहर भ' जाय, आ सूर्य पूब दिस घुरि क' छठम द्वार मे प्रवेश करैत अछि आ ओहि मे सँ उठि तीस भोर अस्त भ' जाइत अछि।
16. जखन तीस भोर पूरा भ' जाइत छैक तखन दिन ठीक एक भाग कम भ' जाइत छैक आ एगारह भाग भ' जाइत छैक आ राति सात भाग भ' जाइत छैक।
17. आ सूर्य पश्चिम दिस ओहि छठम द्वार सँ निकलि पूब दिस जाइत अछि आ तीस भोर धरि पाँचम द्वार मे उगैत अछि आ पश्चिम मे फेर सँ पाँचम पश्चिम द्वार मे अस्त होइत अछि।
18. ओहि दिन दिन दू भाग कम भ' जाइत अछि, आ दस भाग आ राति आठ भाग भ' जाइत अछि।
19. ओहि पाँचम द्वारसँ सूर्य निकलि पश्चिमक पाँचम द्वारमे अस्त होइत अछि आ अपन चिन्हक कारणेँ चारिम द्वारमे एक-तीस भोर धरि उगैत अछि आ पश्चिम दिस अस्त होइत अछि।
20. ओहि दिन दिन राति सँ बराबर भ' जाइत छैक, आ बराबर लम्बाईक भ' जाइत छैक, आ राति नौ भाग आ दिन नौ भाग भ' जाइत छैक।
21. आ सूर्य ओहि द्वारसँ उगैत पश्चिम दिस अस्त होइत अछि आ पूब दिस घुरि कऽ तेसर द्वारमे तीस भोरे उगैत अछि आ तेसर द्वारमे पश्चिममे अस्त होइत अछि।
22. आ ओहि दिन राति दिन सँ नमहर भ' जाइत अछि, राति राति सँ नमहर भ' जाइत अछि, आ दिन दिन सँ छोट भ' जाइत अछि, तीसम भोर धरि, आ राति ठीक दस भाग आ दिन आठ भाग भ' जाइत अछि।
23. सूर्य ओहि तेसर द्वार सँ उगैत अछि आ पश्चिम मे तेसर द्वार मे अस्त होइत अछि आ पूर्व दिस घुरि जाइत अछि, आ तीस भोर धरि पूर्व मे दोसर द्वार मे उगैत अछि आ तहिना स्वर्गक पश्चिम मे दोसर द्वार मे अस्त होइत अछि।
24. आ ओहि दिन राति एगारह भाग आ दिन सात भाग होइत छैक।
25. ओहि दिन सूर्य ओहि दोसर द्वार सँ उगैत अछि आ दोसर द्वार मे पश्चिम दिस अस्त भ' जाइत अछि आ एक-तीस भोर धरि पहिल द्वार मे पूब दिस घुरि जाइत अछि आ स्वर्गक पश्चिम मे पहिल द्वार मे अस्त भ' जाइत अछि।
26. ओहि दिन राति नमहर भ' जाइत छैक आ दिनक दुगुना भ' जाइत छैक, आ राति ठीक बारह भाग आ दिन छह भाग भ' जाइत छैक।
27. आ सूर्य एहि तरहेँ अपन कक्षाक विभाजन सभकेँ पार कए अपन कक्षाक ओहि विभाग सभ पर फेर घुमि जाइत अछि आ तीस भोर ओहि द्वारमे प्रवेश करैत अछि आ ओकर विपरीत पश्चिममे सेहो अस्त भऽ जाइत अछि।
28. आ ओहि राति राति मे नव भाग कम भ' गेल अछि, आ राति एगारह भाग भ' गेल अछि आ दिन सात भाग भ' गेल अछि।
29. आ सूर्य घुरि कऽ पूर्व मे दोसर द्वार मे प्रवेश कऽ गेल अछि आ तीस भोर धरि अपन कक्षाक अपन विभाजन पर ओहि सभ पर उगैत आ अस्त होइत घुरि जाइत अछि।
30. आ ओहि दिन राति के लम्बाई कम भ' जाइत छैक, आ राति दस भाग आ दिन आठ भाग भ' जाइत छैक।
31. आ ओहि दिन सूर्य ओहि द्वार सँ उगैत अछि आ पश्चिम दिस अस्त भ' जाइत अछि आ पूब दिस घुरि जाइत अछि आ तेसर द्वार मे एक-तीस भोर धरि उगैत अछि आ स्वर्गक पश्चिम मे अस्त भ' जाइत अछि।
32. ओहि दिन राति घटि कए नौ भाग भ जाइत अछि आ दिन नौ भाग भ जाइत अछि आ राति दिनक बराबर होइत अछि आ साल ठीक ओहिना होइत अछि जेना अपन दिन तीन सय चौंसठि होइत अछि।
33. आ दिन-रातिक लम्बाई आ दिन-रातिक छोटपन उठैत अछि--सूर्यक क्रम मे ई भेद कयल जाइत अछि।
34. त' ई अबैत अछि जे ओकर कोर्स नित्य नमहर भ' जाइत छैक, आ ओकर कोर्स राति मे छोट भ' जाइत छैक।
35. आ ई सूर्यक नियम आ मार्ग थिक, आ जखन ओ साठि बेर घुरैत छथि आ उगैत छथि, अर्थात् ओ महान प्रकाशक जकर नाम सूर्य राखल गेल अछि, सदा-सदा लेल हुनकर वापसी।

36. जे एहि तरहेँ उठैत अछि से महान प्रकाश थिक, आ प्रभुक आज्ञाक अनुसार ओकर रूप-रंगक अनुसार नाम देल गेल अछि।
37. जहिना उठैत अछि, तेना ओ अस्त होइत अछि आ घटैत नहि अछि, आ आराम नहि करैत अछि, बल्कि दिन-राति दौड़ैत अछि, आ ओकर इजोत चान सँ सात गुना बेसी चमकैत अछि। मुदा आकारक बात ई दुनू बराबर अछि।

अध्याय 73

1. आ एहि नियमक बाद हम एकटा आओर नियम देखलहुँ जे छोटका प्रकाशक विषय मे छल, जकर नाम चन्द्रमा अछि।
2. ओकर परिधि स्वर्गक परिधि जकाँ अछि आ ओकर रथ जाहि रथ मे ओ चढ़ैत अछि, हवा द्वारा चलाओल जाइत छैक आ ओकरा निश्चित रूप सँ प्रकाश देल जाइत छैक।
3. ओकर उदय आ डूबब सभ मास बदलैत रहैत छैक, आ ओकर दिन सूर्यक दिन जकाँ होइत छैक आ जखन ओकर इजोत एक समान होइत छैक तखन ओ सूर्यक इजोतक सातवाँ भागक बराबर होइत छैक।
4. आ एहि तरहेँ ओ उठैत छथि। आ पूब दिस ओकर पहिल चरण तीसम भोर मे निकलैत छैक: आ ओहि दिन ओ दृश्यमान भ' जाइत छैक, आ तीसम दिन चन्द्रमाक पहिल चरणक गठन करैत छैक, जाहि मे सूर्यक संग ओहि द्वार मे सूर्य सेहो बनैत छैक जतय सूर्य उगैत छैक |
5. ओकर एक आधा भाग सातवाँ भाग आगू बढ़ैत छैक आ ओकर पूरा परिधि खाली छैक, बिना प्रकाशक, एकर एक-सातवाँ भाग आ ओकर प्रकाशक चौदहम भाग छोड़ि।
6. आ जखन ओकरा अपन प्रकाशक आधा भागक सातवाँ भाग भेटैत छैक तखन ओकर प्रकाश ओकर आधा भाग सातवाँ भागक बराबर भ' जाइत छैक।
7. आ ओ सूर्यक संग अस्त होइत छथि, आ जखन सूर्य उगैत छथि तखन चन्द्रमा हुनका संग उगैत छथि आ एक भागक आधा भाग प्रकाश प्राप्त करैत छथि, आ ओहि राति मे हुनकर भोरक प्रारम्भ मे चन्द्रमाक दिनक प्रारंभ मे चन्द्रमा सूर्यक संग अस्त होइत छथि, आ ओहि राति चौदह भाग आ एक भागक आधा भाग सँ अदृश्य रहैत छथि।
8. आ ओहि दिन ठीक सातवाँ भाग सँ उठैत छथि आ बाहर आबि सूर्यक उदय सँ हटि जाइत छथि आ शेष दिन मे शेष तेरह भाग मे उज्ज्वल भ' जाइत छथि।

अध्याय 74

1. आ हम एकटा आओर कोर्स देखलहुँ, हुनका लेल एकटा नियम, आ ओहि नियमक अनुसार कोना ओ अपन मासिक क्रांति करैत छथि।
2. आ ई सभ उरीएल, पवित्र स् वर्गदूत जे सभक अग्रणी छथि, हमरा आ ओकर सभक स्थान देखौलनि, आ हम ओकर सभक स्थान जेना ओ हमरा देखौलनि, तेना लिखलहुँ, आ हम ओकर सभक मास जेना छल तेना लिखलहुँ, आ पनरह दिन धरि ओकर सभक इजोतक रूप पूरा नहि भ' गेल।
3. एकल सातवाँ भाग मे ओ पूर्व मे अपन सभ इजोत पूरा करैत छथि, आ एकल सातवाँ भाग मे पश्चिम मे अपन सभटा अन्हार केँ पूरा करैत छथि।
4. आ किछु खास मास मे ओ अपन सेटिंग मे बदलाव करैत छथि, आ किछु खास मास मे ओ अपन विचित्र मार्ग पर चलैत छथि।
5. दू मास मे चन्द्रमा सूर्यक संग अस्त भ' जाइत अछि: ओहि दुनू बीचक द्वार मे तेसर आ चारिम।
6. ओ सात दिन धरि आगू बढ़ैत छथि, आ घुमि कऽ फेर ओहि द्वारसँ घुरि जाइत छथि जतय सूर्य उगैत अछि आ अपन सभ प्रकाश पूरा करैत छथि, आ सूर्यसँ हटि जाइत छथि आ आठ दिनमे ओहि छठम द्वारमे प्रवेश करैत छथि जतयसँ सूर्य निकलैत अछि।
7. जखन सूर्य चारिम द्वार सँ निकलैत अछि तखन ओ सात दिन आगू बढ़ैत अछि, जाबत ओ पाँचम द्वार सँ बाहर नहि निकलैत अछि आ सात दिन मे फेर सँ चारिम द्वार मे घुमि जाइत अछि आ अपन समस्त प्रकाश पूरा नहि करैत अछि, आ ओ पाछू हटि जाइत अछि आ आठ दिन मे पहिल द्वार मे प्रवेश करैत अछि।
8. आ सात दिन मे फेर ओहि चारिम द्वार मे घुरि जाइत छथि जतय सँ सूर्य निकलैत अछि।
9. एहि तरहें हम हुनका लोकनिक स्थिति देखलहुँ--ओहि दिन मे कोना चान उगैत छल आ सूर्यास्त होइत छल।

.

11. आ सूर्य आ तारा के ओवरप्लस छह दिन के होइत अछि: 5 साल में 6 दिन हर साल 30 दिन भ जाइत अछि: आ चान सूर्य आ तारा के पाछू 30 दिन के संख्या तक खसि पड़ैत अछि।
12. आ सूर्य आ तारा सभ वर्ष केँ ठीक-ठीक आनि दैत अछि, जाहि सँ ओ सभ अपन स्थान केँ एको दिन धरि अनन्त काल धरि आगू नहि बढ़बैत अछि आ नहिये देरी करैत अछि। मुदा 364 दिन मे पूर्ण न्याय के संग साल पूरा करू।
13. 3 साल मे 1092 दिन होइत अछि, आ 5 साल मे 1820 दिन, जाहि स 8 साल मे 2912 दिन होइत अछि।
14. असगर चन्द्रमा लेल दिन 3 साल मे 1062 दिन भ जाइत अछि, आ 5 साल मे ओ 50 दिन पाछू पड़ि जाइत छथि: [अर्थात (1770 क) योग मे (1000 आ) 62 दिन जोड़बाक अछि।]
15. आ 5 साल मे 1770 दिन होइत अछि, जाहि स चंद्रमा लेल 8 साल मे दिन 2832 दिन होइत अछि।
16. [कारण 8 साल मे ओ 80 दिनक राशि धरि पाछू पड़ि जाइत छथि], 8 साल मे जतेक दिन पाछू पड़ि जाइत छथि से 80 भ' जाइत छथि।
17. आ वर्ष हुनका लोकनिक विश्व-स्टेशन आ सूर्यक स्टेशनक अनुरूप सटीक रूपेँ पूरा होइत अछि, जे ओहि पोर्टल सभसँ उगैत अछि जाहिसँ ओ (सूर्य) 30 दिन धरि उगैत अछि आ अस्त होइत अछि।

अध्याय 75

1. आ हजारों के मुखिया के जे समस्त सृष्टि पर आ समस्त तारा पर राखल गेल छथि, हुनकर सेहो चारि अंतराल के दिन के संबंध छनि, जे साल के हिसाब के अनुसार अपन पद स अविभाज्य रहैत छथि, आ ई सब ओहि चारि दिन में सेवा करैत छथि जे साल के हिसाब में नहिं गणना कयल गेल अछि।

.

3. एहि लेल जे चिन्ह आ समय आ वर्ष आ दिन हमरा उरीएल स्वर्गदूत देखौलनि, जकरा महिमा के प्रभु आकाश आ संसार मे आकाशक सभ प्रकाशक ऊपर सदा-सदा लेल राखि देने छथि,

जाहि सँ ओ सभ आकाशक मुँह पर शासन करथि आ पृथ्वी पर देखल जाय, आ दिन-राति, अर्थात् सूर्य, चान आ तारा आ सभ सेवा करयवला प्राणी सभक लेल अगुआ बनथि स्वर्गक सभ रथ मे अपन क्रान्ति करू।
4. तहिना उरिएल हमरा बारह टा दरबज्जा देखौलनि, जे स्वर्ग मे सूर्यक रथक परिधि मे खुजल छल, जाहि मे सँ सूर्यक किरण निकलैत अछि, आ ओकरा सभ सँ पृथ्वी पर गर्मी पसरल अछि, जखन ओ सभ अपन निर्धारित ऋतु मे खुजैत अछि।
5. आ हवा आ ओसक आत्माक लेल जखन ओ खुजल अछि, जे छोर पर आकाश मे खुजल ठाढ़ रहैत अछि।
6. स् वर्ग मे, पृथ्वीक छोर पर, बारह टा द्वारक, जाहि मे सँ सूर्य, चन्द्रमा आ तारा आ पूरब आ पश्चिम मे स्वर्गक सभ काज निकलैत अछि।

.

8. आ हम स्वर्ग मे रथ सभ कैँ देखलहुँ, जे संसार मे दौड़ैत छल, ओहि द्वार सभक ऊपर, जाहि मे तारा सभ घूमैत अछि जे कहियो अस्त नहि होइत अछि।
9. आ एकटा बाकी सभसँ पैघ होइत अछि, आ से अछि जे समस्त संसारमे अपन बाट बनबैत अछि।

अध्याय 76

1. पृथ्वीक छोर पर हम बारह टा द्वार देखलहुँ जे आकाशक चारू कात खुजल अछि, जाहि सँ हवा निकलि कऽ पृथ्वी पर बहैत अछि।
2. तीनटा आकाश दिस खुजल अछि, आ तीनटा पश्चिम दिस, तीनटा आकाशक दहिना कात आ तीनटा बामा दिस।
3. आ तीनटा पहिल पूबक अछि आ तीनटा उत्तरक अछि आ तीनटा दक्षिणक बामा दिसक अछि आ तीनटा पश्चिमक अछि।
4. एहि मे सँ चारि गोटेक माध्यमे आशीर्वाद आ समृद्धिक हवा अबैत अछि आ ओहि आठ मे सँ आहत करयवला हवा अबैत अछि, जखन ओ सभ पठाओल जाइत अछि तखन ओ सभ पृथ्वी पर आ ओहि पर पानि पर, आ ओहि पर रहनिहार सभ पर आ पानि मे आ भूमि पर जे किछु अछि, ताहि पर विनाश आनि दैत अछि।
5. ओहि द्वार सभ सँ पहिल हवा, जकरा पूरबक हवा कहल जाइत अछि, पहिल द्वार जे पूर्व मे अछि, दक्षिण दिस झुकैत निकलैत अछि, ओहि मे सँ उजाड़, रौदी, गर्मी आ विनाश निकलैत अछि।
6. आ बीच मे दोसर द्वार द्वारा जे उचित अछि से अबैत अछि, आ ओहि मे सँ वर्षा आ फल-फूल आ समृद्धि आ ओस अबैत अछि। आ तेसर पोर्टल जे उत्तर दिस पड़ैत अछि ओहिसँ जाड़ आ रौदी अबैत अछि ।
7. एहि सभक बाद दक्षिणक हवा तीनटा द्वारसँ निकलैत अछि, ओकर पहिल द्वारसँ पूर्व दिस झुकल एकटा गरम हवा निकलैत अछि।
8. आ ओकर बगलक बीचक द्वारसँ सुगन्धित गंध, ओस आ बरखा, आ समृद्धि आ स्वास्थ्य निकलैत अछि।
9. आ पश्चिम दिस पड़ल तेसर द्वारसँ ओस आ बरखा, टिड्डी आ उजाड़ निकलैत अछि।
10. आ एहि सभक बाद उत्तरक हवा चलैत अछि, पूब दिसक सातम द्वारसँ ओस आ बरखा, टिड्डी आ उजाड़ पड़ैत अछि।
11. आ बीचक द्वारसँ प्रत्यक्ष दिशामे स्वास्थ्य आ वर्षा आ ओस आ समृद्धि अबैत अछि; आ पश्चिम मे तेसर द्वार सँ मेघ आ कर्कश-ठंढा, बर्फ आ बरखा, ओस आ टिड्डी अबैत अछि।
12. आ एहि [चारिटा] बाद पश्चिमक हवा चलैत अछि, उत्तर दिस सटल पहिल द्वार सँ ओस आ कर्कश-ठंढा, आ जाड़ आ बर्फ आ ठंढा निकलैत अछि।
13. आ बीचक द्वारसँ ओस आ बरखा, आ समृद्धि आ आशीर्वाद निकलैत अछि। आ दक्षिण सँ सटल अंतिम द्वार सँ रौदी आ उजाड़ आ जरब आ विनाश सामने अबैत अछि |
14. आ आकाशक चारि भागक बारह टा द्वार पूरा भ' गेल अछि, आ ओकर सभ नियम आ ओकर सभटा विपत्ति आ ओकर सभटा उपकार हम तोरा देखा देलहुँ, हमर पुत्र मथुसेल।

अध्याय 77

1. आ पहिल चतुर्थांश कैँ पूर्व कहल जाइत अछि, कारण ओ पहिल अछि, आ दोसर, दक्षिण, कारण परमात्मा ओतय उतरताह, हँ, ओतय एकदम विशेष अर्थ मे जे सदा-सदा लेल धन्य छथि, ओ उतरताह।
2. आ पश्चिम भागक नाम क्षीण भेल अछि, कारण ओतय स्वर्गक सभ प्रकाश क्षीण भ' जाइत अछि आ नीचाँ चलि जाइत अछि।
3. चारिम भाग, जकर नाम उत्तर राखल गेल अछि, तीन भाग मे बँटल अछि, पहिल भाग मनुक्खक निवासक लेल अछि, आ दोसर भाग मे पानि के समुद्र, रसातल, जंगल आ नदी, आ अन्हार आ मेघ अछि। आ तेसर भाग मे धर्मक बगीचा अछि।
4. हम सात टा ऊँच पहाड़ देखलहुँ, जे पृथ्वी पर जे पहाड़ अछि, ताहि सँ ऊँच पहाड़ सँ ऊँच अछि।
5. हम पृथ्वी पर सातटा नदी देखलहुँ जे सभ नदी सँ पैघ अछि, जाहि मे सँ एकटा पश्चिम सँ आबि अपन पानि महासागर मे ढारि दैत अछि।
6. ई दुनू उत्तर दिस सँ समुद्र दिस आबि अपन पानि पूब मे इरिथ्रिया सागर मे ढारि दैत अछि।
7. शेष चारि गोटे उत्तर दिस अपन समुद्र दिस, दू गोटे इरिथ्री सागर दिस, आ दू गोटे महान सागर मे आ ओतहि छोड़ि दैत छथि आ किछु गोटे कहैत छथि: मरुभूमि मे।
8. समुद्र आ मुख्य भूमि मे सात टा पैघ द्वीप देखलहुँ : दू टा मुख्य भूमि मे आ पाँच टा महान सागर मे।

अध्याय 78

1. आ सूर्यक नाम निम्नलिखित अछि : पहिल ओरजारेस, आ दोसर टॉमा।
2. आ चन्द्रमाक चारि नाम अछि : पहिल नाम असोनजा, दोसर एबला, तेसर बेनासे आ चारिम एराए।
3. ई दुनू महान प्रकाशक अछि : एकर परिधि स्वर्गक परिधि जकाँ अछि आ दुनूक परिधिक आकार एक समान अछि।
4. सूर्यक परिधि मे प्रकाशक सात भाग होइत छैक जे चन्द्रमा सँ बेसी ओकरा मे जोड़ल जाइत छैक, आ निश्चित माप मे सूर्यक सातम भाग ता धरि स्थानांतरित भ' जाइत छैक।
5. ओ सभ पश्चिम दिसक द्वार सभ पर बैसि कऽ प्रवेश करैत अछि आ उत्तर दिस अपन क्रान्ति करैत अछि आ आकाशक मुँह पर पूर्वी द्वार सभसँ बाहर निकलैत अछि।

6. जखन चन्द्रमा उगैत अछि तखन एक चौदहवाँ भाग स्वर्ग मे प्रकट होइत अछि, ओकरा मे इजोत भरल भ' जाइत छैक, चौदहम दिन ओ अपन इजोत पूरा करैत अछि।
7. आ पन्द्रह भाग प्रकाश ओकरा पन्द्रहम दिन धरि स्थानांतरित भ' जाइत छैक जखन ओकर प्रकाश पूरा भ' जाइत छैक, वर्षक राशिक अनुसार, आ ओ पन्द्रह भाग भ' जाइत छैक, आ चौदहम भागक जोड़ि चन्द्रमा बढ़ैत छैक।
8. आ ओकर क्षीण होयबा मे चन्द्रमा पहिल दिन अपन प्रकाशक चौदह भाग, दोसर सँ तेरह भाग, तेसर सँ बारह, चारिम सँ एगारह, पाँचम सँ दस, छठम सँ नौ, सातम सँ आठ, आठम सँ सात, नवम सँ छह, दसम सँ पाँच, एगारहम सँ चारि, दिन बारहम सँ तीन, तेरहम सँ दू, चौदहम सँ सातम के आधा आ पन्द्रहम पर ओकर सभटा इजोत पूर्णतःगायब भ' जाइत छैक |
9. आ किछु खास मास मे मास मे उनतीस दिन आ एक बेर अट्ठाइस दिन होइत छैक।
10. आ उरिएल हमरा एकटा आओर नियम देखौलनि जे जखन इजोत चान पर पहुँचैत अछि आ कोन कात सूर्य द्वारा ओकरा स्थानांतरित कयल जाइत अछि।

.
12. आ पहिल दिन ओकरा अमावस्या कहल जाइत छैक, कारण ओहि दिन ओकरा पर इजोत उठैत छैक।

.
14. जाहि कात सँ चन्द्रमाक इजोत निकलैत अछि, ओतहि फेर ओ कम भ' जाइत अछि जाबत धरि सभ इजोत खतम नहि भ' जाइत अछि आ मासक सभ दिन समाप्त नहि भ' जाइत अछि, आ ओकर परिधि खाली भ' जाइत अछि, इजोत सँ शून्य।
15. आ तीन मास तीस दिनक बनबैत छथि आ अपन समय मे उनतीस दिनक तीन मास बनबैत छथि, जाहि मे ओ पहिल समय मे अपन क्षीणता पूरा करैत छथि, आ पहिल द्वार मे एक सय सत्तर दिन धरि।
16. आ बाहर निकलबाक समय मे ओ तीन मास धरि तीस-तीस दिनक लेल प्रकट होइत छथि आ तीन मास धरि ओ उनतीस-उनतीस दिनक लेल प्रकट होइत छथि।
17. राति मे ओ बीस दिन धरि प्रत्येक बेर पुरुष जकाँ प्रकट होइत छथि, आ दिन मे स्वर्ग जकाँ प्रकट होइत छथि, आ हुनका मे हुनकर इजोत छोड़ि किछु आओर नहि छनि।

अध्याय 79

1. आब, हमर बेटा, हम अहाँ कैँ सभ किछु देखा देलहुँ, आ आकाशक सभ तारा सभक नियम पूरा भ’ गेल अछि।
2. ओ हमरा एहि सभक सभ नियम देखौलनि जे हरेक दिन, शासन करबाक प्रत्येक मौसम, आ हरेक वर्ष, ओकर आगू बढ़बाक आ हरेक मास आ हर सप्ताह ओकरा लेल निर्धारित क्रमक लेल।
3. चन्द्रमाक क्षीणता जे छठम द्वार मे होइत अछि, कारण एहि छठम द्वार मे ओकर प्रकाश पूरा होइत छैक, आ तकर बाद क्षीण होयबाक आरंभ होइत छैक।
4. आ जे क्षीणता अपन मौसम मे पहिल पोर्टल मे होइत अछि, जाबत एक सय सत्ताहत्तर दिन पूरा नहि भ' जाइत अछि।
5. एक अवधिक क्रम मे सूर्य आ तारा सभक क्रम सँ ठीक पाँच दिन पाछू खसि पड़ैत छथि, आ जखन ई स्थान जे अहाँ देखैत छी से पार भ' गेल अछि।
6. हरेक प्रकाशकक चित्र आ रेखाचित्र एहने अछि जे उरिएल महादूत जे हुनका लोकनिक नेता छथि, हमरा देखौलनि।

अध्याय 80

1. आ ओहि दिन मे उरीएल स्वर्गदूत हमरा उत्तर देलथिन आ कहलथिन, ‘देखू, हम अहाँ कैँ सब किछु देखा देने छी, हनोक, आ हम अहाँ कैँ सब किछु प्रगट क’ देलहुँ जे अहाँ एहि सूर्य आ एहि चन्द्रमा कैँ, आ आकाशक तारा सभक नेता सभ कैँ आ ओकरा घुमाबय बला सभ कैँ, ओकर काज आ समय आ प्रस्थान कैँ देखब।”
2. पापी सभक दिन मे वर्ष छोट भ’ जायत, आ ओकर बीया अपन जमीन आ खेत मे देरी करत, आ पृथ्वी पर सभ वस्तु बदलत, आ अपन समय मे नहि देखायत, आ बरखा रोकत, आ आकाश ओकरा रोकत।
3. आ ओहि समय मे पृथ्वीक फल पिछड़ल रहत, आ अपन समय मे नहि बढ़त, आ गाछक फल अपन समय मे रोकल रहत।
4. आ चान अपन क्रम मे परिवर्तन करत, आ अपन समय मे प्रकट नहि करत।
5. आ ओहि दिन मे सूर्य देखल जायत आ ओ साँझ मे पश्चिम मे पैघ रथक छोर पर यात्रा करत, आ प्रकाशक क्रम सँ बेसी तेज चमकत।
6. आ तारा सभक बहुतो मुखिया निर्धारित क्रमक उल्लंघन करत। आ ई सभ अपन कक्षा आ कार्य मे परिवर्तन करत, आ निर्धारित ऋतु मे नहि देखायत।
7. आ तारा सभक समस्त क्रम पापी सभ सँ नुकायल रहत, आ पृथ्वी पर रहनिहार सभक विचार ओकरा सभक विषय मे भटकत, आ ओ सभ अपन सभ मार्ग सँ बदलि जायत, हँ, ओ सभ भटकत आ ओकरा सभ कैँ देवता बुझि लेत।
8. आ ओकरा सभ पर अधलाह बढ़ि जायत, आ ओकरा सभ पर एहन सजा आओत जे सभ कैँ नष्ट कऽ देत।'

अध्याय 81

1. ओ हमरा कहलनि, 'हनोक, एहि स्वर्गीय पाटी सभक अवलोकन करू, आ ओहि पर जे लिखल अछि से पढ़ू, आ प्रत्येक व्यक्तिगत तथ्य कैँ चिन्हित करू।'
2. हम स् वर्गीय पाटी सभक पालन केलहुँ, ओहि पर लिखल सभ किछु पढ़लहुँ आ सभ किछु बुझलहुँ, आ मनुष्य-जातिक सभ काज आ पृथ् वी पर जे सभ मांसक संतान होयत, तकरा सभटा कर्म-पुस्तक पढ़लहुँ।
3. आ तुरन्त हम महान प्रभु महिमाक राजा कैँ सदाक लेल आशीर्वाद देलहुँ, जे ओ संसारक सभ काज बनौलनि, आ हम प्रभुक धैर्यक कारणेँ प्रशंसा केलहुँ, आ मनुष्यक संतानक कारणेँ हुनका आशीर्वाद देलहुँ।
4. आ तकर बाद हम कहलियनि, 'धन्य अछि ओ आदमी जे धर्म आ भलाई मे मरैत अछि, जकर विषय मे अधर्मक कोनो किताब नहि लिखल गेल अछि, आ जकरा विरुद्ध कोनो न्यायक दिन नहि भेटत।'

5. आ ओ सातटा पवित्र लोक हमरा अनलनि आ हमरा अपन घरक दरबज्जाक सोझाँ पृथ्वी पर राखि देलनि आ हमरा कहलनि, 'अपन पुत्र मथुसेल कैँ सब किछु बताउ, आ अपन सभ संतान कैँ ई देखाउ जे प्रभुक नजरि मे कोनो मांस धर्मी नहि अछि, कारण ओ हुनकर सृष्टिकर्ता छथि।
6. एक साल हम अहाँ कैँ अहाँक बेटाक संग छोड़ि देब जाबत धरि अहाँ अपन अंतिम आज्ञा नहि देब, जाहि सँ अहाँ अपन बच्चा सभ कैँ सिखाबी आ ओकरा सभक लेल एकर गवाही देब। दोसर साल मे ओ सभ अहाँ कैँ अपन बीच सँ ल' लेत।"
7. अहाँक हृदय मजबूत रहू, कारण नीक लोक नीक कैँ धार्मिकताक घोषणा करत। धर्मात्मा धर्मात्माक संग आनन्दित होयत, आ एक-दोसर कैँ बधाई देत।
8. मुदा पापी सभ पापी सभक संग मरत, आ धर्मत्यागी सभ धर्मत्यागीक संग उतरत।

.

10. ओहि दिन मे ओ सभ हमरा सँ गप्प करब छोड़ि देलक आ हम संसारक प्रभुक आशीर्वाद दैत अपन लोक लग आबि गेलहुँ।

अध्याय 82

1. आब, हमर पुत्र मथुसेला, हम ई सभ बात अहाँ कैँ सुना रहल छी आ अहाँक लेल लिखि रहल छी, आ हम अहाँ कैँ सभ किछु प्रगट कऽ देलहुँ आ एहि सभक विषय मे अहाँ कैँ किताब दऽ देलहुँ।
2. हम तोरा आ तोहर संतान सभ कैँ, आ तोहर संतान सभ कैँ जे तोहर हेताह, ओकरा सभ कैँ, जे ओ सभ अपन संतान कैँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी धरि द' सकय, ई बुद्धि अर्थात जे ओकर सभक विचार सँ आगू बढ़ैत अछि।
3. जे एकरा बुझैत अछि से नहि सुतत, मुदा कान सँ सुनत जाहि सँ ई बुद्धि सीखल जा सकय, आ नीक भोजन सँ नीक जे एकरा खाइत अछि ओकरा नीक लागत।
4. धन्य छथि सभ धर्मी, धन्य सभ छथि जे धर्मक बाट पर चलैत छथि आ पापी जकाँ पाप नहि करैत छथि, अपन सभ दिनक हिसाब-किताब करैत छथि जाहि मे सूर्य आकाश कैँ घुमैत अछि, तीस दिन धरि द्वार मे प्रवेश करैत छथि आ ओहि सँ विदा होइत छथि, तारा क्रमक हजारों केर माथक संग, संगहि चारि टा जे एक दोसरा सँ जुड़ल अछि जे सालक चारि भाग कैँ विभाजित करैत अछि, जे हुनका सभ कैँ लऽ जाइत अछि आ प्रवेश करैत अछि चारि दिन हुनका सभक संग।
5. ओकरा सभक कारणेँ मनुष्य दोषी होयत आ पूरा वर्षक हिसाब-किताब मे ओकर हिसाब नहि करत।
6. कारण ओ सभ वर्षक हिसाब-किताबक अछि आ ओहि पर सदा-सत्य मे लिखल अछि, एकटा पहिल द्वार मे आ एकटा तेसर मे, आ एकटा चारिम मे आ एक छठम मे, आ वर्ष तीन सय चौंसठि दिन मे पूरा भ' जाइत अछि।
7. ओकर विवरण सटीक अछि आ ओकर दर्ज गणना सटीक अछि। कारण, ज्योतिषी, महीना, पाबनि, वर्ष आ दिन, उरिएल हमरा देखौने छथि आ प्रकट केने छथि, जकरा अधीन संसारक समस्त सृष्टिक प्रभु स्वर्गक सेना कैँ अधीन कएने छथि।
8. आ ओकरा आकाश मे राति-दिन पर शक्ति छैक जे मनुष्य कैँ इजोत कैँ प्रकाश देबाक चाही--सूर्य, चन्द्रमा आ तारा आ आकाशक सभ शक्ति जे अपन गोलाकार रथ मे घूमैत अछि।
9. ई सभ तारा सभक क्रम अछि जे अपन स्थान पर आ अपन ऋतु आ पाबनि आ मास मे अस्त होइत अछि।
10. आ ई सभ ओकर सभक नाम अछि जे ओकरा सभक नेतृत्व करैत अछि, जे देखैत अछि जे ओ सभ अपन समय, अपन क्रम, अपन ऋतु, अपन मास, अपन शासन काल आ अपन पद पर प्रवेश करैत अछि।
11. सालक चारि भाग बँटनिहार चारिटा नेता सभ पहिने प्रवेश करैत छथि। आ ओकर बाद मास बँटवारा करय बला क्रमक बारह नेता। तीन सय साठि दिन धरि हजारो लोकक माथ अछि जे दिन बँटैत अछि। आ चारि इंटरकैलेरी दिनक लेल ओ नेता सभ रहैत छथि जे सालक चारि भागकेँ फाड़ि दैत छथि|
12. आ हजारोसँ ऊपरक ई माथ नेता आ नेताक बीच मे घुमल रहैत अछि, प्रत्येक एकटा स्टेशनक पाछू, मुदा ओकर नेता सभ विभाजन बनबैत अछि। आरू ई वू नेता सिनी के नाम छै जे साल के चारो भाग के बंटवारा करै छै जे नियुक्त होय छै: मिल्की'एल, हेल'एम्मेलेक, आरो मेल'एजल, आरू नारेल।
13. आ हुनका सभक नेतृत्व करयवला सभक नाम: अदनार, आ इजासुसा'एल, आ 'एलोमेर'--ई तीनू आदेशक नेता सभक पालन करैत छथि।
14. आ एकटा एहन अछि जे ओहि आदेशक तीनू नेताक पालन करैत अछि जे ओहि स्टेशनक नेताक पालन करैत अछि जे सालक चारि भाग कैँ बाँटि दैत अछि।
15. वर्षक प्रारंभ मे मेलकेजाल पहिने उठैत अछि आ शासन करैत अछि, जकर नाम ताम'आइनी आ सूर्य राखल जाइत अछि, आ जखन धरि ओ शासन सहैत छथि ताबत हुनकर शासनक सभ दिन एकनबे दिन होइत अछि।
16. हुनकर शासनक दिन मे पृथ्वी पर जे दिन देखबा मे आओत, तकर संकेत ई सभ अछि: पसीना, गर्मी आ शान्त। सभ गाछ फल दैत अछि आ सभ गाछ पर पात निकलैत अछि, गहूम, गुलाबक फूल आ खेत मे निकलय बला सभ फूल, मुदा जाड़क मौसमक गाछ मुरझा जाइत अछि।
17. आ हुनका लोकनिक अधीन जे नेता सभ छथि, हुनकर नाम ई सभ अछि: बेरका'एल, जेलेबस'ेल आ एकटा आओर जकरा हजारक सिर जोड़ल गेल अछि, जकरा हिलुजासेफ कहल जाइत अछि, आ एहि नेताक प्रभुत्वक दिन समाप्त भ' गेल अछि।
18. हुनका बाद अगिला नेता हेल'एम्मेलेक छथि, जिनकर नाम अछि चमकैत सूर्य, आ हुनकर इजोतक सभ दिन एकानबे दिन होइत छनि।

।

20. ई सभ हजारक मुखियाक नाम आ आदेश आ नेता सभ अछि: गिदाजल, के'एल आ हे'एल, आ हजारक माथक नाम जे ओकरा सभ मे जोड़ल गेल अछि, असफा'एल', आ ओकर शासनक दिन समाप्त भ' गेल अछि।

अध्याय 83

1. आब, हमर पुत्र मतुसेल, हम अहाँ कैँ अपन सभ दर्शन जे देखलहुँ, से अहाँ कैँ देखा देब, अहाँ कैँ सामने ओकरा सभ कैँ सुनबैत रहब।
2. दू टा दर्शन हम पत्नी लेबासँ पहिने देखलहुँ, आ एकटा दोसरसँ एकदम भिन्न छल: पहिल जखन हम लिखब सीखैत रही: दोसर जखन हम अहाँक मायकेँ देखबासँ पहिने, जखन हम एकटा

भयावह दर्शन देखलहुँ। आ हुनका सभक संबंध मे हम प्रभु सँ प्रार्थना केलहुँ।
३.
4. जखन ई धरती पर खसल तखन हम देखलहुँ जे कोना धरती एकटा पैघ खाई मे निगल गेल, पहाड़ पर पहाड़ लटकल छल, पहाड़ी पर पहाड़ डूबि गेल, आ ऊँच-ऊँच गाछ ओकर डारि सँ फाटि गेल, आ नीचाँ फेकि गेल आ खाई मे डूबि गेल।
5. तखन हमर मुँह मे एकटा शब्द पड़ल, आ हम जोर-जोर सँ चिचियाबय लेल आवाज उठेलहुँ, आ कहलियनि, 'पृथ्वी नष्ट भ' गेल अछि।'

.

.

8. आब, हमर बेटा, उठू आ महिमा के प्रभु सँ विनती करू, किएक त' अहाँ विश्वासी छी, जाहि सँ एकटा अवशेष पृथ्वी पर रहय आ ओ पूरा पृथ्वी केँ नष्ट नहि करथि।
9. हमर बेटा, ई सभटा स् वर्ग सँ पृथ्वी पर आओत, आ पृथ्वी पर बहुत पैघ विनाश होयत।
10. तकर बाद हम उठि कऽ प्रार्थना केलहुँ आ विनती केलहुँ आ विनती केलहुँ आ संसारक पीढ़ी-दर-पीढ़ी लेल अपन प्रार्थना लिखि देलहुँ, आ हम अहाँ केँ सभ किछु देखा देब, हमर पुत्र मथुसेल।
11. जखन हम नीचाँ गेलहुँ आ आकाश, पूरब दिस सूर्य उगैत, पश्चिम मे चान डूबैत, किछु तारा, आ समस्त पृथ्वी आ सभ किछु जेना ओ शुरू मे जनैत छलाह, तकलहुँ, तखन हम न्यायक प्रभु केँ आशीर्वाद देलहुँ आ हुनकर प्रशंसा केलहुँ, कारण ओ सूर्य केँ पूरब दिसक खिड़की सँ बाहर निकालि देलनि, आ ओ चढ़ि क’ उगलाह स्वर्ग सँ निकलि गेलाह आ ओकरा देखाओल गेल बाट पर चलैत रहलाह।

अध्याय 84

1. हम धार्मिकता मे हाथ उठौलहुँ आ पवित्र आ महान केँ आशीर्वाद देलहुँ आ अपन मुँहक साँस सँ आ मांसक जीह सँ बजलहुँ, जे परमेश् वर मनुष्यक मांसक संतान सभक लेल बनौने छथि, जाहि सँ ओ सभ एहि बात सँ बाजथि, आ ओ हुनका सभ केँ साँस आ एकटा जीह आ मुँह देलनि जे ओ सभ ओहि सँ बाजथि।
2. 'हे प्रभु, राजा, अपन महानता मे महान आ पराक्रमी, स्वर्गक समस्त सृष्टिक स्वामी, राजा सभक राजा आ समस्त संसारक भगवान, अहाँ धन्य हो।' आ तोहर सामर्थ्य आ राज् य आ महानता अनन्त काल धरि रहैत अछि, आ सभ पीढ़ी धरि अहाँक प्रभुत्व। आ समस्त आकाश सदा-सदा लेल तोहर सिंहासन अछि, आ समस्त धरती सदा-सदा लेल तोहर पैरक आधार अछि।
3. कारण अहाँ सभ किछु बनौने छी आ अहाँ पर शासन करैत छी, आ अहाँक लेल कोनो बात बेसी कठिन नहि अछि, बुद्धि अहाँक सिंहासनक स्थान सँ नहि हटि जाइत अछि, आ ने अहाँक सान्निध्य सँ मुँह घुमाबैत अछि। आ अहाँ सब किछु जनैत छी आ देखैत छी आ सुनैत छी, आ अहाँ सँ किछु नुकायल नहि अछि कारण अहाँ सब किछु देखैत छी |
4. आब तोहर आकाशक स् वर्गदूत अपराधक दोषी छथि, आ अहाँक क्रोध मनुष्यक शरीर पर न् यायक महान दिन धरि रहैत अछि।
5. आ आब हे भगवान आ प्रभु आ महान राजा, हम अहाँ सँ विनती आ विनती करैत छी जे हमर प्रार्थना पूरा करू, हमरा पृथ्वी पर एकटा वंशज छोड़ि दिअ, आ मनुष्यक सभ मांस केँ नष्ट नहि करू, आ पृथ्वी केँ बिना निवासी बनाउ, जाहि सँ अनन्त विनाश हो।
6. आ आब, हमर प्रभु, पृथ्वी पर सँ ओहि मांस केँ नष्ट करू जे अहाँक क्रोध उत्पन्न केने अछि, मुदा धर्म आ सोझताक मांस अनन्त बीजक पौधा जकाँ स्थापित करैत अछि, आ हे प्रभु, अपन सेवकक प्रार्थना सँ अपन मुँह नहि नुकाउ।'

अध्याय 85

1. एकर बाद हम एकटा आओर सपना देखलहुँ, आ हम अहाँ केँ पूरा सपना देखा देब, हमर बेटा।
2. हनोक आवाज उठा कऽ अपन पुत्र मथुसेला सँ कहलथिन, ’हमर बेटा, हम तोरा सँ बाजब, हमर बात सुनू--अपन कान केँ अपन पिताक स्वप्न-दर्शन दिस झुकाउ।
3. तोहर माय एडना केँ ल' जेबा सँ पहिने हम अपन पलंग पर दर्शन मे देखलहुँ, आ देखलहुँ जे पृथ्वी सँ एकटा बैल निकलल छल आ ओ बैल उज्जर छल। आ ओकर बाद एकटा बछिया निकलल आ एहि बादक संग दू टा बैल सेहो निकलल, जाहि मे एकटा कारी आ दोसर लाल।
4. ओ कारी बैल लाल बैल केँ मारि कऽ पृथ्वी पर ओकर पाछाँ लागि गेल, आ तखन हम ओहि लाल बैल केँ आब नहि देखि सकलहुँ।
5. मुदा ओ कारी बैल बढ़ल आ ओ बछिया ओकरा संग चलि गेल, आ हम देखलहुँ जे ओकरा सँ बहुत रास बैल निकलल जे ओकरा सदृश आ ओकर पाछाँ-पाछाँ चलैत छलैक।
6. ओ गाय, जे पहिल बैल छल, ओहि लाल बैल केँ तकबाक लेल ओहि पहिल बैल केर सान्निध्य सँ निकलि गेल, मुदा ओकरा नहि भेटल आ ओकरा पर बहुत विलाप क' क' ओकरा तकलक।
7. हम ताबत धरि तकलहुँ जाबत ओ पहिल बैल ओकरा लग आबि ओकरा शान्त क’ देलक, आ तहिया सँ ओ आब नहि कानय लागल।
8. तकर बाद एकटा आओर उज्जर बैल जन्मलनि, आ ओकर बाद ओ बहुत रास बैल आ कारी गाय केँ जन्म देलनि।
9. हम नींद मे देखलहुँ जे उज्जर बैल सेहो बढ़ि कऽ एकटा पैघ उज्जर बैल बनि जाइत अछि आ हुनका सँ बहुत रास उज्जर बैल निकलल छल आ ओ सभ हुनका सँ मिलैत जुलैत छल। ओ सभ कतेको उज्जर बैल पैदा करय लगलाह, जे हुनका सभ सँ मिलैत-जुलैत छल, एकक पाछाँ-पाछाँ, एतेक धरि जे कतेको।

अध्याय 86

1. हम फेर अपन आँखि सँ सुतल देखलहुँ, आ ऊपर सँ आकाश देखलहुँ, आ देखलहुँ जे एकटा तारा आकाश सँ खसि पड़ल आ ओ उठि कऽ खा गेल आ ओहि बैल सभक बीच चरैत रहल।
2. तकर बाद हम पैघ आ कारी बैल सभकेँ देखलहुँ आ देखलहुँ जे सभ अपन ठेला आ चारागाह आ मवेशी बदलि एक दोसराक संग रहय लागल।
3. हम फेर दर्शन मे देखलहुँ आ आकाश दिस तकलहुँ आ देखलहुँ जे बहुत रास तारा स्वर्ग सँ उतरि कऽ ओहि पहिल तारा

दिस फेकि गेल, आ ओ सभ ओहि मवेशी सभक बीच बैल बनि गेल आ ओकरा सभक संग ओकरा सभक बीच चरैत रहल।
4. हम ओकरा सभ दिस तकलहुँ आ देखलहुँ जे ओ सभ घोड़ा जकाँ अपन-अपन अंग-अंग छोड़ि बैल सभक गाय कें झाँपय लागल आ सभ गर्भवती भऽ हाथी, ऊँट आ गदहा सभ कें जन्म देलक।
5. सभ बैल ओकरा सभ सँ डेरा गेल आ ओकरा सभ सँ घबरा गेल आ दाँत सँ काटि कऽ खाय लागल आ सींग सँ चोट करय लागल।
6. आ ओ सभ ओहि बैल सभ कें खाय लागल। आ देखू, पृथ् वीक सभ सन् तान ओकरा सभक सोझाँ काँपि कऽ काँपि उठय लागल आ ओकरा सभ सँ भागय लागल।

अध्याय 87

1. आ फेर देखलहुँ जे कोना दुनू गोटे एक दोसरा कें मारय लागल आ एक दोसरा कें खाय लागल, आ धरती जोर सँ कानय लागल।
2. हम अपन आँखि फेर सँ आकाश दिस उठौलहुँ आ दर्शन मे देखलहुँ आ देखलहुँ जे स्वर्ग सँ गोरा लोक जकाँ एहन प्राणी निकलल आ ओहि ठाम सँ चारि गोटे आ तीन गोटे हुनका सभक संग निकलल।
3. ओ तीनू जे अंतिम बेर निकलल छल, हमरा हाथ पकड़ि कऽ हमरा ऊपर ल' लेलक, पृथ्वीक पीढ़ी-दर-पीढ़ी सँ दूर, आ हमरा एकटा ऊँच स्थान पर ऊपर उठौलक आ हमरा धरती सँ ऊपर ऊँच एकटा टावर देखौलक, आ सभ पहाड़ी नीचाँ छल।
4. आ एक गोटे हमरा कहलथिन, जाबत धरि अहाँ ओहि हाथी, ऊँट, गदहा, तारा आ बैल आ सभ पर जे किछु होइत छैक, ता धरि एतहि रहू।'

अध्याय 88

1. हम ओहि चारि गोटे मे सँ एकटा कें देखलहुँ जे पहिने निकलल छल, आ ओ ओहि पहिल तारा कें पकड़ि लेलक जे स्वर्ग सँ खसल छल, ओकरा हाथ-पैर बान्हि कऽ खाधि मे फेकि देलक।
2. एक गोटे तलवार निकालि ओहि हाथी आ ऊँट आ गदहा सभ कें दऽ देलकनि, तखन ओ सभ एक दोसरा कें मारय लगलाह आ ओकरा सभक कारणें पूरा धरती काँपि उठल।
3. जखन हम दर्शन मे देखैत छलहुँ, देखू, ओहि चारि गोटे मे सँ एक गोटे ओकरा सभ कें स्वर्ग सँ पाथर मारि देलक आ ओहि सभ महान तारा सभ कें जमा कऽ लेलक, जकर गुप्त अंग घोड़ाक समान छल, आ सभ कें हाथ-पैर बान्हि कऽ पृथ्वीक खाई मे फेकि देलक।

अध्याय 89

1. ओहि चारू मे सँ एक गोटे ओहि उज्जर बैल लग जा कऽ ओकरा गुप्त रूप सँ शिक्षा देलक, बिना ओकरा भयभीत केने। ओहि बर्तन मे तीन टा बैल हुनका संग रहैत छल आ ओ सभ ओहि मे झाँपि गेल छल।
2. फेर हम अपन आँखि स्वर्ग दिस उठौलहुँ आ देखलहुँ जे एकटा ऊँच छत छल, जाहि पर सातटा पानिक धार छल आ ओ धार बहुत पानि सँ एकटा घेरा मे बहैत छल।
3. हम फेर देखलहुँ जे ओहि पैघ घेराक सतह पर फव्वारा खुजि गेल छल आ ओ पानि फूलि कऽ ऊपर उठय लागल आ हम ओहि घेरा कें ताबत धरि देखलहुँ जाबत ओकर पूरा सतह पानि सँ नहि झाँपि नहि गेल।
4. ओहि पर पानि, अन्हार आ धुंध बढ़ि गेल। आ जखन हम ओहि पानिक ऊँचाई दिस तकलहुँ तखन ओ पानि ओहि घेराक ऊँचाई सँ ऊपर उठि गेल छल आ ओहि घेरा पर बहैत छल आ ओ धरती पर ठाढ़ भ' गेल छल।
5. ओहि घेराक सभटा मवेशी ताबत धरि जमा भ' गेल जाबत धरि हम नहि देखलहुँ जे कोना ओ सभ डूबि गेल आ ओहि पानि मे निगल गेल आ नष्ट भ' गेल।
6. मुदा ओ पात्र पानि पर बहैत रहल, जखन कि सभटा बैल आ हाथी आ ऊँट आ गदहा सभ जानवरक संग नीचाँ धरि डूबि गेल, जाहि सँ हम ओकरा सभ कें आब नहि देखि सकलहुँ, आ ओ सभ नहि बचि सकल, बल् कि नष्ट भ' गेल आ गहींर मे डूबि गेल।
7. हम फेर दर्शन मे देखलहुँ जाबत धरि ओहि ऊँच छत सँ ओ पानिक धार नहि हटि गेल आ पृथ्वीक खाई सभ समतल नहि भ' गेल आ आन खाई सभ खुजि गेल।
8. तखन पानि एहि सभ मे नीचाँ बहय लागल, जाबत धरि धरती नहि देखाओल गेल। मुदा ओ पात्र पृथ्वी पर बैसि गेल आ अन्हार निवृत्त भ गेल आ इजोत आबि गेल।
9. मुदा ओ उज्जर बैल जे मनुख बनि गेल छल, ओहि पात्र मे सँ तीनू बैल सेहो निकलल, आ तीनू मे सँ एकटा बैल जकाँ उज्जर छल, आ एकटा खून जकाँ लाल आ एकटा कारी छल, आ ओ उज्जर बैल ओकरा सभ सँ चलि गेल।

१०-२७ के अनुसार। नूहक मृत्युसँ लऽ कऽ पलायन धरि।

10. ओ सभ खेतक जानवर आ चिड़ै सभ कें उत्पन्न करय लागल, जाहि सँ अलग-अलग वंश उत्पन्न भेल: सिंह, बाघ, भेड़िया, कुकुर, हाइना, जंगली सुअर, लोमड़ी, गिलहरी, सुग्गर, बाज, गिद्ध, पतंग, गरुड़ आ काग। आ ओहि मे एकटा उज्जर बैल उत्पन्न भेल।
11. ओ सभ एक-दोसर कें काटय लगलाह। मुदा ओ उज्जर बैल जे हुनका सभक बीच जन्म लेने छल, ओकरा संग एकटा जंगली गदहा आ एकटा उज्जर बैल पैदा भेल आ जंगली गदहा सभ बढ़ि गेल।
12. मुदा ओहि बैल जे हुनका सँ जन्मल छल, ओकरा एकटा कारी जंगली सुअर आ एकटा उज्जर भेड़क जन्म भेलैक। पहिलुका मे बहुत रास सुअर भेलैक, मुदा ओहि बरद सँ बारह टा भेँड़ा भेलैक।
13. जखन ओ बारहटा बरद बढ़ि गेल तखन ओ सभ ओहि मे सँ एकटा गदहा कें सौंपि देलक, आ ओ गदहा फेर ओहि बरद कें भेड़ियाधसान कें सौंप देलक आ ओ बरद भेड़ियाक बीच मे बढ़ि गेल।
14. प्रभु एगारहटा भेँड़ा कें ओकरा संग रहबाक लेल आ ओकरा संग भेड़ियाक बीच चराब' लेल अनलनि।
15. भेड़िया सभ ओकरा सभ सँ डरय लागल आ ओकरा सभ कें ताबत धरि अत्याचार केलक जाबत धरि ओ सभ अपन छोट-छोट बच्चा सभ कें नष्ट नहि कऽ देलक आ अपन बच्चा सभ कें बहुत पानि केर नदी मे फेकि देलक।
16. एकटा भेड़िया जे भेड़ियाधसान सँ बचि गेल छल, भागि गेल आ जंगली गदहा दिस भागि गेल। हम देखलहुँ जे बरद सभ कोना

विलाप करैत छल आ चिचियाइत छल आ अपन प्रभु सँ पूरा शक्ति सँ विनती करैत छल, जाबत धरि ओ भेँड़ा सभक प्रभु भेँड़ा सभक आवाज पर कोनो ऊँच स्थान सँ नहि उतरि गेल आ ओकरा सभ लग आबि ओकरा सभ केँ चरबैत नहि गेल।
17. ओ ओहि भेँड़ा केँ बजौलनि जे भेड़िया सँ बचि गेल छल आ ओकरा सँ भेड़ियाक विषय मे बात कयलनि जे ओ ओकरा सभ केँ भेँड़ा केँ नहि छुबय लेल सलाह देथिन।
18. भेड़ सभ प्रभुक वचनक अनुसार भेड़िया लग गेल, आ एकटा आओर भेड़ ओकरा सभ सँ भेंट केलक आ ओकरा संग चलि गेल, आ दुनू गोटे एक संग ओहि भेड़िया सभक जमात मे घुसि गेल आ ओकरा सभ सँ गप्प केलक आ ओकरा सभ केँ सलाह देलक जे आब सँ भेड़ सभक हाथ नहि लगाउ।
19. तखन हम भेड़ियाधसान सभ केँ देखलहुँ जे कोना ओ सभ अपन समस्त सामर्थ् य सँ बरद सभ केँ अत्यधिक अत्याचार करैत छल। बरद सभ जोर-जोर सँ कानय लागल।
20. प्रभु भेँड़ा सभक लग आबि गेलाह आ ओ सभ ओहि भेड़िया सभ केँ मारय लगलाह। मुदा बरद सभ चुप भ' गेल आ तुरन्त चिचियाब छोड़ि देलक।
21. हम भेँड़ा सभ केँ ताबत धरि देखलहुँ जाबत ओ सभ भेड़ियाधसान सभक बीच सँ नहि चलि गेल। मुदा भेड़ियाधसानक आँखि आन्हर भऽ गेलैक आ ओ भेड़िया सभ अपन समस्त शक्तिक संग बरद सभक पाछाँ-पाछाँ चलि गेल।
22. भेँड़ा सभक प्रभु हुनका सभक नेता बनि हुनका सभक संग गेलाह आ हुनकर सभ भेँड़ा हुनका पाछाँ लागि गेलनि।
23. मुदा भेड़ियाधसान सभ ओहि बरद सभक पाछाँ-पाछाँ ताबत धरि करऽ लागल जाबत धरि ओ सभ पानिक समुद्र मे नहि पहुँचि गेल।
24. ओ समुद्र बँटि गेल आ पानि हुनका सभक मुँहक सोझाँ एहि कात आ ओहि कात ठाढ़ भ' गेल आ ओकर सभक प्रभु ओकरा सभ केँ लऽ गेल आ ओकरा सभ आ भेड़ियाक बीच अपना केँ राखि लेलक।
25. जखन ओ भेड़िया सभ एखन धरि बरद सभ केँ नहि देखि सकल, तखन ओ सभ ओहि समुद्रक बीचोबीच बढ़ि गेल आ भेड़िया सभ भेँड़ा सभक पाछाँ-पाछाँ दौड़ि गेल।
26. जखन ओ सभ भेँड़ा सभक प्रभु केँ देखलनि तँ हुनकर मुँह सँ पलायन करबाक लेल घुमि गेलाह, मुदा ओ समुद्र अपना केँ जमा भ' गेल आ जेना सृष्टि भेल छल, तेना बनि गेल आ पानि फूलि गेल आ उठि गेल जाबत धरि ओहि भेड़िया सभ केँ झाँपि नहि देलक।
27. हम देखलहुँ जाबत धरि ओहि भेँड़ा सभक पीछा करयवला सभ भेड़िया नष्ट नहि भ' गेल आ डूबि गेल।

28-40 के अनुसार। मरुस्थल मे इजरायल, कानून देब, फिलिस्तीन मे प्रवेश।

28. मुदा बरद सभ ओहि पानि सँ बचि गेल आ एकटा जंगल मे चलि गेल, जतय पानि नहि छल आ घास नहि छल। ओ सभ आँखि खोलय लगलाह आ देखय लगलाह। हम देखलहुँ जे बरद सभक प्रभु ओकरा सभ केँ चराबैत आ पानि आ घास-पात दैत अछि आ ओ भेँड़ा सभ ओकरा सभ केँ जा कऽ आगू बढ़बैत अछि।
29. ओ बरद ओहि ऊँच चट्टानक चोटी पर चढ़ि गेल आ भेँड़ा सभक प्रभु ओकरा सभ लग पठौलनि।
30. तकर बाद हम भेँड़ा सभक प्रभु केँ देखलहुँ जे हुनका सभक सोझाँ ठाढ़ छलाह, आ हुनकर रूप पैघ आ भयावह आ भव्य छलनि, आ ओ सभ भेँड़ा हुनका देखि हुनकर मुँहक सोझाँ भयभीत भ' गेलाह।
31. ओ सभ हुनका कारणेँ डेरा गेल आ काँपि उठल आ ओ सभ ओहि भेँड़ा केँ जे ओकरा सभक बीच मे छल, ओकरा पुकारैत कहलक: "हम सभ अपन प्रभुक सोझाँ ठाढ़ नहि भ' सकैत छी आ ने हुनका देखि सकैत छी।"
32. ओ बरद जे ओकरा सभ केँ फेर सँ लऽ गेल छल, ओ ओहि चट्टानक चोटी पर चढ़ि गेल, मुदा बरद सभ आन्हर भऽ गेल आ ओहि बाट सँ भटकय लागल जे ओ ओकरा सभ केँ देखौने छलाह, मुदा ओ बरद सभ एहि बातक जानकारी नहि रखैत छल।
33. भेँड़ा सभक प्रभु ओकरा सभ पर बहुत क्रोधित भ' गेलाह, आ ओ भेँड़ा सभ ओकरा सभ केँ पाबि लेलक आ चट्टानक चोटी सँ नीचाँ उतरि गेल आ भेँड़ा सभक लग आबि गेल आ ओकरा सभक अधिकांश भाग आन्हर भ' क' खसि पड़ल।
34. जखन ओ सभ एकरा देखि ओकरा देखि डरा गेल आ काँपि उठल आ अपन गुच्छा मे घुरि जेबाक इच्छा केलक।
35. ओ भेँड़ा अपन संग आन भेँड़ा सभ केँ लऽ कऽ ओहि भेँड़ा सभ लग आबि गेल जे खसि पड़ल छल आ ओकरा सभ केँ मारय लागल। बरद सभ ओकर उपस्थिति सँ डेरा गेल आ एहि तरहेँ ओ बरद सभ ओहि भेँड़ा सभ केँ वापस अनलक जे खसि पड़ल छल आ ओ सभ अपन-अपन झुंड मे घुरि गेल।
36. हम एहि दर्शन मे ताबत धरि देखलहुँ जे ओ भेँड़ा मनुख बनि गेल आ भेँड़ा सभक प्रभुक लेल घर बनौलक आ सभटा भेँड़ा केँ ओहि घर मे राखि देलक।
37. हम देखलहुँ जाबत धरि ई भेँड़ा जे ओहि भेँड़ा सभ सँ भेंट करैत छल जे ओकरा सभ केँ लऽ गेल छल, ताबत धरि सुति गेल।
38. तखन ओ भेँड़ा, ओकर सभक सरदार जे मनुख बनि गेल छल, ओकरा सभ सँ हटि गेल आ सुति गेल, आ सभ भेँड़ा ओकरा खोजि कऽ ओकरा पर बहुत कानय लागल।
39. हम देखलहुँ जाबत धरि ओ सभ ओहि भेँड़ाक लेल कानब छोड़ि ओहि पानिक धार केँ पार नहि कऽ गेल, आ ओतहि दुनू भेँड़ा ओहि भेँड़ा सभक स्थान पर अगुआ बनि उठल जे ओकरा सभ केँ लऽ कऽ सुति गेल छल।
40. हम देखलहुँ जाबत धरि भेँड़ा सभ नीक स्थान, आ एकटा सुखद आ गौरवशाली देश मे नहि आबि गेल, आ हम देखलहुँ जाबत ओ भेँड़ा सभ तृप्त नहि भ' गेल। आ ओ घर सुखद भूमि मे हुनका लोकनिक बीच ठाढ़ छल।

41-50 के अनुसार। न्यायाधीशक समयसँ लऽ कऽ मन्दिरक निर्माण धरि।

41. आ कखनो हुनका लोकनिक आँखि खुजि जाइत छलनि, आ कखनो आन्हर भ' जाइत छलनि, जाबत धरि दोसर बरद उठि क' हुनका सभ केँ ल' क' नहि ल' गेलनि आ हुनका सभक आँखि खुजि गेलनि।
42. कुकुर आ लोमड़ी आ जंगली सुअर सभ ओहि भेँड़ा सभ केँ खाय लागल जाबत धरि भेँड़ा सभक प्रभु ओकरा सभक बीच सँ एकटा मेढ़ा एकटा आओर भेँड़ा नहि उठौलनि जे ओकरा सभ केँ लऽ गेल।

43. ओ मेढ़ा ओहि कुकुर, लोमड़ी आ जंगली सुअर सभ कैँ दुनू कात ताबत धरि मारय लागल जाबत धरि ओ सभटा कैँ नष्ट नहि क' देलक।
44. ओ भेँड़ा जकर आँखि खुजल छल, ओहि मेढ़ा कैँ देखलक जे भेँड़ा सभक बीच मे छल, जाबत ओ अपन महिमा नहि छोड़ि ओहि भेँड़ा सभ कैँ मारय लागल आ ओकरा सभ कैँ रौंदय लागल आ अयोग्य व्यवहार नहि केलक।
45. भेँड़ा सभक प्रभु मेमना कैँ दोसर मेमना लग पठौलनि आ ओकरा ओहि मेढ़क बदला मे मेढ़ा आ भेँड़ाक सरदार बना देलनि जे अपन महिमा छोड़ि देने छल।
46. ओ ओकरा लग जा क' असगरे ओकरा सँ गप्प क' क' ओकरा मेढ़ा बना क' ओकरा भेँड़ाक मुखिया आ सरदार बना देलकैक। मुदा एहि सभ समय मे ओ कुकुर सभ बरद सभ पर अत्याचार करैत छल।
47. पहिल मेढ़ ओहि दोसर मेढ़क पाछाँ लागि गेल, आ ओ दोसर मेढ़ उठि कऽ ओकरा आगू सँ भागि गेल। आ हम देखलहुँ जाबत ओ कुकुर सभ पहिल मेढ़ा कैँ खसि नहि देलक।
48. ओ दोसर मेढ़ा उठि कऽ छोटका बरद सभ कैँ लऽ गेल।
49. ओ बरद सभ बढ़ैत गेल आ बढ़ैत गेल। मुदा सभ कुकुर, लोमड़ी आ जंगली सुअर सभ डरैत-डरैत ओकरा आगू सँ भागि गेल, आ ओ मेढ़ा जंगली जानवर सभ कैँ मारि क' मारि देलक, आ ओहि जंगली जानवर सभ कैँ आब भेँड़ा मे कोनो अधिकार नहि छलैक आ ओकरा सभ सँ आब कोनो हक नहि लूटि लेलक। ओ मेढ़क बहुत रास बरदक जन्म भेल आ सुति गेल। ओकर बदला मे एकटा छोट भेड़ मेढ़ा बनि गेल आ ओहि भेँड़ा सभक राजकुमार आ सरदार बनि गेल।
50. ओ घर पैघ आ चौड़ा भ' गेल, आ ओहि भेँड़ा सभक लेल बनल छल, आ घर पर भेँड़ा सभक प्रभुक लेल एकटा ऊँच-ऊँच पैघ बुर्ज बनल छल, आ ओ घर नीचाँ छल, मुदा बुर्ज ऊँच आ ऊँच छल, आ भेँड़ा सभक प्रभु ओहि बुर्ज पर ठाढ़ भ' गेलाह आ ओ सभ हुनका सोझाँ भरि टेबुल चढ़ा देलनि।

51-67 के अनुसार। इस्राएल आ यहूदा के दू राज्य, यरूशलेम के विनाश तक।

51. हम फेर ओहि भेँड़ा सभ कैँ देखलहुँ जे ओ सभ फेर सँ भटकि कऽ बहुत रास भऽ गेल आ अपन घर छोड़ि देलक, आ भेँड़ा सभक प्रभु भेँड़ा सभक बीच सँ किछु गोटे कैँ बजा कऽ भेँड़ा सभ लग पठौलनि, मुदा बरद सभ ओकरा सभ कैँ मारय लागल।
52. एक गोटे उद्धार भऽ गेलाह आ ओ नहि मारल गेलाह आ ओ भेँड़ा सभ पर जोर-जोर सँ चिचिया उठल। ओ सभ ओकरा मारबाक प्रयास केलक, मुदा भेँड़ा सभक प्रभु ओकरा भेँड़ा सभ सँ बचा कऽ हमरा लग आनि देलक आ ओकरा ओतहि रहय देलक।
53. आओर बहुत रास भेँड़ा सभ कैँ ओ ओहि भेँड़ा सभ लग पठौलनि जे ओ सभ ओकरा सभ कैँ गवाही देथिन आ ओकरा सभक लेल विलाप करथि।
54. तकर बाद हम देखलहुँ जे जखन ओ सभ प्रभुक घर आ हुनकर बुर्ज कैँ छोड़ि देलनि तखन ओ सभ एकदम खसि पड़लाह आ हुनकर सभक आँखि आन्हर भ' गेलनि। आ हम भेँड़ा सभक प्रभु कैँ देखलहुँ जे कोना ओ ओकरा सभक बीच ओकर सभक झुंड मे बहुत वध कयलनि जाबत धरि ओ भेँड़ा सभ ओहि वध कैँ आमंत्रित नहि क' देलक आ अपन स्थान पर विश्वासघात नहि क' देलक।
55. ओ ओकरा सभ कैँ सिंह आ बाघ, भेड़िया आ हाइना आ लोमड़ी आ सभ जंगली जानवरक हाथ मे सौंप देलनि आ ओ जंगली जानवर सभ ओहि भेँड़ा सभ कैँ टुकड़ा-टुकड़ा करय लागल।
56. हम देखलहुँ जे ओ ओकर घर आ ओकर बुर्ज छोड़ि सभटा सिंहक हाथ मे दऽ देलक, जे ओकरा सभ कैँ नोचि कऽ खा जाय, सभ जंगली जानवरक हाथ मे।
57. हम अपन समस्त शक्ति सँ जोर-जोर सँ चिचियाबय लगलहुँ, आ भेँड़ाक प्रभु सँ आग्रह करय लगलहुँ, आ भेँड़ाक संबंध मे हुनका प्रतिनिधित्व करय लगलहुँ जे ओकरा सभ जंगली जानवर खा गेल छल।
58. मुदा ओ अचंभित रहलाह, यद्यपि ओ ई देखलनि, आ प्रसन्न भेलाह जे ओ सभ खा गेल आ निगल गेल आ लूटि लेल गेल आ सभ जानवरक हाथ मे खाय लेल छोड़ि देल गेल।
59. ओ सत्तरि चरबाह कैँ बजौलनि, आ ओहि भेँड़ा सभ कैँ ओकरा सभ लग फेकि देलनि जाहि सँ ओ सभ ओकरा चरा सकय, आ ओ चरबाह सभ आ ओकर संगी सभ कैँ कहलथिन: "अहाँ सभ मे सँ प्रत्येक व्यक्ति आब सँ भेँड़ा कैँ चराबऽ दियौक, आ जे किछु हम अहाँ सभ कैँ आज्ञा देब जे अहाँ सभ करू।"
60. हम ओकरा सभ कैँ अहाँ सभक हाथ मे सौंपि देब, जकरा उचित गणना कयल जाय, आ अहाँ सभ कैँ कहि देब जे ओकरा सभ मे सँ कोन-कोन नष्ट होमय बला अछि--आ अहाँ सभ ओकरा सभ कैँ नष्ट करू।"
61. ओ दोसर कैँ बजा कऽ कहलथिन, "चरबाह सभ ओहि भेँड़ा सभक संग जे किछु करत, ओकर पालन करू आ चिन्हित करू।
।
63. आ हमरा सोझाँ संख्या मे पढ़ू जे ओ सभ कतेक कैँ नष्ट करैत छथि आ कतेक कैँ विनाशक लेल सौंपैत छथि, जाहि सँ हमरा ई बात हुनका सभक विरुद्ध गवाही बनि जाय आ चरबाह सभक हरेक काज कैँ जानि सकब, जाहि सँ हम बुझि सकब आ देखि सकब जे ओ सभ की करैत छथि, की ओ सभ हमर आज्ञाक पालन करैत छथि वा नहि।
64. मुदा ओ सभ एकरा नहि जनत, आ अहाँ ओकरा सभ कैँ ई बात नहि सुनब, आ ने ओकरा सभ कैँ उपदेश देब, बल् कि मात्र एक-एक व्यक्तिक विरुद्ध ओहि सभ विनाशक दर्जा देब जे चरबाह सभ अपन-अपन समय मे करैत छथि आ सभटा हमरा सोझाँ राखि देब।"
65. हम देखलहुँ जे जाबत ओ चरबाह सभ अपन समय मे चरबाह नहि करैत छल, आ ओ सभ जे बेसी कहल गेल छल, ताहि सँ बेसी मारय लागल आ ओकरा सभ कैँ नष्ट करय लागल आ ओ सभ ओहि भेँड़ा सभ कैँ सिंह सभक हाथ मे सौंप देलक।
66. सिंह आ बाघ ओहि बरदक अधिकांश भाग कैँ खा कऽ खा गेल आ जंगली सुअर सेहो ओकरा सभक संग खाइत अछि। ओ सभ ओहि बुर्ज कैँ जरा देलक आ ओहि घर कैँ तोड़ि देलक।
67. आ हम ओहि बुर्ज पर अत्यधिक दुखी भ' गेलहुँ, कारण ओ बरदक घर तोड़ि देल गेल छल, आ तकर बाद हम ई नहि देखि सकलहुँ जे ओ बरद सभ ओहि घर मे प्रवेश करैत अछि कि नहि।

68-71 के अनुसार। स्वर्गदूत शासक के पहिल काल--यरूशलेम के विनाश स ल क बंदी स वापसी तक।

68. चरबाह आ ओकर संगी सभ ओहि भेँड़ा सभ केँ सभ जंगली जानवर सभ केँ खाय लेल सौंप देलक आ ओकरा सभ मे सँ प्रत्येक केँ अपन समय मे एकटा निश्चित संख्या भेटलैक।
69. एक-एक गोटे निर्धारित सँ बेसी कतेको केँ मारि कऽ नष्ट कऽ देलक। हम ओहि भेँड़ा सभक कारणेँ कान' आ विलाप करय लगलहुँ।
70. एहि तरहेँ हम ओहि दर्शन मे देखलहुँ जे लिखैत छल जे कोना ओ ओहि चरबाह सभ द्वारा नष्ट कयल गेल सभ केँ दिन-प्रतिदिन लिखि दैत छल आ भेँड़ा सभक प्रभु केँ पूरा पुस्तक केँ ऊपर लऽ कऽ बिछा देलक आ वास्तव मे देखा देलक--एतय धरि जे ओ सभ जे किछु केलक, आ सभ किछु जे ओकरा सभ मे सँ एक-एक गोटे केँ दूर कयल गेल छल, आ सभ किछु जे ओ सभ विनाशक लेल सौंपने छल।
71. ओ किताब बरदक प्रभुक समक्ष पढ़ल गेल, आ ओ अपन हाथ सँ पोथी लऽ कऽ पढ़ि कऽ ओकरा पर मोहर लगा कऽ राखि देलक।

72-77 के अनुसार। दोसर काल--कोरसक समयसँ लऽ कऽ सिकन्दर महानक समय धरि।

72. तुरन्त हम देखलहुँ जे कोना चरबाह सभ बारह घंटा धरि चरबाह करैत रहलाह, आ देखलहुँ जे ओहि मे सँ तीनटा भेँड़ा पाछू घुमि कऽ आबि कऽ भीतर आबि गेल आ ओहि घरक सभटा खसल चीजक निर्माण करय लागल। मुदा जंगली सुअर सभ ओकरा सभकेँ बाधित करबाक प्रयास केलक, मुदा ओ सभ बाधा नहि पहुँचि सकल।
73. ओ सभ फेर सँ पहिने जकाँ निर्माण करय लगलाह आ ओहि बुर्ज केँ ठाढ़ कयलनि आ ओकर नाम ऊँच बुर्ज राखल गेल। ओ सभ फेर सँ बुर्जक आगू मे टेबुल राखय लगलाह, मुदा ओहि परक सभटा रोटी दूषित छल आ शुद्ध नहि छल।
74. एहि सभ विषय मे ओहि भेँड़ा सभक आँखि आन्हर भ' गेल जे ओ सभ नहि देखि सकल, आ ओकर चरबाह सभक आँखि सेहो तहिना। ओ सभ ओकरा सभ केँ भारी संख्या मे विनाशक लेल अपन चरबाह सभक हाथ मे सौंप देलक आ ओ सभ भेँड़ा सभ केँ पएर सँ रौंद कऽ खा गेल।
75. भेँड़ा सभक प्रभु ताबत धरि अचल रहलाह जाबत धरि सभ बरद खेत मे तितर-बितर नहि भ' गेल आ ओकरा सभक संग घुलि-मिलि नहि गेल, आ ओ सभ ओकरा सभ केँ जानवरक हाथ सँ नहि बचा सकल।
76. आ ई जे किताब लिखने छल, ओकरा लऽ कऽ भेँड़ा सभक प्रभुक समक्ष देखौलक आ पढ़लक, आ ओकरा सभक कारणेँ हुनका सँ विनती केलक, आ हुनका सभक कारणेँ हुनका सँ विनती केलक जेना ओ ओकरा चरबाह सभक सभ काज देखौलक आ सभ चरबाह सभक विरुद्ध अपन समक्ष गवाही देलक।
77. ओ वास्तविक पोथी लऽ कऽ अपन बगल मे राखि कऽ चलि गेलाह।

अध्याय 90

१-५ के अनुसार। तेसर काल--अलेक्जेंडर महान सँ ग्रीक-सीरियाई वर्चस्व धरि।

1. हम देखलहुँ जे एहि तरहेँ पैंतीस चरबाह बरदक चरबाही मे काज केलनि आ ओ सभ कतेको बेर अपन कालखंड पूरा कयलनि जेना पहिलुका सभ केने छलाह। आ दोसर लोक सभ ओकरा सभ केँ अपन-अपन समय मे चरबा लेल अपन हाथ मे ग्रहण कयलक, प्रत्येक चरबाह अपन-अपन समय मे।
2. तकर बाद हम अपन दर्शन मे स्वर्गक सभ चिड़ै, गरुड़, गिद्ध, पतंग, काग, आबि रहल देखलहुँ। मुदा गरुड़ सभ चिड़ै सभक नेतृत्व करैत छल। ओ सभ ओहि बरद सभ केँ खाय लागल आ ओकर सभक आँखि चुनि कऽ ओकर मांस खाय लागल।
3. बरद सभ चिड़ै सभक मांस खा गेलाक कारणेँ चिचिया उठल आ हम नींद मे ओहि चरबाह केँ देखलहुँ आ विलाप करैत छलहुँ जे बरद सभ केँ चराबैत छल।
4. हम देखलहुँ जाबत धरि ओ बरद सभ कुकुर आ गरुड़ आ पतंग नहि खा गेल आ ने मांस ओकरा सभ पर ने मांस छोड़ि देलकैक आ ने चमड़ा आ ने नस, जाबत धरि ओकर हड्डी मात्र ठाढ़ नहि भ' गेलैक।
5. आ हम देखलहुँ जाबत तेइस गोटे चारागाह नहि लेलक आ अपन कतेको कालखंड मे अड़वन बेर पूरा नहि क' लेलक।

6-12 के अनुसार। चारिम काल--ग्रीक-सीरियाई वर्चस्व स ल कए मक्काबियन विद्रोह तक।

6. मुदा देखू, ओ सभ उज्जर भेँड़ा सभ मेमना सभ केँ लऽ गेल छल आ ओ सभ आँखि खोलय लागल आ देखय लागल आ भेँड़ा सभ केँ कानय लागल।
7. हँ, ओ सभ ओकरा सभ केँ चिचिया उठल, मुदा ओ सभ ओकरा सभक बात नहि सुनलक, बल् कि ओ सभ बेसी बहीर भऽ गेल आ ओकर सभक आँखि बहुत बेसी आन्हर भऽ गेल।
8. हम दर्शन मे देखलहुँ जे कोना काग सभ ओहि मेमना सभ पर उड़ि गेल आ ओहि मेमना सभ मे सँ एकटा मेमना केँ लऽ कऽ भेँड़ा सभ केँ टुकड़ा-टुकड़ा कए खा गेल।
9. हम देखलहुँ जाबत धरि ओहि मेमना सभ पर सींग नहि बढ़ल आ काग सभ अपन सींग खसा देलक। हम देखलहुँ जे ओहि मे सँ एकटा भेँड़ाक एकटा पैघ सींग अंकुरित नहि भेल आ ओकर सभक आँखि खुजि गेल।
10. ओ ओकरा सभ दिस तकलक आ ओकर सभक आँखि खुजि गेल, आ ओ बरद सभ केँ चिचिया उठल, आ मेढ़ा सभ ओकरा देखि सभ दौड़ि कऽ ओकरा लग आबि गेल।
11. एहि सभक बादो ओ गरुड़ आ गिद्ध आ काग आ पतंग एखनो बरद सभकेँ नोचैत रहल आ ओकरा सभ पर दौड़ि कऽ खाइत रहल।
12. ओ काग सभ ओकरा संग लड़ैत आ लड़ैत छल आ ओकर सींग नीचाँ उतारबाक प्रयास करैत छल, मुदा ओकरा सभ पर ओकरा सभक कोनो अधिकार नहि छलैक।

13-19 के अनुसार। यहूदी पर गैर-यहूदी सभक अंतिम हमला (जतय 13-15 आ 16-18 डबलट अछि)।

.
14. हम ताबत धरि देखलहुँ जे ओ आदमी जे चरबाह सभक नाम लिखि कऽ भेँड़ा सभक प्रभुक सान्निध मे लऽ गेल छल, आबि कऽ ओकर सहायता केलक आ ओकरा सभ किछु देखा देलक।
15. हम देखलहुँ जाबत धरि भेँड़ा सभक प्रभु क्रोध मे हुनका सभक लग नहि आबि गेलाह, आ हुनका देखनिहार सभ भागि गेलाह आ सभ हुनकर मुँह सँ हुनकर छाया मे खसि पड़लाह।
16. सभ गरुड़ आ गिद्ध आ काग आ पतंग एक ठाम जमा भ' गेल छल, आ ओकरा सभक संग खेतक सभ भेँड़ा सेहो आबि गेल छल, हँ, सभ एक संग आबि मेढ़क ओहि सींग कैँ तोड़बा मे एक-दोसर कैँ मददि केलक।
17. हम ओहि आदमी कैँ देखलहुँ जे प्रभुक आज्ञाक अनुसार पोथी लिखलक, जाबत धरि ओ ओहि बारह अंतिम चरबाह द्वारा कयल गेल विनाशक विषय मे ओहि पुस्तक कैँ नहि खोललक आ ई देखा देलक जे ओ सभ अपन पूर्ववर्ती सभ सँ बहुत बेसी विनाश केने छल, भेँड़ा सभक प्रभुक समक्ष।
18. हम देखलहुँ जाबत धरि भेँड़ा सभक प्रभु ओकरा सभक लग आबि अपन क्रोधक लाठी हाथ मे लऽ कऽ धरती कैँ मारि देलक आ धरती फाटि गेल आ सभटा जानवर आ आकाशक सभ चिड़ै ओहि भेँड़ा सभक बीच सँ खसि पड़ल आ धरती मे निगल गेल आ ओ ओकरा सभ कैँ झाँपि देलक।
19. हम देखलहुँ जाबत धरि बरद सभ कैँ एकटा पैघ तलवार नहि देल गेल, आ बरद सभ ओकरा सभ कैँ मारबाक लेल खेतक सभ जानवर सभक विरुद्ध आबि गेल आ आकाशक सभ जानवर आ चिड़ै सभ ओकरा सभक सोझाँ भागि गेल।

20-27 के अनुसार। पतित स्वर्गदूत, चरबाह आ धर्मत्यागी सभक न्याय।

20. हम देखलहुँ जाबत धरि सुखद भूमि मे एकटा सिंहासन नहि ठाढ़ भ' गेल, आ भेँड़ाक मालिक स्वयं ओहि पर बैसलाह, आ दोसर मुहर लगाओल किताब सभ लऽ कऽ ओहि पुस्तक सभ कैँ भेँड़ा सभक प्रभुक समक्ष खोलि देलक।
21. प्रभु ओहि सात गोट पहिल गोर लोक कैँ बजा कऽ आज्ञा देलथिन जे ओ सभ पहिल तारा सँ शुरू भ' क', जे सभ तारा सभक गुप्त अंग घोड़ाक समान छल, ओकरा सभ कैँ अपना सोझाँ अनलनि।
.
23. देखू, सभ बान्हल छल, हम देखलहुँ, आ सभ हुनका सोझाँ ठाढ़ छल।
24. पहिने तारा सभक न् याय भेल आ ओ सभ दोषी पाओल गेल आ दोषी ठहराओल गेल आ ओ सभ आगि आ ज्वालामुखी सँ भरल आ आगि केर खंभा सँ भरल खाधि मे फेकि देल गेल।
25. ओहि सत्तरि चरबाह पर न्याय कयल गेल आ दोषी पाओल गेल आ ओ सभ ओहि आगि सन खाई मे फेकि देल गेल।
26. हम ओहि समय देखलहुँ जे कोना पृथ्वीक बीच मे आगि सँ भरल एकटा एहने खाई खुजल छल आ ओ सभ ओहि आन्हर भेँड़ा सभ कैँ आनि देलक आ सभ कैँ दोषी ठहराओल गेल आ ओकरा सभ कैँ दोषी पाओल गेल आ एहि आगि सँ भरल खाई मे फेकि देल गेल आ ओ सभ जरि गेल। आब ई खाई ओहि घरक दहिना कात छल।
27. हम ओहि बरद सभ कैँ जरैत आ ओकर हड्डी जरि रहल देखलहुँ।

28-38 के अनुसार। नया यरूशलेम, जीवित गैर-यहूदी के धर्मांतरण, धर्मी के पुनरुत्थान, मसीह।

28. हम ठाढ़ भऽ गेलहुँ जे जाबत ओ सभ ओहि पुरान घर कैँ मोड़ि नहि देलक। ओ सभ खंभा सभ कैँ लऽ कऽ चलि गेल, आ घरक सभटा बीम आ आभूषण सभ एकहि संग ओहि मे मोड़ि देल गेल आ ओ सभ ओकरा लऽ कऽ देशक दक्षिण मे एक ठाम राखि देलक।
29. हम देखलहुँ जाबत धरि भेँड़ाक मालिक पहिल घर सँ पैघ आ ऊँच नव घर अनलनि आ ओकरा पहिल घरक स्थान पर ठाढ़ कयलनि जाहि मे बीयर मोड़ल गेल छल, ओकर सभटा खंभा नव छल, आ ओकर आभूषण पहिल खंभा सँ नव आ पैघ छल, पुरान जे ओ छीनि लेने छलाह, आ ओकर भीतर सभटा भेड़ छल।
30. हम देखलहुँ जे सभटा भेँड़ा जे बचल छल, पृथ् वी पर सभटा जानवर आ आकाशक सभ चिड़ै सभ खसि पड़ैत छल आ ओहि भेँड़ा सभक श्रद्धांजलि दैत छल आ सभ बात मे हुनका सभक लेल निहोरा करैत छल आ ओकर आज्ञा मानैत छल।
31. तकर बाद जे तीनू गोटे उज्जर कपड़ा पहिरने छलाह आ हमरा हाथ सँ पकड़ि लेने छलाह जे हमरा पहिने उठौने छल आ ओहि मेढ़क हाथ सेहो हमरा पकड़ने छल, ओ सभ हमरा उठा कऽ ओहि भेँड़ा सभक बीच मे बैसा देलक, जखन कि न्याय होबय सँ पहिने।
32. ओ बरद सभ उज्जर छल, ओकर ऊन प्रचुर आ साफ छल।
33. ओहि घर मे जे सभ नष्ट आ तितर-बितर भ' गेल छल, खेतक सभ जानवर आ आकाशक सभ चिड़ै सभ ओहि घर मे जमा भ' गेल, आ भेँड़ा सभक मालिक बहुत हर्षित भ' गेलाह, किएक त' ओ सभ नीक छल आ अपन घर वापस आबि गेल छल।
34. हम देखलहुँ जाबत धरि ओ सभ ओहि तलवार कैँ नहि राखि देलक जे भेँड़ा सभ कैँ देल गेल छलैक आ ओकरा सभ कैँ घर मे वापस नहि आनि देलक आ प्रभुक सोझाँ ओकरा पर मोहर लगा देल गेलैक आ सभ भेँड़ा सभ कैँ ओहि घर मे बजाओल गेलैक, मुदा ओ सभ ओकरा सभ कैँ नहि पकड़लकै।
35. हुनकर सभक आँखि खुजि गेलनि आ ओ सभ नीक चीज देखलनि, मुदा हुनका सभ मे कियो एहन नहि छल जे नहि देखितथि।
36. हम देखलहुँ जे ओ घर पैघ आ चौड़ा आ बहुत भरल छल।
37. हम देखलहुँ जे एकटा उज्जर बैलक जन्म भेल, जकर सींग पैघ-पैघ छल आ खेतक सभ जानवर आ हवाक सभ चिड़ै ओकरा सँ डरैत छल आ ओकरा सँ हरदम निहोरा करैत छल।
38. हम देखलहुँ जाबत धरि ओकर सभक पीढ़ी बदलि नहि गेल आ सभ उज्जर बैल बनि गेल। ओहि मेमना मे पहिल मेमना बनि गेल, आ ओ मेमना एकटा पैघ जानवर बनि गेल आ माथ पर पैघ-पैघ कारी सींग छल। बरदक मालिक ओकरा आ सभ बैल पर आनन्दित भ' गेलाह। 39. हम हुनका सभक बीच मे सुति गेलहुँ, आ हम जागि गेलहुँ आ सभ किछु देखलहुँ।
40. ई ओ दर्शन अछि जे हम सुतल काल देखलहुँ, आ हम जागि गेलहुँ आ धर्मक प्रभु कैँ आशीर्वाद देलहुँ आ हुनका महिमा देलियनि।

41. तखन हम बहुत कानैत कानलहुँ आ हमर नोर ताबत धरि नहि रुकल जाबत धरि हम आब सहन नहि क’ सकलहुँ। किएक तँ सभ किछु आबि कऽ पूरा भऽ जाएत आ मनुष् य सभक सभ काज अपन-अपन क्रम मे हमरा देखाओल गेल।
42. ओहि राति हमरा पहिल सपना मोन पड़ल, आ ताहि कारणे हम कानलहुँ आ परेशान भ' गेलहुँ--कारण हम ओ दर्शन देखने रही।'

अध्याय 91

1. 'आ आब, हमर बेटा मथुसेल, अपन सभ भाइ कैँ हमरा लग बजाउ, आ अपन मायक सभ बेटा कैँ हमरा लग जमा करू। कारण, वचन हमरा बजबैत अछि, आ हमरा पर आत् मा उझलि गेल अछि, जाहि सँ हम अहाँ सभ कैँ ओ सभ किछु देखा सकब जे अहाँ सभक संग अनन्त काल धरि होयत।'
2. मथुसेला जा कऽ अपन सभ भाय कैँ बजा कऽ अपन परिजन कैँ जमा कऽ लेलक।
3. ओ सभ धर्मक सन्तान सभ कैँ कहलथिन, ‘हे हनोकक पुत्र सभ, अपन पिताक सभ बात सुनू, आ हमर मुँहक आवाज कैँ ठीक सँ सुनू। हम अहाँ सभ कैँ आग्रह करैत छी आ अहाँ सभ कैँ कहैत छी जे, “सद्भावना सँ प्रेम करू आ ओहि मे चलू।”
4. आ दोह हृदय सँ सोझताक नजदीक नहि आऊ, आ दोह हृदयक संग संगति नहि करू, बल् कि हमर बेटा सभ, धर्म मे चलू। आ नीक बाट पर मार्गदर्शन करत, आ धर्म अहाँक संगी बनत।
5. हम जनैत छी जे पृथ्वी पर हिंसा बढ़बाक चाही, आ पृथ्वी पर एकटा पैघ दण्ड देबाक चाही, आ सभ अधर्मक अंत भ' जायत: हँ, ओ अपन जड़ि सँ काटि जायत, आ ओकर समस्त संरचना नष्ट भ' जायत।
6. आ अधर्म फेर सँ पृथ्वी पर समाप्त भ’ जायत, आ अधर्म आ हिंसाक सब काज, आ अपराध दू तरहक हावी होयत।
7. जखन पाप आ अधर्म आ निन्दा, आ सभ तरहक काज मे हिंसा बढ़त, आ धर्मत्याग आ अपराध आ अशुद्धता बढ़त, तखन एहि सभ पर स्वर्ग सँ पैघ दण्ड आओत, आ पवित्र प्रभु पृथ्वी पर न्याय करबाक लेल क्रोध आ दण्डक संग बाहर आबि जेताह।
8. ओहि दिन मे हिंसा अपन जड़ि सँ काटि देल जायत, आ अधर्मक जड़ि धोखाक संग, आ स्वर्गक नीचा सँ नष्ट भ' जायत।
9. आ जाति-जातिक सभ मूर्ति छोड़ि देल जायत, आ मन्दिर आगि सँ जरि जायत, आ ओकरा सभ कैँ समस्त धरती सँ हटा देत, आ आगि केर न्याय मे फेकल जायत, आ क्रोध मे आ कठोर न्याय मे अनन्त काल धरि नष्ट भ’ जायत।
10. धर्मी लोकनि अपन नींद सँ उठि जेताह, आ बुद्धि उठि कऽ हुनका सभ कैँ देल जायत।
11. तकर बाद अधर्मक जड़ि कटल जायत, आ पापी सभ तलवार सँ नष्ट भ’ जायत। . . सभ ठाम निन्दा करयवला सभ सँ काटि देल जायत, आ जे हिंसाक योजना बनौनिहार आ निन्दा करयवला लोक तलवार सँ नष्ट भ' जायत।
12. तकर बाद एकटा आओर, आठम सप्ताह, धार्मिकताक, आ ओकरा तलवार देल जायत जाहि सँ अत्याचारी सभ पर धार्मिक न्याय कयल जाय, आ पापी सभ धर्मी सभक हाथ मे सौंपल जायत।
13. आ एकर समापन मे ओ सभ अपन धार्मिकताक कारणेँ घर प्राप्त करत, आ महान राजाक लेल एकटा घर सदाक लेल महिमा मे बनत।
14. आ सभ मनुष्य सोझताक बाट दिस तकत। आ तकर बाद नवम सप्ताह मे धर्म-न्याय पूरा संसार मे प्रगट होयत, आ अभक्तक सभ काज पूरा पृथ्वी सँ विलुप्त भ' जायत, आ संसार विनाशक लेल लिखल जायत।
15. एकर बाद सातम भाग मे दसम सप्ताह मे, महान अनन्त न्याय होयत, जाहि मे ओ स्वर्गदूत सभक बीच प्रतिशोध करत।
16. आ पहिल आकाश चलि जायत आ बीति जायत, आ एकटा नव आकाश प्रकट होयत, आ आकाशक सभ शक्ति सात गुना प्रकाश देत।
17. आ तकर बाद अनन्त काल धरि बहुत रास सप्ताह अनगिनत रहत, आ सभ नीक आ धार्मिकता मे रहत, आ पापक चर्चा आब अनन्त काल धरि नहि होयत।
18. आब हम अहाँ सभ कैँ कहैत छी, हमर बेटा सभ, आ अहाँ सभ कैँ धार्मिकताक बाट आ हिंसाक बाट देखाबैत छी। हँ, हम ओकरा सभ कैँ फेर सँ देखा देब, जाहि सँ अहाँ सभ कैँ बुझल रहय जे की होयत।
19. आब, हमर बेटा सभ, हमर बात सुनू, आ धर्मक बाट पर चलू, आ हिंसाक बाट पर नहि चलू। किएक तँ अधर्मक बाट पर चलनिहार सभ अन्तकाल लेल नाश भऽ जाएत।’

अध्याय 92

1. हनोक द्वारा लिखल गेल पुस्तक--हनोक वास्तव मे ई पूर्ण बुद्धिक सिद्धांत लिखने छथि, जे सभ मनुष्य द्वारा प्रशंसित अछि आ हमर सभ संतानक लेल जे पृथ्वी पर रहत, ताहि लेल समस्त पृथ्वीक न्यायाधीश अछि। आ आगामी पीढ़ी लेल जे सोझ आ शांति के पालन करत।
2. समयक कारणेँ अहाँक आत् मा परेशान नहि होउ। कारण पवित्र आ महान परमेश् वर सभ किछुक लेल दिन निर्धारित कयलनि अछि।
3. आ धर्मी निन्नसँ उठत, उठि कऽ धर्मक बाटमे चलत, आ ओकर सभ बाट आ गप्प-सप्प अनन्त भलाई आ कृपामे रहत।
4. ओ धर्मी पर कृपा करताह आ ओकरा अनन्त सोझता देताह, आ ओकरा शक्ति देताह जाहि सँ ओ नीक आ धार्मिकता सँ सम्पन्न होयत। ओ अनन्त इजोत मे चलत।
5. पाप अन्हार मे अनन्त काल धरि नष्ट भऽ जायत, आ ओहि दिन सँ आब अनन्त काल धरि नहि देखल जायत।

अध्याय 93

1. आ तकर बाद हनोक दुनू गोटे देलनि आ किताब सभसँ पुनर्विचार करय लगलाह। हनोक कहलथिन, ‘धर्मक सन्तान आ संसारक चुनल लोक सभक विषय मे, आ सोझताक पौधाक विषय मे हम ई सभ बात कहब, हँ, हम हनोक अहाँ सभ कैँ ई सभ बात कहब, हमर पुत्र सभ।
2. स्वर्गीय दर्शन मे हमरा जे प्रगट भेल छल, आ पवित्र स् वर्गदूत सभक वचन द्वारा हमरा बुझल अछि, आ स्वर्गीय पाटी सभ सँ सीखल गेल अछि।'

3. हनोक पुस्तक सभसँ गप्प करऽ लगलाह आ बजलाह: 'हम पहिल सप्ताहक सातम दिनक जन्म भेलहुँ, जखन कि न्याय आ धार्मिकता एखनो धरि बनल छल।
4. हमरा बाद दोसर सप्ताह मे बहुत पैघ दुष्टता उत्पन्न होयत, आ छल-प्रपंच उत्पन्न होयत। आ ओहि मे पहिल अंत होयत। ओहि मे मनुष्य उद्धार पाओत। एकर समाप्त भेलाक बाद अधर्म बढ़ि जायत, आ पापी सभक लेल एकटा नियम बनाओल जायत।
5. आ तकर बाद तेसर सप्ताह मे ओकर समापन मे, मनुष्य केँ धर्म न्यायक पौधाक रूप मे चुनल जायत, आ ओकर संतान सदाक लेल धर्मक पौधा बनि जायत।
6. आ तकर बाद चारिम सप्ताह मे, ओकर समापन मे, पवित्र आ धर्मी लोकनिक दर्शन देखल जायत, आ सभ पीढ़ीक लेल एकटा नियम आ ओकरा सभक लेल एकटा घेराबंदी बनाओल जायत।
7. ओकर बाद पाँचम सप्ताह मे, ओकर समापन मे, महिमा आ प्रभुत्वक घर अनन्त काल धरि बनत।
8. तकर बाद छठम सप्ताह मे ओहि मे रहनिहार सभ आन्हर भ' जेताह, आ सभक हृदय अभक्तिपूर्वक बुद्धि केँ त्यागि देत। ओहि मे मनुष्य चढ़त। आ ओकर समापन मे प्रभुत्वक घर आगि मे जरि जायत, आ चुनल जड़िक समस्त जाति तितर-बितर भ' जायत।
9. तकर बाद सातम सप्ताह मे एकटा धर्मत्यागी पीढ़ी उठत, आ ओकर काज बहुत होयत, आ ओकर सभ काज धर्मत्यागी होयत।
10. आ एकर समापन मे चुनल जायत, धर्मक अनन्त पौधाक चुनल धर्मी, अपन समस्त सृष्टिक विषय मे सात गुना शिक्षा प्राप्त करबाक लेल।
11. मनुखक सभ संतान मे सँ के अछि जे पवित्र परमेश् वरक आवाज केँ बिना कोनो घबराहटि मे सुनबा मे सक्षम अछि? आ हुनकर विचार के सोचि सकैत अछि? आ के अछि जे स् वर्गक सभ काज देखि सकैत अछि?
12. आ एहन केओ कोना होयत जे स्वर्ग केँ देखि सकैत अछि, आ केओ अछि जे स्वर्गक बात केँ बुझि सकैत अछि आ कोनो आत्मा वा आत्मा केँ देखि सकैत अछि आ ओकर बारे मे कहि सकैत अछि, वा चढ़ि क' ओकर सभ अंत देखि सकैत अछि आ ओकरा सभ केँ सोचि सकैत अछि वा ओकरा सभ जकाँ क' सकैत अछि?
13. सभ मनुष्य मे के एहन अछि जे पृथ्वीक चौड़ाई आ लम्बाई केहन अछि से जानि सकैत छल आ सभक नाप केकरा देखाओल गेल अछि?
14. आकि केओ एहन अछि जे आकाशक लम्बाई आ ओकर ऊँचाई कतेक पैघ अछि, एकर नींव की अछि, आ तारा सभक संख्या कतेक अछि आ सभ ज्योतिष कतय टिकल अछि, से बूझि सकैत छल?

अध्याय 94

1. आब हम अहाँ सभ केँ कहैत छी जे, हमर बेटा सभ, धार्मिकता सँ प्रेम करू आ ओहि मे चलू। कारण धर्मक बाट स्वीकार करबाक योग्य अछि, मुदा अधर्मक बाट अचानक नष्ट भ' जायत आ विलुप्त भ' जायत।
2. एक पीढ़ीक किछु आदमी केँ हिंसा आ मृत्युक बाट प्रगट होयत, आ ओ सभ अपना केँ ओकरा सभ सँ दूर राखत,आ ओकर पाछाँ नहि चलत।
3. आब हम अहाँ सभ केँ धर्मी लोकनि केँ कहैत छी जे, दुष्टताक बाट मे नहि चलू, आ ने मृत्युक बाट पर, आ हुनका सभक नजदीक नहि आउ, जाहि सँ अहाँ सभ नष्ट नहि भ' जायब।
4. मुदा अपना लेल धार्मिकता आ चुनल जीवन केँ खोजू आ चुनू, आ शान्तिक बाट पर चलू, आ अहाँ सभ जीवित रहब आ समृद्ध होयब।
5. आ हमर बात केँ अपन हृदयक विचार मे मजबूती सँ पकड़ू, आ ओकरा अपन हृदय सँ मेटाब नहि दियौक। हम जनैत छी जे पापी लोक सभ केँ बुद्धिक दुष् ट प्रलोभन करबाक लेल प्रलोभन करत, जाहि सँ ओकरा लेल कोनो स्थान नहि भेटय, आ कोनो तरहक परीक्षा कम नहि हो।
6. धिक्कार अछि जे अधर्म आ अत्याचारक निर्माण करैत अछि, आ छल केँ नींव बनबैत अछि। किएक तँ ओ सभ अचानक उखाड़ि देल जेतै, आ ओकरा सभकेँ शान्ति नहि भेटतैक।
7. धिक्कार अछि जे पाप सँ अपन घर बनबैत अछि। कारण, ओ सभ ओकर सभक नींव सँ उखाड़ि देल जायत, आ तलवार सँ ओ सभ खसि पड़त। आ जे सभ न् याय मे सोना-चानीक प्राप्ति करत, से अचानक नष्ट भऽ जायत।
8. हे धनिक, अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, कारण अहाँ सभ अपन धन पर भरोसा केलहुँ, आ अपन धन सँ अहाँ सभ चलि जायब, कारण अहाँ सभ अपन धनक दिन मे परमात्माक स्मरण नहि केलहुँ।
9. अहाँ सभ निन्दा आ अधर्म केलहुँ, आ वधक दिन आ अन्हारक दिन आ महान न्यायक दिन लेल तैयार भऽ गेलहुँ।
10. हम अहाँ सभ केँ एहि तरहेँ बजैत छी आ घोषणा करैत छी जे जे अहाँ सभ केँ बनौने अछि से अहाँ सभ केँ उखाड़ि देत, आ अहाँक पतन पर कोनो करुणा नहि होयत, आ अहाँक सृष्टिकर्ता अहाँक विनाश पर आनन्दित होयत।
11. ओहि दिन मे अहाँक धर्मी लोकनि पापी आ अभक्तक लेल निन्दा होयत।

अध्याय 95

1. जँ हमर आँखि पानिक मेघ बनि गेल रहैत, जाहि सँ हम अहाँ पर कानब, आ अपन नोर केँ पानिक मेघ जकाँ बहा सकितहुँ, जाहि सँ हम अपन हृदयक विपत्ति सँ विश्राम क' सकितहुँ!
2. अहाँ केँ निन्दा आ दुष्टता करबाक अनुमति के देलक अछि? आ एहि तरहेँ अहाँ सभ पापी सभ, अहाँ सभ केँ न् याय आओत।
3. हे धर्मी लोकनि, पापी सभ सँ नहि डेराउ। कारण, प्रभु फेर ओकरा सभ केँ अहाँ सभक हाथ मे सौंपि देथिन, जाहि सँ अहाँ सभ ओकरा सभक इच्छाक अनुसार न् याय करब।
4. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे सभ शापित करैत छी जकरा उल्टा नहि कयल जा सकैत अछि।
5. धिक्कार अहाँ सभ जे अपन पड़ोसी केँ अधलाहक बदला दैत छी। किएक तँ अहाँ सभ केँ अपन काजक अनुसार प्रतिकार कयल जायत।
6. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ झूठ गवाह सभ, आ अन्याय केँ तौलनिहार सभ केँ, कारण अहाँ सभ अचानक नष्ट भऽ जायब।
7. हे पापी सभ, अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, किएक तँ अहाँ सभ धर्मी केँ सताबैत छी। किएक तँ अहाँ सभ अन्यायक कारणेँ सौंपल

जायब आ सताओल जायब, आ एकर जुआ अहाँ सभ पर भारी पड़त।

अध्याय 96

1. हे धर्मी लोकनि, आशा राखू। किएक तँ अहाँ सभक सोझाँ पापी सभ अचानक नाश भऽ जायत, आ अहाँ सभक इच्छानुसार ओकरा सभ पर प्रभुत्व भऽ जायत।"
2. आ पापी सभक क्लेशक दिन अहाँक बच्चा सभ गरुड़ जकाँ चढ़त आ उठत, आ गिद्ध सँ ऊँच अहाँक खोंता होयत, आ अहाँ सभ चढ़ि कऽ पृथ्वीक दरार मे प्रवेश करब, आ चट्टानक दरार सभ अनन्त काल धरि अधर्मी सभक सोझाँ कोनी जकाँ, आ सायरन अहाँ सभक कारणेँ आह भरत-आ कानत।
3. तेँ अहाँ सभ जे कष्ट भोगलहुँ, से नहि डेराउ। कारण, चंगाई अहाँक भाग होयत, आ एकटा तेज इजोत अहाँ सभ केँ रोशन करत, आ अहाँ सभ स् वर्ग सँ विश्रामक आवाज सुनब।
4. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ पापी सभ, अहाँ सभक धन अहाँ सभ केँ धर्मी लोक जकाँ देखाबैत अछि, मुदा अहाँ सभक हृदय अहाँ सभ केँ पापी होयबाक दोषी ठहरबैत अछि, आ ई तथ्य अहाँ सभक दुष्कर्मक स्मरणक लेल अहाँ सभक विरुद्ध गवाही होयत।
5. धिक्कार अहाँ सभ जे गहूमक महीन-महीन खाइत छी, आ पैघ-पैघ बासन मे मदिरा पीबैत छी, आ अपन शक्ति सँ नीच लोक केँ पैर नीचाँ चलैत छी।
6. धिक्कार अहाँ सभ जे सभ झरना सँ पानि पीबैत छी, कारण अहाँ सभ अचानक नष्ट भऽ जायब आ मुरझा जायब, कारण अहाँ सभ जीवनक फव्वारा केँ छोड़ि देलहुँ।
7. धिक्कार अहाँ सभ जे अधर्म करैत छी, आ छल आ निन्दा करैत छी, ई अहाँ सभक विरुद्ध अधलाहक स्मरण होयत।
8. अहाँ सभ पराक्रमी, अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, जे सामर्थ् य सँ धर्मी केँ अत्याचार करैत छी। किएक तँ अहाँक विनाशक दिन आबि रहल अछि। ओहि दिन मे धर्मी लोकक लेल बहुत आ नीक दिन आओत--अहाँ सभक न्यायक दिन।

अध्याय 97

1. हे धर्मी लोकनि, विश्वास करू जे पापी सभ लज्जाजनक बनि जायत, आ अधर्मक दिन मे नाश भ' जायत।
2. अहाँ सभ पापी सभ केँ ई जानि लिअ जे परमेश् वर अहाँ सभक विनाश पर मोन राखैत छथि, आ स् वर्गक स् वर्गदूत सभ अहाँ सभक विनाश पर आनन्दित छथि।
3. हे पापी, अहाँ सभ की करब, आ ओहि न् यायक दिन अहाँ सभ कतय भागब, जखन अहाँ सभ धर्मी सभक प्रार्थनाक आवाज सुनब?
4. हँ, अहाँ सभ हुनका सभक जकाँ रहब, जिनका सभक विरुद्ध ई वचन गवाही होयत: "अहाँ सभ पापी सभक संगी रहलहुँ।"
5. आ ओहि दिन मे धर्मी लोकनिक प्रार्थना प्रभु धरि पहुँचत, आ अहाँ सभक लेल अहाँक न्यायक दिन आओत।
6. आ अहाँक अधर्मक सभटा वचन महान पवित्रक समक्ष पढ़ल जायत, आ अहाँक मुँह लज्जा सँ झाँपल जायत, आ ओ अधर्म पर आधारित हर काज केँ अस्वीकार करताह।
7. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ पापी सभ, जे मध्य समुद्र आ शुष्क भूमि पर रहैत छी, जिनकर स्मरण अहाँ सभक विरुद्ध दुष्ट अछि।
8. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे अधर्म मे चानी आ सोना प्राप्त करैत छी आ कहैत छी: "हम सभ धन-सम्पत्ति सँ धनी भ' गेलहुँ आ सम्पत्ति सेहो अछि; आ सभ किछु प्राप्त क' लेलहुँ जे हमरा सभक इच्छा अछि।"
9. आब हम सभ जे योजना बनौने रही से करू, किएक तँ हम सभ चानी जमा कएने छी, आ हमरा सभक घर मे किसान बहुत अछि।" आ हमर सभक अन्नक भंडार पानि जकाँ भरल अछि।
10. हँ आ पानि जकाँ अहाँक झूठ बहत। किएक तँ अहाँक धन-सम्पत्ति नहि टिकत, बल् कि अहाँ सभ सँ जल्दी-जल्दी चढ़ि जायत। किएक तँ अहाँ सभ अधर्मक कारणेँ ई सभटा प्राप्त कएने छी, आ अहाँ सभ एकटा पैघ अभिशाप मे समर्पित भऽ जायब।

अध्याय 98

1. आब हम अहाँ सभ केँ, बुद्धिमान आ मूर्ख सभक कसम खाइत छी, कारण अहाँ सभ केँ पृथ्वी पर अनेक तरहक अनुभव होयत।
2. किएक तँ अहाँ सभ स्त्रीसँ बेसी श्रृंगार पहिरब, आ कुमारिसँ बेसी रंगीन वस्त्र पहिरब: राजसीता आ भव्यता आ सामर्थ्यमे, आ चानी आ सोना आ बैंगनी रंगक, आ वैभव आ भोजनमे ओ सभ पानि जकाँ उझलि जायत।
3. तेँ ओ सभ शिक्षा आ बुद्धिक अभाव होयत, आ ओ सभ अपन सम्पत्तिक संग एहि तरहेँ नाश भऽ जेताह। आ अपन समस्त वैभव आ वैभवक संग, आ लाज आ वध आ बहुत अभाव मे, हुनका लोकनिक आत्मा आगि केर भट्ठी मे फेकि देल जायत।
4. हम अहाँ सभ केँ शपथ लेने छी, अहाँ सभ, अहाँ सभ पापी सभ, जेना पहाड़ दास नहि बनि गेल अछि, आ पहाड़ी स्त्रीक दासी नहि बनि गेल अछि, तहिना पाप पृथ्वी पर नहि पठाओल गेल अछि, मुदा मनुक्ख स्वयं एकरा बनौने अछि, आ एकरा करयवला सभ एकटा पैघ अभिशाप मे खसि पड़त।
5. आ स्त्री केँ बंजरता नहि देल गेल अछि, मुदा अपन हाथक काजक कारणेँ ओ बिना संतानक मरि जाइत अछि।
6. हम अहाँ सभ, अहाँ सभ पापी सभ, पवित्र महानक नाम सँ शपथ लेने छी जे अहाँ सभक सभटा अधलाह काज स्वर्ग मे प्रगट होयत, आ अहाँ सभक कोनो अत्याचारक काज झाँपल आ नुकायल नहि अछि।
7. आ अपन आत् मा मे ई नहि सोचू आ ने अपन हृदय मे ई कहू जे अहाँ सभ नहि जनैत छी आ ई नहि देखैत छी जे प्रत्येक पाप परमात्माक सान्निध्य मे स् वर्ग मे सभ दिन दर्ज कयल जाइत अछि।
8. आब सँ अहाँ सभ जनैत छी जे अहाँ सभक सभटा अत्याचार जाहि सँ अहाँ सभ अत्याचार करैत छी, से सभ दिन अहाँ सभक न्यायक दिन धरि लिखल जाइत अछि।
9. हे मूर्ख, अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, किएक तँ अहाँ सभक मूर्खता सँ अहाँ सभ नष्ट भऽ जायब, आ अहाँ सभ बुद्धिमान सभक विरुद्ध उल्लंघन करब, आ तेना नीक अहाँ सभक भाग नहि होयत।
10. आब, अहाँ सभ ई जानि लिअ जे अहाँ सभ विनाशक दिनक लेल तैयार छी। किएक तँ अहाँ सभ कोनो फिरौती नहि जनैत छी।

किएक तँ अहाँ सभ महान न् यायक दिनक लेल तैयार छी, अहाँ सभक आत् माक लेल क्लेश आ बहुत लाजक दिनक लेल।
11. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ जिद्दी सभ, जे अधलाह काज करैत छी आ खून खाइत छी। परमेश् वर परमेश् वर पृथ् वी पर जे सभ नीक-नीक वस्तु सभ प्रचुर मात्रा मे राखि देने छथि, ताहि मे सँ। तेँ अहाँ सभ केँ शान्ति नहि भेटत।"
12. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे अधर्मक काज सँ प्रेम करैत छी। ई जानि लिअ जे अहाँ सभ धर्मी लोकक हाथ मे सौंपल जायब, आ ओ सभ अहाँ सभक गरदनि काटि कऽ मारि देत आ अहाँ सभ पर कोनो दया नहि करत।"
13. धिक्कार अहाँ सभ जे धर्मी सभक क्लेश मे आनन्दित छी। किएक तँ अहाँ सभक लेल कोनो कब्र नहि खोदल जायत।
14. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे धर्मी सभक वचन केँ अमान्य करैत छी। किएक तँ अहाँ सभ केँ जीवनक कोनो आशा नहि रहत।"
15. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे झूठ आ अभक्त वचन लिखैत छी। कारण, ओ सभ अपन झूठ लिखि लैत छथि जाहि सँ मनुष् य हुनका सभक बात सुनि सकय आ अपन पड़ोसीक प्रति अभक्तिपूर्वक व्यवहार करथि।
16. तेँ हुनका सभ केँ कोनो शान्ति नहि भेटतनि, मुदा ओ अचानक मृत्यु मे मरि जेताह।

अध्याय 99

1. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे अभक्ति करैत छी, आ झूठ बाजबाक गौरव करैत छी आ हुनकर प्रशंसा करैत छी, अहाँ सभ नाश भऽ जायब, आ अहाँ सभक कोनो सुखद जीवन नहि होयत।
2. धिक्कार अछि ओ सभ जे सोझताक वचन केँ विकृत करैत अछि, आ अनन्त नियमक उल्लंघन करैत अछि, आ अपना केँ ओहि मे बदलि दैत अछि जे ओ सभ पापी नहि छल।
3. हे धर्मी लोकनि, ओहि दिन मे अपन प्रार्थना केँ स्मरणक रूप मे उठेबाक लेल तैयार करू, आ ओकरा स् वर्गदूत सभक समक्ष गवाही जकाँ राखू, जाहि सँ ओ सभ पापी सभक पाप केँ परमात्माक समक्ष स्मरणक रूप मे राखि सकय।
4. ओहि दिन मे जाति सभ हलचल होयत, आ जाति सभक कुल विनाशक दिन उठत।
5. आ ओहि दिन मे निर्धन लोकनि अपन संतान केँ लऽ कऽ चलि जायत, आ ओकरा सभ केँ छोड़ि देत, जाहि सँ ओकर संतान ओकरा सभक माध्यमे नष्ट भ' जायत: हँ, ओ सभ अपन संतान केँ छोड़ि देत जे एखनो दूध पिला रहल अछि, आ ओकरा सभ लग नहि घुरि जायत, आ अपन प्रियजन सभ पर कोनो दया नहि करत।
6. अहाँ सभ पापी सभ, हम फेर सँ कसम खाइत छी जे पाप अविराम खून-खराबाक दिनक लेल तैयार अछि।
7. जे पाथर, सोना-चानी, लकड़ी आ पाथर आ माटिक कब्रक मूर्तिक पूजा करैत छथि, आ जे अशुद्ध आत्मा आ राक्षस आ सभ तरहक मूर्तिक पूजा करैत छथि, जे ज्ञानक अनुसार नहि, हुनका सभ सँ कोनो तरहक सहायता नहि भेटतनि।
8. ओ सभ अपन हृदयक मूर्खताक कारणेँ अभक्त भ' जेताह, आ हृदयक भय सँ आँखि आन्हर भ' जेताह, आ सपना मे दर्शनक कारणेँ।
9. एहि सभक द्वारा ओ सभ अभक्त आ भयभीत भ' जेताह। कारण, ओ सभ अपन सभ काज झूठ मे कऽ लेत, आ पाथरक आराधना कऽ लेत।
10. मुदा ओहि दिन सभ धन्य अछि जे सभ बुद्धिक वचन केँ स्वीकार करैत अछि, आ ओकरा बुझैत अछि, आ परमात्माक बाट केँ पालन करैत अछि, आ हुनकर धार्मिकताक बाट पर चलैत अछि, आ अभक्तक संग अभक्त नहि होइत अछि। किएक तँ ओ सभ उद्धार पाबि लेताह।
11. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे अपन पड़ोसी मे अधलाह पसारैत छी। किएक तँ अहाँ सभ पाताल मे मारल जायब।
12. अहाँ सभ केँ धिक्कार अछि जे धोखा आ मिथ्या नाप करैत छी, आ पृथ् वी पर कटुता पैदा करय बला सभ केँ। कारण, एहि सँ ओ सभ पूर्ण रूप सँ समाप्त भऽ जायत।
13. धिक्कार अहाँ सभ जे दोसरक कष्ट सँ अपन घर बनबैत छी, आ ओकर सभ निर्माण सामग्री पापक ईंट आ पाथर अछि। हम अहाँ सभ केँ कहैत छी जे अहाँ सभ केँ कोनो शान्ति नहि होयत।
14. धिक्कार अछि जे अपन पूर्वजक नाप आ अनन्त धरोहर केँ अस्वीकार करैत अछि, आ जिनकर आत्मा मूर्तिक पाछाँ चलैत अछि। किएक तँ हुनका सभकेँ कोनो विश्राम नहि भेटतनि।
15. धिक्कार अछि ओ सभ जे अधर्म करैत अछि आ अत्याचारक सहायता करैत अछि, आ पैघ न्यायक दिन धरि अपन पड़ोसी केँ मारि दैत अछि।
16. कारण ओ अहाँ सभक महिमा केँ नीचाँ फेकि देत, आ अहाँ सभक हृदय पर क्लेश आनत, आ अपन प्रचंड क्रोध केँ जगौताह, आ अहाँ सभ केँ तलवार सँ नष्ट करत। आ सभ पवित्र आ धर्मी लोक अहाँक पापक स्मरण करत।

अध्याय 100 के अनुसार

1. ओहि दिन मे एक ठाम पिता अपन बेटा सभक संग मारल जायत, आ भाइ एक दोसरा सँ मृत्यु मे खसि पड़त, जाबत धरि धारक खून नहि बहैत रहत।
2. किएक तँ मनुष् य अपन पुत्र आ पुत्रक पुत्रक वध करबासँ हाथ नहि रोकत, आ पापी अपन सम्मानित भाइसँ हाथ नहि रोकत: भोरसँ सूर्यास्त धरि एक दोसराक वध करत।
3. घोड़ा पापी सभक खून मे छाती धरि चलत, आ रथ अपन ऊँचाई धरि डूबि जायत।
4. ओहि दिन मे स् वर्गदूत सभ गुप्त स्थान मे उतरताह, आ पाप केँ उतारनिहार सभ केँ एक ठाम जमा करताह, आ ओहि न् यायक दिन परम परमेश् वर उठताह, पापी सभक बीच पैघ न् याय करबाक लेल।
5. आ सभ धर्मी आ पवित्र लोक पर ओ पवित्र स्वर्गदूत सभक बीच सँ रक्षक नियुक्त करताह, जे आँखिक नेबो जकाँ हुनका सभक रक्षा करत, जाबत धरि ओ सभ दुष्टता आ सभ पापक अंत नहि क' देताह, आ धर्मी लोकनि भले लंबा नींद सुतैत छथि, मुदा हुनका सभ केँ कोनो डरबाक कोनो बात नहि।
6. आ तखन पृथ्वीक बच्चा सभ बुद्धिमान केँ सुरक्षित रूप सँ देखत, आ एहि पोथीक सभ शब्द केँ बुझत, आ ई बूझत जे ओकर धन ओकरा सभ केँ नहि बचा सकैत अछि, ओकर पापक उखाड़ि फेकबा मे।

7. अहाँ सभ कैँ धिक्कार अछि, पापी सभ, प्रबल पीड़ाक दिन, अहाँ सभ जे धर्मी कैँ दुखी करैत छी आ ओकरा आगि मे जरा दैत छी।
8. अहाँ सभ कैँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ जिद्दी, जे दुष्टताक कल्पना करबाक लेल जागल रहैत छी, तेँ अहाँ सभ पर भय आओत, आ अहाँ सभक सहायता करयवला कियो नहि रहत।
9. अहाँ सभ कैँ धिक्कार अछि, अहाँ सभ पापी सभ, अहाँ सभक मुँहक वचन सभक कारणेँ, आ अहाँ सभक हाथक काज सभक कारणेँ जे अहाँक अभक्ति जेना कयलक, आगि सँ बेसी खराब जरैत ज्वाला मे अहाँ सभ जरा देब।
10. आब, अहाँ सभ ई जानि लिअ जे ओ स् वर्ग मे, सूर्य आ चान आ तारा सभ सँ अहाँक पापक संदर्भ मे अहाँक काजक विषय मे स् वर्गदूत सभ सँ पूछताछ करताह, कारण पृथ्वी पर अहाँ सभ धर्मी सभक न्याय करैत छी।
11. ओ अहाँ सभक विरुद्ध सभ मेघ, धुंध, ओस आ बरखा कैँ गवाही देबाक लेल बजाओत। कारण, अहाँ सभक कारणेँ ओ सभ अहाँ सभ पर उतरबा सँ रोकल जायत आ अहाँ सभक पाप सभक मोन मे रहत।
12. आब बरखा कैँ उपहार दिअ जाहि सँ ओ अहाँ सभ पर उतरबा सँ नहि रोकल जाय आ ने ओस, जखन ओकरा अहाँ सभ सँ सोना-चानी भेटि गेल हो, जाहि सँ ओ उतरि सकय।
13. जखन ठंढा-ठंढा आ बर्फ अपन ठंढाक संग आ सभटा बर्फ-तूफान अपन सभ विपत्तिक संग अहाँ सभ पर खसत तखन ओहि दिन मे अहाँ सभ ओकरा सभक सोझाँ ठाढ़ नहि भ’ सकब।

अध्याय 101 के अनुसार

1. हे स् वर्गक सन् तान सभ, स् वर्ग आ परमेश् वरक सभ काज कैँ देखैत रहू, आ हुनका सँ डेराउ आ हुनकर सान्निध मे कोनो अधलाह काज नहि करू।
2. जँ ओ स्वर्गक खिड़की बन्न क’ दैत छथि, आ अहाँ सभक कारणेँ बरखा आ ओस कैँ पृथ्वी पर उतरबा सँ रोकैत छथि, तखन अहाँ सभ की करब?
3. आ जँ ओ अहाँ सभक काजक कारणेँ अहाँ सभ पर अपन क्रोध पठा दैत छथि तँ अहाँ सभ हुनका सँ याचना नहि कS सकैत छी; कारण, अहाँ सभ हुनकर धार्मिकताक विरुद्ध घमंडी आ अपमानजनक बात कहलहुँ, तेँ अहाँ सभ कैँ शान्ति नहि भेटत।
4. अहाँ सभ नावक नाविक सभ नहि देखैत छी जे कोना ओकर नाव लहरि सँ एम्हर-ओम्हर उछलैत अछि आ हवाक कारणेँ हिलैत अछि आ बहुत विपत्ति मे पड़ि जाइत अछि?
5. आ तेँ ओ सभ डरैत छथि किएक तँ हुनकर सभ नीक सम्पत्ति हुनका सभक संग समुद्र पर जाइत छनि, आ हुनका सभक हृदयक दुष्ट पूर्वाभास छनि जे समुद्र हुनका सभ कैँ निगल जायत आ ओ सभ ओहि मे नाश भ’ जेताह।
6. की समस्त समुद्र आ ओकर सभ पानि आ ओकर सभ गति परमात्माक काज नहि अछि आ की ओ एकर काजक सीमा नहि रखने छथि, आ ओकरा पूरा बालु मे सीमित नहि कएने छथि?
7. हुनकर डाँटला पर ओ भयभीत भ’ जाइत अछि आ सुखि जाइत अछि, आ ओकर सभटा माछ आ ओहि मे जे किछु अछि, से मरि जाइत अछि। मुदा अहाँ सभ पापी जे पृथ् वी पर छी, हुनका सँ नहि डेरैत छी।
8. की ओ आकाश आ पृथ्वी आ ओहि मे जे किछु अछि से नहि बनौने छथि? जे पृथ्वी पर आ समुद्र मे जे किछु चलैत अछि, ओकरा बुझि आ बुद्धि देलक अछि।
9. की जहाजक नाविक समुद्रसँ डरैत नहि अछि? तइयो पापी सभ परमात्मा सँ डरैत नहि अछि।

अध्याय 102 के अनुसार

1. ओहि दिन मे जखन ओ अहाँ सभ पर एकटा भयंकर आगि अनने छथि, अहाँ सभ कतय सँ भागब आ कतय सँ मुक्ति भेटत? आ जखन ओ अहाँक विरुद्ध अपन वचनक प्रक्षेपण करताह तखन की अहाँ डरब आ डरब नहि?
2. आ सभ ज्योतिष बहुत भय भयभीत भS जायत, आ समस्त पृथ्वी भयभीत होयत आ काँपि जायत आ घबरा जायत।
3. आ सभ स् वर्गदूत अपन आज्ञाक पालन करत, आ महान महिमाक सान्निध्य सँ नुकाबय चाहैत अछि, आ पृथ्वीक सन्तान सभ काँपि उठत आ काँपि जायत। आ अहाँ सभ पापी सभ अनन्त काल धरि शापित रहब, आ अहाँ सभ कैँ शान्ति नहि भेटत।
4. हे धर्मी लोकनिक प्राणी, अहाँ सभ नहि डेराउ, आ अहाँ सभ जे धार्मिकता मे मरि गेल छी, आशा राखू।
5. आ जँ अहाँक आत्मा शोक मे उतरि गेल अछि तँ दुखी नहि होउ, आ अहाँक जीवन मे अहाँक शरीर अहाँक भलाईक अनुसार नहि चलल, मुदा पापी सभक न् याय दिनक प्रतीक्षा करू, आ श्राप आ दंडक दिनक प्रतीक्षा करू।
6. आ तैयो जखन अहाँ सभ मरैत छी तखन पापी सभ अहाँ सभक ऊपर बजैत अछि: "जहिना हम सभ मरैत छी, तहिना धर्मी लोकनि मरैत छथि, आ ओ सभ अपन काज सँ की फायदा उठाबैत छथि?
7. देखू, जेना हम सभ तहिना ओ सभ शोक आ अन्हार मे मरि जाइत छथि, आ हमरा सभ सँ बेसी हुनका सभक की अछि? आबसँ हम सभ बराबर छी।
8. आ ओकरा सभ कैँ की भेटतैक आ की देखतैक? देखू, ओहो सभ मरि गेल छथि, आ आब अनन्त काल धरि हुनका सभ कैँ कोनो इजोत नहि देखाइ पड़तनि।"
9. हम अहाँ सभ कैँ कहैत छी, अहाँ सभ पापी सभ, अहाँ सभ खाइत-पीबैत, लूट-पाप आ पाप मे संतोष करैत छी, आ मनुष्य कैँ नंग-धड़ैत छी, आ धन-सम्पत्ति अर्जित करैत छी आ नीक दिन देखैत छी।
10. की अहाँ सभ धर्मी सभ कैँ देखलहुँ जे ओकर अंत कोना भ’ जाइत छैक, जे ओकर मृत्यु धरि ओकरा सभ मे कोनो तरहक हिंसा नहि भेटैत छैक?
11. "तथापि ओ सभ नाश भ' गेल आ जेना नहि भेल हो, आ ओकर सभक आत् मा क्लेश मे पाताल मे उतरि गेल।"

अध्याय 103

1. आब, तेँ, हम अहाँ सभ, धर्मी लोकनि कैँ, प्रभुत्व मे महान आ सम्मानित आ पराक्रमी केर महिमा सँ शपथ लैत छी, आ हुनकर महानताक शपथ अहाँ सभ कैँ कहैत छी।
2. हम एकटा रहस्य जनैत छी, आ स् वर्गीय पाटी सभ पढ़लहुँ, आ पवित्र पुस्तक सभ देखलहुँ, आ ओहि मे लिखल आ ओहि विषय मे अंकित भेटल।

3. जे सभ भलाई आ आनन्द आ महिमा हुनका सभक लेल तैयार कयल गेल हो, आ धार्मिकता मे मरि गेल लोकक आत्माक लेल लिखल गेल हो, आ अहाँक परिश्रमक बदला मे अहाँ कें अनेक तरहक भलाई देल जायत, आ अहाँक भाग्य जीवित लोकक भाग्य सँ बेसी अछि।
4. अहाँ सभक जे धार्मिकता मे मरि गेल छी, ओ सभ जीवित रहत आ आनन्दित होयत, आ ओकर सभक आत् मा नाश नहि होयत, आ ने ओकर स्मरण महान परमेश् वरक सामने सँ संसारक समस्त पीढ़ी धरि नहि होयत।
5. अहाँ सभ, अहाँ सभ पापी सभ, जखन अहाँ सभ मरि गेलहुँ तखन अहाँ सभ कें धिक्कार अछि, जँ अहाँ सभ अपन पापक धन मे मरि जायब, आ अहाँ सभ जकाँ जे लोक सभ अहाँ सभक संबंध मे कहैत अछि, 'धन्य अछि पापी सभ, ओ सभ अपन भरि दिन देखने अछि।'
6. आ कोना ओ सभ समृद्धि आ धन-दौलत मे मरि गेल छथि, आ जीवन मे कष्ट वा हत्या नहि देखने छथि; आ ओ सभ इज्जत मे मरि गेल छथि, आ जीवन मे हुनका सभ पर न्याय नहि भेल अछि।"
7. अहाँ सभ ई जानि लिअ जे हुनका सभक प्राणी पाताल मे उतरि जायत, आ ओ सभ अपन महासंकट मे दयनीय भ' जेताह।
8. आ अन्हार आ जंजीर आ जरैत लौ मे जतय कष्ट न्याय होयत, अहाँ सभक आत्मा प्रवेश करत। आ महान न्याय संसारक सभ पीढ़ीक लेल होयत। धिक्कार अहाँ सभ कें, किएक तँ अहाँ सभ कें शान्ति नहि भेटत।

.

10. आ हम सभ नष्ट भ' गेलहुँ आ एक शब्द मे सेहो कोनो मददगार नहि भेटल: हमरा सभ कें यातना देल गेल आ नष्ट कयल गेल, आ दिन-प्रतिदिन जीवन देखबाक आशा नहि भेल।
11. हम सभ माथ बनबाक आशा केने रही आ पूँछ बनि गेल छी: हम सभ मेहनति केलहुँ आ अपन मेहनत मे कोनो संतुष्टि नहि भेल; आ हम सभ पापी आ अधर्मी सभक भोजन बनि गेल छी, आ ओ सभ हमरा सभ पर अपन जुआ जोर सँ राखि देलक।
12. ओ सभ हमरा सभ पर प्रभुत्व रखने अछि जे हमरा सभ सँ घृणा करैत छल आ हमरा सभ कें मारि देलक। जे सभ हमरा सभ सँ घृणा करैत छल, ओकरा सभ कें हम सभ अपन गरदनि झुकौने छी, मुदा ओ सभ हमरा सभ पर दया नहि केलक।
13. हम सभ ओकरा सभ सँ दूर भ' जेबाक इच्छा रखैत छलहुँ जाहि सँ हम सभ भागि सकब आ आराम क' सकब, मुदा एहन कोनो स्थान नहि भेटल जतय हम सभ भागि क' ओकरा सभ सँ सुरक्षित रहब।
14. आ हमरा सभक क्लेश मे शासक सभ सँ शिकायत कयल जाइत अछि, आ हमरा सभ कें खायवला सभक विरुद्ध चिचियाइत अछि, मुदा ओ सभ हमरा सभक चीत्कार पर ध्यान नहि देलक, आ हमरा सभक आवाज नहि सुनलक।
15. ओ सभ हमरा सभ कें लूटि कऽ खा गेल आ हमरा सभ कें कम करयवला सभक सहायता कयलक। ओ सभ अपन अत्याचार नुका लेलक, आ हमरा सभ कें खा गेल आ तितर-बितर कयल आ मारि देलक, ओकर जुआ हमरा सभ सँ नहि हटा देलक, आ अपन हत्या कें नुका लेलक, आ ई मोन नहि पड़ल जे ओ सभ हमरा सभ पर हाथ उठौने छल।

अध्याय 104 के अनुसार

1. हम अहाँ सभक कसम खाइत छी जे स् वर्ग मे स् वर्गदूत सभ महान परमेश् वरक महिमाक समक्ष अहाँ सभक सदाक लेल स्मरण करैत छथि।
2. आशावादी रहू; किएक तँ पहिने अहाँ सभ बीमार आ कष्टक कारणेँ लज्जित भऽ गेल छलहुँ। मुदा आब अहाँ सभ स् वर्गक इजोत जकाँ चमकब, अहाँ सभ चमकब आ देखब आ स् वर्गक द्वार सभ अहाँ सभक लेल खुजि जायत।
3. आ अपन चिचियाहटि मे, न्यायक लेल चिचियाउ, आ ई अहाँ सभ कें प्रकट होयत। किएक तँ अहाँक समस्त क्लेश शासक सभ पर आ जे सभ अहाँ सभ कें लूटयवला सभक सहायता केनिहार सभ पर पहुँचत।
4. आशा राखू, आ अपन आशा कें नहि फेकि दियौक, किएक तँ अहाँ सभ कें स् वर्गक स् वर्गदूत जकाँ बहुत आनन्द भेटत।
5. अहाँ सभ की करबाक लेल बाध्य रहब? अहाँ सभ कें महान न्यायक दिन नुकाबऽ नहि पड़त आ अहाँ सभ पापी नहि भेटत, आ अनन्त न्याय अहाँ सभ सँ संसारक सभ पीढ़ी धरि दूर रहत।
6. आब, हे धर्मी लोकनि, जखन पापी सभ कें अपन बाट मे बलवान आ समृद्ध होइत देखब, तखन नहि डेराउ। किएक तँ अहाँ सभ स् वर्गक सेना सभक संगी बनब।"
7. आ, यद्यपि अहाँ पापी सभ कहैत छी जे: "हमर सभक सभ पापक परीक्षण नहि कयल जायत आ लिखल जायत," तथापि ओ सभ अहाँ सभक सभ पाप कें प्रतिदिन लिखि देत।
8. आब हम अहाँ सभ कें देखा रहल छी जे इजोत आ अन्हार, दिन-राति, अहाँ सभक सभ पाप कें देखैत अछि।
9. अपन हृदय मे अभक्त नहि होउ, आ झूठ नहि बाजू आ सोझताक वचन मे परिवर्तन नहि करू, आ ने पवित्र महान परमेश् वरक वचन मे झूठ बाजबाक आरोप नहि लगाउ, आ ने अपन मूर्ति सभक हिसाब लगाउ। कारण, अहाँक सभ झूठ आ सभटा अभक्ति धार्मिकता मे नहि, बल् कि पैघ पाप मे निकलैत अछि।
10. आब हम ई रहस्य कें जनैत छी जे पापी सभ धार्मिकताक वचन कें बहुत तरहेँ बदलत आ विकृत करत, आ दुष्ट वचन बाजत, झूठ बाजत, आ पैघ छल-प्रपंच करत आ अपन वचनक विषय मे किताब लिखत।
11. मुदा जखन ओ सभ हमर सभटा वचन कें अपन भाषा मे सत्यतापूर्वक लिखैत छथि, आ हमर बात मे कोनो बदलाव वा कमी नहि करैत छथि, बल् कि सभटा सत्यतापूर्वक लिखि दैत छथि--ओ सभ बात जे हम पहिने हुनका सभक विषय मे गवाही देलहुँ।
12. तखन, हम एकटा आओर रहस्य जनैत छी जे धर्मात्मा आ ज्ञानी कें पुस्तक देल जायत जे ओ आनन्द आ सोझता आ बहुत बुद्धिक कारण बनत।

.

अध्याय 105

1. ओहि समय मे प्रभु हुनका सभ कें आज्ञा देलथिन जे ओ सभ पृथ् वीक बच्चा सभ कें बजा कऽ अपन बुद्धिक विषय मे गवाही देथिन। किएक तँ अहाँ सभ हुनका सभक मार्गदर्शक छी आ समस्त पृथ् वी पर प्रतिफलक पात्र छी।"

2. कारण हम आ हमर बेटा हुनका सभक जीवन मे सोझताक बाट मे हुनका सभक संग सदाक लेल एकजुट रहब। अहाँ सभ केँ शान्ति भेटत। आमीन।

अध्याय 106

1. किछु दिनक बाद हमर पुत्र मतुसाला अपन बेटा लामेकक लेल पत्नी लऽ लेलक आ ओ हुनकासँ गर्भवती भऽ एकटा बेटाक जन्म देलक।
2. ओकर देह बर्फ जकाँ उज्जर आ गुलाबक फूल जकाँ लाल, माथक केश आ नमहर-नमहर ताला ऊन जकाँ उज्जर आ आँखि सुन्दर। आ जखन आँखि खोललनि तखन रौद जकाँ पूरा घर केँ रोशन क' देलनि, आ पूरा घर बहुत उज्ज्वल छल।
3. तखन ओ दाईक हाथ मे उठि कऽ मुँह खोललनि आ धर्मक प्रभु सँ गप्प-सप्प कयलनि।
4. ओकर पिता लमेक ओकरा सँ डेरा गेल आ भागि गेल आ अपन पिता मतुसाला लग आबि गेल।
5. ओ हुनका कहलथिन, 'हम एकटा परदेशी पुत्रक जन्म देने छी, जे मनुष्य सँ भिन्न आ भिन्न अछि, आ स् वर्गक परमेश् वरक पुत्र सभ सँ मिलैत-जुलैत अछि। आ ओकर स्वभाव अलग छै आ ओ हमरा सभ जकाँ नै छै, आ ओकर आँखि सूर्यक किरण जकाँ छै आ ओकर चेहरा गौरवशाली छै।
6. आ हमरा लगैत अछि जे ओ हमरा सँ नहि, स्वर्गदूत सभ सँ निकलल अछि, आ हमरा डर अछि जे हुनकर समय मे पृथ्वी पर कोनो आश्चर्य नहि कयल जा सकैत अछि।
7. आब, हमर पिता, हम अहाँ सँ निहोरा करय लेल आ विनती करय लेल आयल छी जे अहाँ हमरा सभक पिता हनोक लग जाउ आ हुनका सँ सत्य सीखू, कारण हुनकर निवास स्थान स्वर्गदूत सभक बीच अछि।'
8. मथुशेल जखन अपन पुत्रक बात सुनि हमरा लग पृथ्वीक छोर पर आबि गेलाह। कारण, ओ सुनने छल जे हम ओतय छी, आ ओ जोर-जोर सँ चिचिया उठल, आ हम हुनकर आवाज सुनलहुँ आ हम हुनका लग आबि गेलहुँ। आ 1 हुनका कहलथिन: 'देखू, हम एतय छी, हमर बेटा, अहाँ हमरा लग किएक आयल छी?'
9. ओ उत्तर देलथिन, 'हम एकटा पैघ चिंताक कारणेँ अहाँ लग आयल छी, आ एकटा विचलित करयवला दर्शनक कारणेँ हम लग आबि गेल छी।
10. आब, हमर पिता, हमर बात सुनू, हमर बेटा लामेक केँ एकटा बेटा भेलनि, जकरा सदृश कियो नहि अछि, आ ओकर स्वभाव मनुक्खक स्वभाव जकाँ नहि अछि, आ ओकर शरीरक रंग बर्फ सँ उज्जर आ गुलाबक फूल सँ लाल अछि, आ ओकर माथक केश उज्जर ऊन सँ बेसी उज्जर अछि, आ ओकर आँखि सूर्यक किरण जकाँ अछि, आ ओ आँखि खोललक आ ओहि पर पूरा घर रोशन क देलक।
11. ओ दाईक हाथ मे उठि कऽ मुँह खोलि स्वर्गक प्रभुक आशीष देलनि।
12. ओकर पिता लमेक भयभीत भऽ हमरा लग भागि गेल, आ विश्वास नहि केलक जे ओ हुनका सँ उत्पन्न भेल अछि, बल् कि ओ स् वर्गक स् वर्गदूत सभक रूप मे अछि। आ देखू, हम अहाँक लग आबि गेल छी जे अहाँ हमरा सत् य केँ बुझा सकब।'
.
14. देखू, ओ सभ पाप करैत अछि आ धर्म-नियमक उल्लंघन करैत अछि, आ स् त्रीगणक संग एक भऽ गेल अछि आ ओकरा सभक संग पाप करैत अछि, आ ओकरा सभ मे सँ किछु गोटेक विवाह कऽ कऽ ओकरा सभ सँ संतान पैदा कऽ लेने अछि।
15. ओ सभ पृथ् वी पर आत् माक अनुसार नहि, बल् कि शरीरक अनुसार विशालकाय पैदा करत, आ पृथ्वी पर बहुत पैघ दंड होयत आ पृथ्वी सभ अशुद्धि सँ शुद्ध भऽ जायत।
16. हँ, समस्त पृथ्वी पर एकटा पैघ विनाश होयत, आ एक वर्ष धरि जलप्रलय आ बहुत पैघ विनाश होयत।
17. ई पुत्र जे अहाँक जन्म भेल अछि से पृथ्वी पर रहि जायत आ ओकर तीनू संतान ओकरा संग उद्धार होयत।
18. आब अपन पुत्र लामेक केँ ई बुझा दियौक जे जे जनम भेल अछि से सत्य मे ओकर बेटा अछि, आ ओकर नाम नूह राखू। कारण, ओ अहाँ सभक लेल छोड़ि देल जायत, आ ओ आ ओकर पुत्र सभ ओहि विनाश सँ उद्धार पाबि जेताह, जे सभ पाप आ सभ अधर्मक कारणेँ पृथ् वी पर आओत, जे हुनकर समय मे पृथ् वी पर समाप्त भऽ जायत।
19. तकर बाद पृथ्वी पर पहिने जे अधर्म समाप्त भेल छल, ताहि सँ बेसी अधर्म होयत। किएक तँ हम पवित्र लोक सभक रहस्य सभ जनैत छी। कारण, ओ प्रभु हमरा देखौलनि आ सूचना देलनि, आ हम ओकरा सभ केँ स्वर्गीय पाटी मे पढ़ने छी।

अध्याय 107 के अनुसार

1. हम ओकरा सभ पर लिखल देखलहुँ जे पीढ़ी दर पीढ़ी अपराध करत, जाबत धरि धर्मक पीढ़ी नहि उठत आ अपराध नष्ट नहि भऽ जायत आ पाप पृथ्वी सँ नहि चलि जायत आ ओकरा पर सभ तरहक नीक काज नहि आबि जायत।
2. आब, हमर बेटा, जाउ आ अपन बेटा लमेक केँ ई बताउ जे ई बेटा जे जन्म लेने अछि, से सत्ते ओकर बेटा अछि आ ई कोनो झूठ नहि।'
3. जखन मथुसेल अपन पिता हनोकक बात सुनि लेलक--किएक तँ ओ ओकरा सभ किछु गुप्त रूपेँ देखा देने छल--तखन ओ घुरि कऽ ओकरा देखा देलक आ ओहि बेटाक नाम नूह राखि देलक। कारण, ओ सभ विनाशक बाद पृथ् वी केँ सान्त्वना देत।

अध्याय 108

1. एकटा आओर पुस्तक जे हनोक अपन पुत्र मथुसेल आ हुनकर बाद आओत आ अंतिम समय मे धर्म-नियमक पालन करनिहार सभक लेल लिखने छलाह।
2. अहाँ सभ जे नीक काज केने छी, ताबत धरि ओहि दिनक प्रतीक्षा करब जाबत धरि अधलाह काज करयवला सभक अंत नहि भ' जायत। आ अपराधी सभक पराक्रमक अंत।
3. आ अहाँ सभ सत्ते प्रतीक्षा करू जाबत धरि पाप समाप्त नहि भऽ जायत, किएक तँ हुनका सभक नाम जीवनक पुस्तक आ पवित्र पुस्तक सभ सँ मेटाओल जायत, आ हुनकर संतान सदाक लेल नष्ट भऽ जायत, आ हुनकर सभक आत् मा मारल जायत, आ ओ सभ ओहि स्थान पर कानत आ विलाप करत जे अराजक जंगल अछि, आ आगि मे जरि जायत। किएक तँ ओतय कोनो धरती नहि अछि।

4. हम ओतय किछु अदृश्य मेघ जकाँ देखलहुँ। कारण एकर गहींरताक कारणेँ हम ओहि दिस नहि देखि सकलहुँ, आ आगि केर लौ चमकैत देखलहुँ, आ चमकैत पहाड़ सन चीज एम्हर-ओम्हर घुमैत आ झाड़ैत।
5. हम हमरा संग रहनिहार एकटा पवित्र स्वर्गदूत सँ पुछलियनि, 'ई चमकैत वस्तु की अछि? कारण, ई स्वर्ग नहि, मात्र धधकैत आगि केर लौ अछि, आ कानब, कानब आ विलाप आ प्रबल पीड़ाक आवाज अछि।'
6. ओ हमरा कहलनि: 'ई स्थान जे अहाँ देखैत छी--एतय पापी आ निन्दा करयवला, आ दुष्टता करयवला सभक आ जे प्रभुक जे किछु भविष्यवक्ता सभक मुँह सँ कहल गेल अछि, तकरा विकृत करयवला सभक आत् मा फेकल गेल अछि।
7. किएक तँ ओहि मे सँ किछु ऊपर स् वर्ग मे लिखल आ अंकित अछि, जाहि सँ स् वर्गदूत सभ ओकरा सभ केँ पढ़ि कऽ जानि सकथि जे पापी सभ पर, विनम्र लोक सभक आत्मा पर आ जे सभ अपन शरीर केँ दुखी कयलनि आ परमेश् वर द्वारा प्रतिफल देल गेल अछि, तकरा सभ पर की होयत। आ दुष्ट लोक सभक द्वारा लज्जित कयल गेल लोक सभक सेहो।
8. ओ सभ परमेश् वर सँ प्रेम करैत छथि आ ने सोना आ ने चानी आ ने संसार मे जे नीक वस्तु अछि, ताहि सँ प्रेम करैत छलाह, बल् कि अपन शरीर केँ यातना देबाक लेल सौंपैत छलाह।
.
10. आ हुनका सभक लेल जे आशीर्वाद निर्धारित अछि से हम पुस्तक सभ मे कहने छी। आरू ओकरा सिनी कॅ ओकरो॑ प्रतिफल सौंपै देलकै, कैहनेकि ओकरा सिनी कॅ ऐन्हऽ पालो गेलै जे दुनिया में अपनऽ जीवन सें जादा स्वर्ग सें प्यार करै छै, आरो भले ही ओकरा सिनी कॅ दुष्ट आदमी सिनी के पैर के नीचें दबाय देलऽ गेलै, आरो ओकरा सिनी सें गारी-गलौज आरो गारी-गलौज के अनुभव होय गेलै आरो लाज होय गेलै, तभियो वू हमरा आशीष देलकै।
11. आब हम इजोतक पीढ़ीक नीक लोकक आत्मा सभ केँ बजौब, आ अन्हार मे जन्मल लोक सभ केँ बदलि देब, जे शरीर मे ओहि सम्मानक प्रतिफल नहि देल गेल जे ओकर विश्वासक हकदार छल।
12. हम ओहि सभ केँ चमकैत इजोत मे सामने अनब जे हमर पवित्र नाम सँ प्रेम केने छथि, आ हम प्रत्येक केँ अपन सम्मानक सिंहासन पर बैसा देब।
13. ओ सभ अनगिनत काल धरि चमकैत रहत। कारण, धार्मिकता परमेश् वरक न् याय अछि। कारण विश्वासी केँ ओ सोझ मार्गक निवास मे विश्वास देताह।
14. ओ सभ अन्हार मे जन्मल लोक सभ केँ अन्हार मे ल' गेल देखत, जखन कि धर्मी लोकनि चमकैत रहताह।
15. पापी सभ जोर-जोर सँ चिचियाओत आ ओकरा सभ केँ चमकैत देखत, आ ओ सभ ओहि ठाम जायत जतय ओकरा सभक लेल दिन आ ऋतु निर्धारित कयल गेल अछि।'